CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14.9

श्री बृहद जिन पूजन पाठ संग्रह

5206

संकलनकर्त्ता

हंसराज बड़जात्या

वि. नि. सं. 2501
दशलक्षण पर्व १९८५

मूल्य
नित्य पठन एवं
मनन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वृहद जिन पूजन पाठ संग्रह

5206

संकलनकर्त्ता

हंसराज बड़जात्या

वितरणकर्त्ता

यशपाल ईश्वरचन्द बड़जात्या

वि. नि. सं. 2501

पर्यूषण पर्व १९८५

मूल्य

नित्य पठन एवं मनन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री बृहद जिन पूजन पाठ संग्रह

अनुक्रमणिका

	नाम	पृष्ठ संख्या
१	दर्शन विधि	१
२	दर्शन स्तुति व अर्घ	३
३	जिनेन्द्राभिषेक	५
४	लघु शांति धारा	६
५	पूजन विधि	८
६	प्रारंभिक पूजन	११
७	देव शास्त्र गुरु पूजा	१४
८	संयुक्त देवशास्त्र गुरू, वीस तीर्थंकंर व सिद्ध पूजा	१८
९	देवशास्त्र गुरू पूजा-युगलजी कृत	२१
१०	श्री तीस चौवीसी पूजा	२५
११	श्री वीस तीर्थंकंर पूजा	३२
१२	अकृत्रिम चैत्यालय के अर्घ	३५
१३	तीन लोक संबन्धी अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	३६
१४	श्री सिद्ध पूजा	४२
१५	समुच्चय चौवीसी पूजा	४७
१६	निर्वाण क्षेत्र पूजा	५०
१७	पंचमेरू पूजा	५३
१८	नंदीश्वर द्वीप (अष्टानिहका) पूजा	५५
१९	सोलह कारण पूजा	५७
२०	दशलक्षण पूजा	६०
२१	रत्नत्रय पूजा	६५
२२	अनन्त व्रत पूजा	७०
२३	स्वयंभू पाठ	७३
२४	सरस्वती पूजा	७५
२५	श्री आदिनाथ पूजा	७८
२६	श्री सुपार्श्वनाथ पूजा	८२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
२७	श्री चन्द्रप्रभु पूजा	९७
२८	श्री शांतिनाथ पूजा	९०
२९	श्री नेमीनाथ पूजा	९६
३०	श्री पार्श्वनाथ पूजा	१०१
३१	श्री वर्द्धमान पूजा	१०५
३२	श्री पंच परमेष्ठि जयमाला	११०
३३	शांतिपाठ संस्कृत व हिन्दी	१११
३४	समुच्चय अर्घ	११४
३५	विसर्जन व स्तुति पाठ	११५
३६	रक्षाबन्धन पूजा	११८
३७	श्री विष्णुकुमार मुनि पूजा	१२१
३८	सुगंध दशमी पूजा व कथा	१२३
३९	रविव्रत पूजा व कथा	१३७
४०	सामायिक पाठ	१४३
४१	आलोचना पाठ	१४७
४२	मेरी भावना	१५०
४३	निर्वाणकांड भाषा	१५१
४४	लघु सहस्त्र नाम	१५३
४५	श्री आदिनाथ स्तोत्र (भक्तामर स्तोत्र)	१५६
४६	मोक्ष शास्त्र	१६४
४७	भूधर स्तुति	१७६
४८	श्री शीतलनाथ पूजा	१७७
४९	श्री सम्मेद शिखर कूट के अर्घ	१८०
५०	दुःखहरण विनती	१८७
५१	श्री पापापुरी स्तुति	१८९
५२	श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र	१९०
५३	वैराग्य भावना	१९१
५४	बारह भावना मंगतराय	१९४
५५	समाधिमरण	१९७
५६	पद व भजन	१९[illegible]
५७	जिनवाणी	१९९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

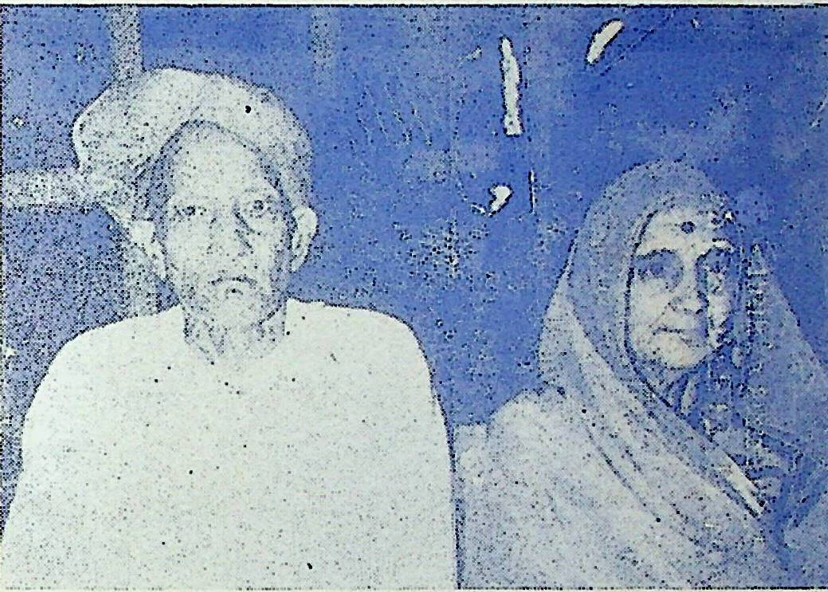

पूज्य पिताजी स्व. श्री मथरालालजी एवं
मातेश्वरी रजबाई बड़जात्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिचय

प्रस्तुत वृहद श्री जिन पूजन पाठ संग्रह यमारे पुज्य पिता श्री मथुरालालजी सुनैलवालों के शुभार्शीवाद एवं उनके द्वारा प्रदत्त सुसंस्कारों का अमृतफल है। इसके प्रकाशन की पृष्ठ भूमि पर हमारी परम श्रद्धेय मातुश्री राजबाई अग्रज द्वय श्री कन्हैयालालजी एवं हंसराजजी बड़जात्या तथा बहिनों की प्रेरणा एवं शुभ कामनाएँ है जिससे प्रभावित होकर यह संकलन धर्मानुरागी बन्धुओं की धर्म साधना के निमित्त यह सप्रेम विनम्र भेंट है हमें विश्वास है कि इसके फलस्वरूप शुभोपयोग में वृद्धि होगी और जिनेन्द्र भक्ति की स्वस्थ परम्पराओं को बल मिलेगा।

विनीत

यशपाल, पूनम, मनीष बड़जात्या } ईश्वरचन्द्र बड़जात्या
सौ. लीलाबाई बड़जात्या

प्रकाशक प्रतिष्ठान—इंडिया ट्रेडींग कारपोरेशन
D s/2 शापींग काम्पलेक्स बाम्बे आगरा
रोड़ इन्दौर ☎ ३३७३५
तार—INDIA TRADE

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5206

श्री जिनेन्द्र पूजा क्यों !

परमात्मा को अपनी ओर खींचने का प्रयत्न पूजा है। अपने अंतर में जो शक्ति रूप में परमात्मा विद्यमान है, उसे भक्त पूजा के माध्यम में खोजता है। मन में भौतिक पदार्थों और शरीर के प्रति आसक्ति या मोह होने से उसका मन वीतरागता की ओर आकर्षित नहीं हो पाता। जिस प्रकार मलिन और चंचल जल में अपना मुख दिखाई नहीं देता उसी प्रकार मिथ्यातत्व और कषायों की तीव्रता के कारण अपने आत्मा की अनुभूति नहीं हो पाती।

आर्त्त रौद्र ध्यान प्रधान गृहस्थ जीवन में गृहस्थ के लिये पूजा ही एक प्राथमिक साधन है, जिससे गृहस्थ निराकुलता और आत्म शांति की उपलब्धि कर सकता है। गृहस्थ जीवन में सर्वप्रथम सच्चे देव, गुरू, शास्त्र की श्रद्धा पूर्वक अभक्ष्य (मांस, मदिरा, मधु आदि) और यंच पापों को स्थूल रूप में छोड़ना चाहिये, तभी वह जिनेन्द्रपूजा का अधिकारी बनता है। इस प्रकार वह श्रावक कहलाता है और उसके दैनिक कर्तव्य देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, सयम तप और दान ये छेद है, जिनसे उसके जीवन में साहस, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता का आविर्भाव होकर जीवन सार्थक वनता है।

प्रस्तुत "वृहद जिनेन्द्र पूजा पाठ संग्रह" में वर्तमान प्रचलित पूजाओं के अतिरिक्त वर्ष में आने वाले सभी नैमित्तिक पर्वो एवं अन्य आवश्यक अवसरों संवंधी पूजाओं का संग्रह कर इसे एक विशिष्ठ ग्रन्थ वना दिया गया है। यहाँ मेरा एक निवेदन यह है कि प्रायः सभी पूजन संग्रहों में अशुद्धि सुधार नहीं किया जाता, इस पर ध्यान अवश्य दिया जाना चाहिये।

श्री हंसराजजी बड़जात्या मल्हारगंज इन्दौर एक धार्मिक और सज्जन व्यक्ति हैं जिनकी अभिलाषा वहुत समय से ऐसा उपयोगी पूजा संग्रह प्रकाशित कर वितरण करने की थी। आशा है जिनेन्द्र पूजा में रूचि रखने वाले पाठक इससे लाभ उठायेंगे।

प. नाथूलाल शास्त्री
संहिता सूरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१. वीर हिमाचल तैं निकसी..................

वीर हिमाचल तैं निकसी,
गुरु गौतम के मुख-कुण्ड ढरी है।
मोह-महाचल भेद चली,
जग की जड़तातप दूरी करी है ॥
ज्ञान-पयोनिधि माँहि रली,
बहु भंग-तरंगनि सौं उछरी है।
ता शुचि-शारद गंगनदी प्रति,
मैं अंजुलि करि शीश धरी है ॥१॥
या जग-मन्दिर में अनिवार,
अज्ञान-अंधेर छयो अति भारी।
श्री जिन की धुनि दीप-शिखा सम,
जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥
तो किस भाँति पदारथ-पाँति,
कहाँ लहते ? रहते अविचारी।
या विधि 'सन्त' कहैं धनि हैं,
धनि हैं, जिन बैन बड़े उपकारी ॥२॥

२. मिथ्यातम नासवे को..................

मिथ्यातम नासवे को, ज्ञान के प्रकासवे को,
आपा पर भासवे को, भानु-सी बखानी है।
छहों द्रव्य जानवे को, बन्ध-विधि भानवे को,
स्व-पर पिछानवे को, परम प्रमानी है ॥
अनुभव बतायवे को, जीव के जतायवे को,
काहू न सतायवे को, भव्य उर आनी है।
जहाँ-तहाँ तारवे को, पार के उतारवे को,
सुख विस्तारवे को, ये ही जिनवाणी है ॥
हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन।
जो तेरी शरणा गहै, सो पावे सुख चैन ॥
जा वाणी के ज्ञान तें, सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक नवों, सदा देत हों ढोक ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनेन्द्र पूजा पाठ संग्रह

दर्शन विधि

प्रातः स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिनकर चाँवल, लौंग, बादाम या इसमें से कोई एक द्रव्य लेकर मन्दिर में देवदर्शन के लिए जावें। हाथ-पैर धोकर अन्दर प्रवेश करें। द्वार के भीतर प्रवेश करते ही हर्षित होकर जय जय जय, निःसही निःसही निःसही बोलते हुए आगे बढ़ें। जिनेन्द्र-प्रतिमा के सामने भक्तिभाव से खड़े होकर, हाथ जोड़कर निम्नलिखित पाठ पढ़ें—

❁ णमोकार मंत्र ❁

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मङ्गलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलीपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

❁ भूतकाल के २४ तीर्थंकर ❁

१ निर्वाण २ सागर ३ महासाधु ४ विमलप्रभ ५ शुद्धाभ ६ श्रीधर ७ श्रीदत्त ८ सिद्धाभ ९ अमल प्रभ १० उद्धार जिन ११ अग्निदेव १२ संयम जिन १३ शिवजिन १४ पुष्पाञ्जलि १५ उत्साह १६ परमेश्वर १७ ज्ञानेश्वर १८ विमलेश्वर १९ यशोधर २० कृष्णमति २१ ज्ञानमति २२ शुद्धमति २३ श्रीभद्र २४ अनन्तवीर्य।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमानकाल के २४ तीर्थंकर

१ ऋषभनाथ २ अजितनाथ ३ सम्भवनाथ ४ अभिनन्दननाथ ५ सुमतिनाथ ६ पद्मप्रभु ७ सुपार्श्वनाथ ८ चन्द्रप्रभु ९ पुष्पदन्त १० शीतलनाथ ११ श्रेयांसनाथ १२ वासुपूज्य १३ विमलनाथ १४ अनन्तनाथ १५ धर्मनाथ १६ शान्तिनाथ १७ कुन्थुनाथ १८ अरहनाथ १९ मल्लिनाथ २० मुनिसुव्रतनाथ २१ नमिनाथ २२ नेमिनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ महावीर स्वामी।

भविष्यकाल के २४ तीर्थंकर

१ महापद्म २ सुरप्रभ ३ सुप्रभु ४ स्वयंप्रभ ५ सर्वायुध ६ जयदेव ७ उदयप्रभ ८ प्रभादेव ९ उदंकदेव १० प्रश्नकीर्ति ११ जयकीर्ति १२ पूर्णबुद्ध १३ निष्कषाय १४ विमलप्रभ १५ बहुल-प्रभ १६ निर्मलजिन १७ चित्रगुप्त १८ समाधिगुप्त १९ स्वयंभू २० कदर्प २१ जयनाथ २२ तिमलनाथ २३ दिव्यवाद २४ अनंतवीर्य

दर्शन

तुम निरखत मुझको मिली, मेरी सम्पति आज।
कहाँ चक्रवर्ती–सम्पदा, कहाँ स्वर्ग साम्राज्य ॥१॥

तुम वन्दत जिनदेवजी, नित नव मंगल होय।
विघ्न कोटि ततछिन टरैं, लहहिं सुजस सब लोय ॥२॥

कोटि जन्म में कर्म जो, बाँधे हुते अनन्त।
ते तुम छबि विलोकते, छिन में हो हैं अन्त ॥३॥

आन नृपति किरपा करै, कुछ दे धन धान।
तुम प्रभु अपने भक्त को, करलो आप समान ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य चढ़ाने का छन्द

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय ।
चन्द्र पहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजत सुरराय ।।
विमल अनन्त धर्म जस उज्जवल, शांति कुन्थु अरु मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ।।

यह पढ़कर भगवान के आगे द्रव्य चढ़ाकर धोक दे फिर तीन बार प्रदक्षिणा देकर नीचे लिखी स्तुति पढ़ें:—

(१) स्तुति

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी ।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरन जी ।।
तुम ना पिछान्या आन मान्या, देव विविध प्रकार जी ।
या बुद्ध सेती निज न जान्या, भ्रम गिन्या हितकार जी ।।१।।
भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान धन मेरो हरयो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिरयो ।।
धन घड़ी धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभुजीको लख लह्यो ।।२।।
छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरे ।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत, कोटि रवि छवि को हरे ।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हरख ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो ।।३।।
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक, वीनहु तुम चरणजी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारण तरणजी ।।
जांचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज, परिजन साथ जी ।
'बुध' जाँचहूं तुव भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी ।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) स्तुति

—: दोहा :—

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि रज रहस विहीन ॥१॥

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मण्डित अपार ॥२॥
जय परम शांति मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।
भवि भागन वच जोगे वशाय, तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ॥३॥
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटै विगटै आपद अनेक।
तुम जग भूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप।
शुभअशुभविभावअभाव कीन,स्वाभाविक परिणति मयअछीन ॥५॥
अष्टा दश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टमय राजत गम्भीर।
मुनिगणधरादि सेवत महन्त, नव केवललब्धिरमा धरन्त ॥६॥
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जांहि जैहें सदीव।
भवसागर में दुख छार वारि, तारन को अवरन आप टारि ॥७॥
यहलखिनिज दुखगदहरण काज,तुमही निमित्ताकारण इलाज।
जाने तातैं मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्यपाप।
निजको परको करता पिछान, पर मैं अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि,ज्यों मृग-मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परणति में आपो चितार, कबहूं न अनुभयो स्वपदसार ॥१०॥
तुमको बिन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।
पशुनारकनरसुरगति मंझार, भव धर-धर मर्यो अनंत बार ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब काल लब्धि बपतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल ।
मन शांत भयो मिटि सकलद्वंद, चाख्यो स्वातमरसदुखनिकंद ।।१२।।
ताते अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरै न कभी तुव चरण साथ ।
तुम गुणगणको नहिं छेव देव, जग तारन को तुम विरद एव ।।१३।।
आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूं आप में आप लीन, सो करो होऊ ज्यों निजाधीन ।।१४।।
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्न त्रय निधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारजके कारन सुआप, शिव करहु, हरहु मम मोहताप ।।१५।।
शशि शांतकरन तपहरनहेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, ज्यों तुम अनुभवतें भवनशाय ।।१६।।
त्रिभवन तिहुंकाल मंझार कोय, नहिं तुम बिननिज सुखदायहोय ।
मोउर यह निश्चय भयो आज,दुखजलधि उतारन तुमजिहाज ।।१७।।

—: दोहा :—

तुम गुणगणमणि गणपति, गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमूं त्रियोग संभार ।।

जिनेन्द्राभिषेक

प्रातः स्नान कर शुद्ध धोती दुपट्टा पहनकर तत्काल छने हुए अथवा गर्म शुद्ध जल से निम्न प्रकार चार मंत्रों में से किसी एक को बोल कर अभिषेक करें—

कर्म प्रबंध निगडैरपि हीनताप्तं ।
ज्ञात्वापि भक्तियंशतः परमादिदेवं ।।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव ।
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थतत्वम् ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं सं तं पं वं वं
हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं
द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते
श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।।२।।

दूरावनम्र सुरनाथ किरीटकोटी –
संलग्नरत्न किरणच्छविधूसरांघ्रि ।।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्ट ––
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ।।३।।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादिमहावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ....देशे........नगरे........जिनालये........वीरनिर्वाण संवत्सरे........मासे........पक्षे........शुभदिने मुनिआर्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल-कर्मक्षयार्थंजलेनभिषिंचे ।।४।।

लघु शांति धारा मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्व शांतिर्भवतु ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः शांति मंत्रभक्तिप्रसादात् सर्व शांतिर्भवतु ।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः सर्वदिगागतविघ्नविनाशनं भवतु । ॐ नमोर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं ऋषभादि वीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन भक्तिप्रसादात् सर्वेषां शांतिर्भवतु ।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि-ऋद्धि-पूजन-भक्ति-प्रसादात् तापादिरोगविनाशनं भूतादिभयविनाशनं भवतु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान-पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्य पूजिताय अनन्त-संसारचक्र-परिमर्दनाय अनंत-दर्शनाय अनंतज्ञानाय अनन्तवीर्याय अनन्त सुखाय त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे ऋष्यार्यिकाश्रावकश्राविकाप्रमुख चतुस्संघोप सर्गविनाशनाय घातिकर्मविनाशनाय इन्द्र-धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि-पूजितपद्माय अष्टादश-दोष रहित-षट्चत्वारिंशत्गुणसंयुक्ताय सर्वसत्त्वहितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वविद्यापरमेश्वराय अनेक-दैत्यदानव मुकुट-कोटि घृष्टपादपीठाय चतुरानन-विष्णु-रुद्रनारद-खेचरपूजिताय सर्वभव्यजनानंदकराय सर्वरोगापमृत्यु घोरोपसर्ग-विनाशनाय सर्वदेशग्रामपुरनरपति-प्रजाजन-शांतिकराय श्रीदेवाधि-देवाय नमोऽस्तु। श्रीजिनराज–पूजन–भक्तिप्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष–रोगशोकभयपीडाविनाशनं भवतु पापविनाशनं भवतु परदुष्ट–जनोपकृतमंत्रतंत्र दृष्टिमुष्टि छलछिद्रदोषविनाशनं भवतु। अग्नि–चोर–जल–भयसर्वव्याधि-विनाशनं भवतु। डाकिनी-शाकिनी भूत–भैरवादिकृतोपद्रवविनाशनं भवतु–सर्व भैरव–देव–दानव–वीर–नरसिंह योगिनी कृत विघ्नविनाशनं भवतु। भवन–वासिव्यंतरज्योतिष्कदेव देवीकृत दोषविनाशनं भवतु। अग्निकुमार उदधिकुमार द्वीपकुमार दिक्कुमारवातकुमार मेघकुमारकृतविघ्न–विनाशनं भवतु। इन्द्रादिदशदिक्पालकृत–विघ्नविनाशनं भवतु।

जयविजयपराजित धरणेन्द्र पद्मावती मणिभद्रादिक्षेत्रपालकृत–विघ्नविनाशनं भवतु। राक्षस वैताल–दैत्यदानव–यक्षादिकृतविघ्न–विनाशनं भवतु। सर्वाष्टकुली–नागजनितविषभयविनाशनं भवतु। सर्व ग्राम नगर देश मारी रोग विनाशनं भवतु। सर्व स्थावर जंगम वृश्चिक दृष्टि विषजाति सर्पादिकृत–विषदोष–विनाशनं भवतु। सिंहाष्टापदव्याघ्रव्याल वनचरजीव–भय–विनाशनं भवतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परशत्रुकृतमारणोच्चाटन – विद्वेषण–मोहन – वशीकरणादि–दोषविनाशनं भवतु। सर्वहस्तिघोटकगोवृषभादिपशुमारिविनाशनं भवतु। सर्वसस्यधान्यवृक्षलता – गुल्मपत्रपुष्पफल – मारिविनाशनं भवतु। सर्ववेदनीय मोहनीय विनाशनं भवतु।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरभक्तिप्रसादात् चक्रविक्रमसत्वतेजोबलशौर्यं शांतयः भवन्तु। सर्वजीवानानन्दनं भवतु भव्यनन्दनं गोकुलानन्दनं राजानंदनं च भवतु सर्वानन्दनं भवतु।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसन–वर्जितं। अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते॥ श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोऽस्तु नित्य–मारोग्यमस्तु मम पुष्टिः समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभि–वृद्धिरस्तु, दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं सदास्तु॥

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैद्रर्धयित्त्वाश्वनल्पं। धीरं हीरं शरीयं निरमयमुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्ति॥ सिद्धि वृद्धि समृद्धि प्रथयतु तरणिस्फूर्यदुच्चैः प्रतापं। कांति शांति समाधि वितरतु भवतामुत्तमा शांतिधारा॥

गन्धोदक लगाने का मन्त्र

निर्मल निर्मलीकरण पवित्रं पापनाशकम्।
जिन–गंधोदकं वन्दे, अष्ट कर्म विनाशकम्॥

पूजन की विधि

शुद्ध छना हुआ जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प नैवेद्य, दीप, धूप, फल और इन अष्टप्रासुक द्रव्यों से मिले हुए अर्घ्य को थाली में सजाकर भगवान के सामने पाटा चौकी पर रखकर पूजन करना चाहिये। एक थाली में केशर से साथिया बनाकर सामग्री चढ़ाने के लिये रखना चाहिए। एक ठौने पर भी स्वस्तिक बनाकर उसको थाली के आगे रखना चाहिए। एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रकेबी जल चंदन चढ़ाने के लिए होना चाहिए। भगवान का मुख पूर्व दिशा में हो तो जहां तक हो उत्तर की ओर मुंह करके खड़े होकर पूजन करे। पूजन के पहले मस्तक में तिलक करे। पूजन का क्रम निम्न प्रकार है—पूजन के—१. आह्वान (पूजन के लिए भक्तिभाव से बुलाने की क्रिया) २. स्थापना (विराजमान करने की क्रिया) ३. सन्निधिकरण (अपने हृदय के निकट करने की क्रिया) ४. पूजन (अष्टक व जयमाला बोलकर द्रव्य चढ़ाने की क्रिया) और ५. विसर्जन (शांति पाठ के पश्चात् क्षमा प्रार्थना) ये पांच अंग हैं।

पूजन

विनय पाठ

इहि विधि ठाड़ो होंयके, प्रथम पढ़ें जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भवन के राज ॥२॥
तिहुं जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिव सुख के करतार ॥३॥
हरता अघ अंधयार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुण रास ॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं बन्दौं जिनदेव को, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछु उपाय ॥६॥
भविजन को भव कूप तें, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार ॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म रज मल।
सरल कारी या जगत में, भविजन को शिवगैल ॥८॥
तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्री खग धरणेन्द्र पद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुलत भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥१२॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥१३॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंटयो अबैं, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यन्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
तुम को पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
में डूबत भवसिंधु में खेय लगाओ पार ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनी विरद निहारकैं कीजे आप समान ॥१८॥
तुमरी नेक सु दृष्टि तैं जग उतरत है पार।
हा-हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कह हूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥२०॥
बन्दों पांचो परम गुरु, सुर गुरु बन्दत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश ॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों. नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रचौ पाट सुखदाय ॥२२॥

प्रारम्भिक

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तुः।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥
ॐ ह्री अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मङ्गलं, अरहंता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तम। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहन्ते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहाः।

(यहाँ पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपवित्रोः पवित्रः वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा। ध्याये त्पञ्चनमकारं सर्वपापे प्रमुच्यते ॥ १ ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। याः स्मरेत्परमात्मानं स वाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥ २ ॥ अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः, मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमः मंगलं मतः ॥ ३ ॥ एसो पञ्चणमोयारो सव्व-पापप्पणासणो। मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मङ्गलं ॥४॥ अर्हमित्यक्षर ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ ५ ॥ कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं। सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रम् नमाम्यहं ॥ ६ ॥ विघ्नौधाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः। विषं निर्विषतां याति स्तूयमान जिनेश्वरं ॥७॥ (पुपाञ्जलि क्षिपेत्)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमङ्गल गानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन सहस्रनामभ्योऽघं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायकमनंत चतुष्टयार्हम्। श्रीमूल सङ्घसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्र यज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥ ८ ॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्तिस्वभावमहि-मोदयसुस्थिताय। स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जितदृढ़मयाय, स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥ ९ ॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधा-प्लवाय; स्वस्ति स्वभावपरभाव विभासकाय स्वस्ति त्रिलोकवित-तैकचिदुद्गमाय; स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय॥१०॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः। आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्यवलगन, भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥ ११ ॥ अर्हन्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि वस्तुन्य नूनम-खिलान्ययमेक एव। अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवन्हौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥ १२ ॥ (पुष्पाञ्जली क्षेपण करना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः। श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः। श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः। श्री सुपार्श्व स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः। श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः। श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासपूज्यः। श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः। श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शांतिः। श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः। श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतनाथः। श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः। श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

(पुष्पाञ्जली क्षेपण करना)

नित्याप्रकंपाद्‌भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञानावलप्रबोधाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥१॥
(यहाँ आगे भी प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए)
कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥२॥
संस्पर्शन संश्रवण च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धा प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्रविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥४॥
जङ्घावलिश्रेणिफलाम्बुतंतु प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥५॥
अणिम्नि दक्षाःकुशलाः महिम्नि लघिम्नि शक्ताकृतिनो गरिम्नि।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं; स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥६॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोर तपो घोरपराक्रमस्था ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चलरंतः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥
आमर्षसर्वोत्रधयस्तथाशीविषंधि षाद्दष्टिविषविपाश्च ।
सखिल्ल विड्जल्लमलौषधीशा; स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥
क्षीर स्रवंतोऽत्र घृत स्रवंत्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृत स्रवंतः ।
अक्षीण सवास महानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥

देवशास्त्र गुरू पूजा

स्थापना (आडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांत जू ।
गुरु निर्ग्रंथ महन्त मुकतिपुर पंथ जू ॥
तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्ति प्रसाद परमपद पाइये ॥१॥

दोहाः—पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती, नितप्रति अष्ट प्रकार ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक (गीता छन्द)

सुरपति उरगनरनाथ दिनकर, वन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छबि मोहित सभा ॥
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूं ॥१॥
मलिनवस्तु हरलेत सब जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्रगुरु तीन ॥२॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसी सचूँ।
अरहंतश्रुतसिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूँ॥२॥
चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्रगुरु तीन॥२॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठही।
अति दृढ़ परम पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही॥
उज्ज्वल अखण्डित शालि तन्दुल, पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंतश्रुतसिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूँ॥३॥
तन्दुल सालि सुगन्ध अति, परम अखण्डित बीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्रगुरु तीन॥३॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
जे विनयवन्त सुभव्यउर अम्बुज प्रकाश भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजगमाँहि प्रधान हैं॥
लहि कुन्दकमलादिक पहुप भव-भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहंतश्रुतसिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूँ॥४॥
विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्रगुरु तीन॥४॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
अति सबल मद कंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सुगरुड समान है॥
उत्तम छहों रसयुक्त नित नैवेद्य, करि घृत में पचूँ।
अरहंतश्रुतसिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ नित पूजा रचूँ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाना विधि संयुक्त रस, व्यञ्जन सरस नवीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्रगुरु तीन ॥५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोहतिमिर महाबली ।
तिहिं घातिकर्म ज्ञानदीपप्रकाशज्योति प्रभावली ॥
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन, के सुभाजन में खचूं ।
अरहंतश्रुतसिद्धांत गुरुनिर्ग्रंथ, नित पूजा रचूं ॥६॥
स्वपर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजों परम पद, देवशास्त्रगुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सद उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगन्धिताकरि, सकल परिमलता हसै ॥
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भवज्वलनमांहि नहिं पचूं ।
अरहन्तश्रुतसिद्धाँत गुरुनिर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥७॥
अग्निमाँहि परिमल दहन चन्दनादि गुणलीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥७॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फलगुणसार हैं ॥
सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन, परम अमृतरस सचूं ।
अरहन्तश्रुतसिद्धाँत गुरुनिर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥८॥
जे प्रधान फल फल विषैं पंचकरण रसलीन ।
जासो पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥८॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निर्मल फल विविध, बहुजनम के पातक हरूं ।।
इहभांति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं ।
अरहन्त श्रुतसिद्धान्त गुरूनिर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।९।।
वसुविधि अर्घ संजोय के, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरू तीन ।।९।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

देवशास्त्र गुरू रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न-भिन्न कहूं आरती, अल्प सुगुण दिस्तार ।।

पद्धरी छन्द

चउ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादशदोष राशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छियालिस गुणगम्भीर ।।२।।
शुभसमवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीश धार ।
देवाधिदेव अरहन्त देव बन्दौ मनवचतन करि सुसेव ।।३।।
जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप, निरअक्षरमय महिमा अनूप ।
अश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ।।४।।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे बारह सु अंग ।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमो बहु प्रीतिलाय ।।५।।
गुरू आचारज उपझाय साधु, तन नगन रतनत्रय निधि अगाध ।
संसारदेह वैराग्य धार, निरवांछि तपैं शिवपद निहार ।।६।।
गुण छत्तिस पच्चीस आठ बीस, भवतारनतरन जिहाज ईश ।
गुरू की महिमा वरणी न जाय, गुरूनाम जपो मनवचन काय ।।७।।
सोरठा—कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना श्रद्धा धरें ।
'द्यानत' श्रद्धावान, अजर अमर पद भोगवे ।।८।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरूभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव शास्त्र गुरु, विद्यमान बीस तीर्थङ्कर और सिद्ध पूजा

—: दोहा :—

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थङ्कर ध्याय ।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह, श्री विद्यमान विंशति तीर्थङ्कर, श्री सिद्ध समूह अत्रावतरावतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अनादिकाल से जग में स्वामिन् जल से शुचिता को माना ।
शुद्ध निजातम सम्यक रत्नत्रय निधि को नहीं पहिचाना ॥
अब निर्मल रत्नत्रय जल लेकर, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह, विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर समूह, श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप मिटावन को, निजमें ही क्षमता समता है ।
अनजाने अब तक मैंने, पर में की झूठी ममता है ॥
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥ चन्दनं ॥

अक्षय पद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनि में ।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिग लाया मैं ॥
अक्षय निधि निज की पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ॥ अक्षतान् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्प सुगंधी से आतम ने, शील स्वभाव नसाया है ।
मनमथ बाणों से बिंध करके, चहुंगति दुःख उपजाया है ।।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ।। पुष्पम् ।।
षट् रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई ।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ।।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ।। नैवेद्यम् ।।
जड़ दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा ।
निज गुण दर्शायक ज्ञान दीप से, मिटा मोह का अँधियारा ।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ।। दीपम् ।।
ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी ।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नसायेगी ।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ।। धूपम् ।।
पिस्ता, बादाम, श्रीफल, लवङ्ग, तुम चरण निकट मैं ले आया ।
आतम रस पीने निज गुण फल मम मन अब उनमें ललचाया ।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु गुण गाऊँ ।। फलम् ।।
अष्टम् वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये ।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता में, निज में निज गुण प्रगट भये ।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊँ ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ ।। अर्घम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

नसे घातिया कर्म अरहंत देवा, करें सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा। दरस ज्ञान सुख बल अनन्त स्वामी, छियालिस गुण युत महा ईश नामी ॥ तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी। अनेकान्तमय द्वादशाङ्गी बखानी, नमोलोक माता श्री जै बानी ॥ विरागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू। नगन वेश धारी सु एका विहारी, निजानन्द मण्डित मुकतपंथ प्रचारी ॥ विदेह क्षेत्र में तीर्थङ्कर बीस राजे, विरहमान वन्दूं सभी पाप भाजे। नमूं सिद्ध निरभय निरामय सुधामी, अनाकुल समाधान सहजाभिरामी ॥

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थङ्कर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तरले रे ॥ अर्घ्यम् ॥
भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ ॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी, त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यचैत्यालयेभ्यो अर्घंम् निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्य भक्ति आलोचन चाहूं, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिम्ब अनेक ॥
चतुः निकाय के देव जजें, ले अष्ट द्रव्य निज कुटुम्ब समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूं मैं, कर समाधि पाऊं शिव खेत ॥

(पुष्पांजली क्षेपण)

पूर्व मध्य अपराह्न की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वंदना करूं भाव से, सकल कर्म की नासनहार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंच महा गुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार ।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा मैं अब भवपार ।।
(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र की जाप करें ।)
षोड़श-कारण भावना भाऊँ, दशलक्षण हिरदय धारूँ ।
सम्यक् रत्नत्रय गहि करके, अष्ट करम को बन जारूँ ।।
ॐ ह्रीं षोडशकारणभावना, दशलक्षणधर्म, सम्यकरत्नत्रयेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

युगल कृत

देव-शास्त्र-गुरू-पूजा

स्थापना

केवल रवि-किरणों से जिसका सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर,
उस श्री जिनवाणी में होता तत्वों का सुन्दरतम वर्णन ।
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण,
उन देव परम आगम गुरू को शत-शत वन्दन, शत-शत वन्दन ।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरू समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरू समूह अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरू समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।
इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम, लावण्यमयी कंचन काया ।
यह सब कुछ जल की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया ।।
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर ममता में अटकाया हूँ ।
अब सम्यक् निर्मल नीर लिये, मिथ्या मल धोने आया हूं ।।१।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्यो मिथ्यात्वमलविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जड़ चेतन की सब परिणति प्रभु, अपने अपने में होती है ।
अनुकूल कहें, प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है ।।
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है ।
संतप्त हृदय प्रभु ! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है ।।२।।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्यो क्रोधकशायमलविनाशनाय चंदनं निर्वपा. स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उज्ज्वल हूँ कुन्द धवल हूँ प्रभु ! पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनुकूल लगे उन पर, करता अभिमान निरन्तर ही॥
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया।
निज शाश्वत अक्षयनिधि-पाने अब दास चरण-रजमें आया ॥३॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मानकषायमलविनाशनाय अक्षतं निर्वपा. स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं।
उर अन्तर का प्रभु ! भेद कहूं, उसमें ऋजुता का लेश नहीं॥
चिंतन कुछ, फिर संभाषण कुछ, किरिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ जो, अन्तर का कालुष धोती है ॥४॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मायाकषायमल विनाशनाय पुष्पं निर्वपा. स्वाहा।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों से प्रभु ! भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही, वह रिक्त रही॥
युग-युग से इच्छा सागर में, प्रभु ! गोते खाता आया हूं।
पंचेन्द्रिय मन के षट्‌रस तज, अनुपम रस पीने आया हूं ॥५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो लोभकषायमल विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपा. स्वाहा

जग के जड़ दीपक को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
झंझा के एक झकोरे में, जो बनता घोर तिमिर कारा॥
अतएव प्रभो ! यह नश्वर दीप, समर्पण करने आया हूं।
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर, दीप जलाने आया हूं ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अज्ञान विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ कर्म घुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।
मैं राग-द्वेष किया करता, जब परिणति होती जड़ मेरी॥
यों भाव करम या भाव मरण, सदियों से करता आया हूं।
निज अनुपम गंध अनल से प्रभु, पर गंध जलाने आया हूं ॥७॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो विभावपरिणति विनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है।
मैं आकुल व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है॥
मैं शान्त निराकुल चेतन हूं, है मुक्तिरमा सहचर मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु ! सार्थक फल पूजा तेरी॥८॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्यो मोक्षपद प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भर निज रस को पी चेतन, मिथ्या मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनिष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है॥
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल रवि जग मग करता है।
दर्शन बल पूर्णप्रकट होता, यह ही अर्हन्त अवस्था है॥
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु ! निज गुण का अर्घ बनाऊँगा।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु ! अर्हन्त अवस्था पाऊँगा॥९॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्तवन

भव वन में जीभर घूम चुका, कण-कण को जी भर-भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिली सुख की रेखा॥१॥
झूंठे जग के सपने सारे, झूंठी मन की सब आशायें।
तन-यौवन-जीवन अस्थिर है, क्षण भंगुर पल में मुरझाए॥२॥
सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अशरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या॥३॥
संसार महादुःख सागर के प्रभु दुःखमय सुख आभासों में।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी, कंचन-कामिनि-प्रासादों में॥४॥
मैं एकाकी एकत्व लिए, एकत्व लिए सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते॥५॥
मेरे न हुये ये, मैं इनसे, अति भिन्न अखण्ड निराला हूं।
निज में पर से अन्यत्व लिए, निज सम रस पीने वाला हूं॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसके शृंगारों में मेरा, यह मंहगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से, इस चेतन का कैसा नाता ॥७॥
दिन रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस वाणी और काया से, आश्रव का द्वार खुला रहता ॥८॥
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तःस्थल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अन्तर्बल ॥९॥
फिर तप की शोधक वन्हि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वाङ्ग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़े ॥१०॥
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकांत विराजे क्षण में जभी।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकांत बने फिर हमको क्या ॥११॥
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नयतम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊं, मद-मत्सर मोह विनश जावे ॥१२॥
चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी ॥१३॥
चरणों में आया हूं प्रभुवर शीतलता मुझको मिल जावे।
मुर्झाई ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे ॥१४॥
सोचा करता हूं भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला ॥१५॥
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया, प्रभु! सच्चे सुख की परिभाषा ॥१६॥
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक मोती सारे ॥१७॥
स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं।
इस पावन नौका पर लाखों, प्राणि भव-वारिधि तिरते हैं ॥१८॥
हे गुरुवर! शाश्वत सुख-दर्शक, यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्श कराने वाला है ॥१९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब जग विषयों ते रच पच कर. गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विष कंटक बोता हो ॥२०॥
हो अर्ध निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हों।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्वों का चिंतवन करते हो ॥२१॥
करते तप शैल नदी तट पर, तरु, तल वर्षा की झड़ियों में।
समता रस पान किया करते, सुख-दुःख दोनों की घड़ियों नें ॥२२॥
अन्तर ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुलझड़ियाँ।
भव बन्धन तड़-तड़ टूट पड़ें, खिल जावें अन्तर की कलियां ॥२३॥
तुम सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दी जग की निधियाँ।
दिन-रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ ॥२४॥
हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान-दीप आगम ! प्रणाम ।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पंथी गुरुवर ! प्रणा ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरूभ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

卐 卐 卐

श्री तीस चौबीसी पूजा

स्थापना

पाँच भरत शुभ क्षेत्र पाँच ऐरावते,
आगत नागत वर्तमान जिन शाश्वते।
सो चौबीसी तीस जजूं मन लायके,
आह्वानन विधि करूं बार त्रय गायके।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरू सम्बन्धी पाँच भरत, पाँच ऐरावत क्षेत्र विषें तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रा:अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वानम् ।

अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ. ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टक

नीर दधि क्षीर समल्यायो, कनक की भृंग भरवायो।
अबै तुम चरण ढिग आयो, जनम जरा रोग नशवायो ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिन राजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।१।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः ।। जलम् ।।

सुरभजुत चन्दन ल्यायो, संग करपूर घसवायो।
धार तुम चरण ढरवायो, भव आताप नशवायो ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिन राजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।२।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः ।। चन्दनम् ।।

चन्द सम तदुल सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं।
पुंज तुम चरण ढिग धारं, अक्षयपद प्राप्त के कारं ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।३।।

ॐ ह्रीं पांच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः । अक्षतान् ।।

पुष्प शुभ गंधजुत सोहै, सुगंधित नास मन मोहै।
जजत तुम मदन क्षय होवे, मुक्ति पुर पलक में जोवे ।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ।।४।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीस के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः । पुष्पम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस व्यञ्जन लिया ताजा, तुरत बनवाय के खाजा।
चरण तुम जजों हो महाराजा, क्षुधादिक पलक में भाजा ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥५॥

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। नैवेद्यम् ॥

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ जोतिधारी है।
होय दशों दिशा उजारी हैं, धूम्र मिस पाप छारी हैं ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥६॥

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। दीपम् ॥

सरस शुभ धूप दस अंगी, जलाऊँ अग्नि के संगी।
करम की सैन चतुरंगी, चरन तुम पूजते भंगी ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥७॥

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। धूपम् ॥

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो।
चरण जिन भेंट धरवायो, कार्य मनवांछिता पायो ॥
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिन राजे, पूजतां पाप सब भाजे ॥८॥

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। फलम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य आठों जु लीना है, अघ कर में नवीना है।
पूजते पाप छीना है; 'भानुमल' जोरं कीना है।।
दीप अढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दस ता विषैं छाजे।
सात शत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजे।।९।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत पाँच ऐरावत दस क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। अर्घम्।।

आदि सुदर्शन मेरू तनी दक्षिण दिशा।
भरत क्षेत्र सुखदाय सरस सुन्दर लसा।।
तहां चौबीसी तीन यजूं जिनराजजी।
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमूं सिर नायजी।।१।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु के दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं। निर्वपा.।।

याहि मेरू उत्तर ऐरावत साहनो।
आगत नागत वर्तमान मन मोहनो।।
तहां चौबीसी तीन यजूं जिनरायजी।
बहत्तर जिन सर्वज्ञ नमूं शिरनायजी।।२।।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु के उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपा।।

कुसुमलता छन्द

खण्ड घातकी विजय मेरू के, दक्षिण दिशा भरत शुभ जान।
तहां चौबीसो तीन विराजे, आगत नागत अरु वर्तमान।।
तिनके चरण कमल को निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूं उर ध्यान।
इस संसार भ्रमण तैं तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान।।३।।

ॐ ह्रीं घातकी खण्ड द्वीप की पूर्व दिशा विजय मेरु की दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः।अर्घम्।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी दीप की प्रथम शिखिर की, उत्तर ऐरावत जु महान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा सासते जान॥
तिनके चरण कमल को निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूँ उर ध्यान।
इस संसार भ्रमण तें तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥४॥

ॐ ह्रीं घातकीखण्ड द्वीप की पूर्व दिशा विजय मेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधो तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः। अर्घम्॥

खण्ड घातकी अचल सुमेर, दक्षिण तास भरत बहु घेर।
तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत और वर्तमान॥५॥

ॐ ह्रीं घातकीखण्ड द्वीप की दिशा अचल मेरु की दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः। अर्घम्॥

अचल मेरु उत्तर दिश जान, ऐरावत शुभ क्षेत्र बखान।
तामें चौबीसी त्रय जान. आगत, नागत और वर्तमान॥६॥

ॐ ह्रीं घातकीखण्ड द्वीप की पश्चिम दिशा अचल मेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः।अर्घम्॥

द्वीप पुष्कर की पूर्व दिशा, मन्दिर मेरु की दक्षिण भरत सा।
ता विषैं चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जूं॥७॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीप की पूर्व दिशा मन्दिर मेरु की दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः।अर्घम्॥

गिरि सू मन्दिर उत्तर जानिये, क्षेत्र ऐरावत शुभ जानिये।
ता विषैं चौबीसी तीन जूं, अर्घ लेय जजूं परवीन जूं॥८॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीप की पूर्व दिशा मन्दिर मेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः॥अर्घम्॥

पश्चिम पुष्कर गिरि विद्युतमाल, तासु दक्षिण भरत है विशाल।
तामें चौबीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूं परवीन॥९॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करार्द्ध द्वीप की पश्चिम दिशा विद्युत माली मेरु की दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः।अर्घम्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

याहि गुरू के उत्तर जू ओर, ऐरावत क्षेत्र बनो निहोर।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्य लेय जजूँ परवीन ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्कर द्वीप की पश्चिम दिशा विद्युतमाली मेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घम्।

दीप अढ़ाई के विषैं, पंचमेरु है तांह।
दक्षिण उत्तर तासके, भरत ऐरावत भाय ।।
भरत ऐरावत भाय एक क्षेत्र के मांही।
चौबीसी हैं तीन दसों दिशिही के मांही ।।
दसों क्षेत्र के सर्व सातसौ बीस जिनेश्वर।
अर्घ ल्याय कर जोडि जजैं 'रविमल' सुमनकर ।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी दस क्षेत्र के विषैं तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। अर्घम् ।।

जयमाला

दोहा— चौबीसी तीसों नमों, पूजा परम रसाल।
मन, वच तन त्रय शुद्धकर, अब वरणों जयमाल ।।

जय द्वीप अढ़ाई में जुसार, गिर पाँच मेरु उन्नत अपार।
तागिर पूर्व-पश्चिम जु ओर, शुभ क्षेत्र विदेह बसैं जु ठोर ।।
ता दक्षिण क्षेत्र भरत जानि, है उत्तर ऐरावत महान।
गिर पाँच तनें दश क्षेत्र जोय, ताको वरणन अब सुनो लोय ।।
जो भरत तनो वरणन विशाल, तैसो ही ऐरावत विशाल।
इस क्षेत्र बीच विजियार्द्ध एक, वा ऊपर विद्याधर अनेक ।।
इस क्षेत्र विषैं षट खण्ड जानि, तहाँ छहों काल बरतै महान।
जहँ तीन काल में भोग भूमि, दस जाति कल्पतरु रहे झूमि ।।
तब चौथो काल लगे जु आय, तब कर्म भूमि वर्तें सुहाय।
जब तीर्थंकर को जन्म हेय, सुरलेय जजैं गिर पर सुजोय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहु भक्ति करें सब देव आय, ताथेई थेई थेई थेई तान ल्याय।
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनन्द कार ।।
इत्यादि भक्ति करि के सुरेन्द्र, निज थान जाय जुत देववृन्द।
इहि विधि पांचों कल्याण होय, हरि भक्ति करे अतिहर्ष जोय ।।
या काल विषै पुण्यवंतजीव, नरजन्म धार शिव लहैं अतीव।
अब त्रेसठ पुरुष प्रवीन होय, सब याही काल विषै जु होय ।।
जब पंचम काल करे प्रवेश, मुनिधर्म तणों नहीं रहे लेश।
विरले कोई दक्षिणदेश मांहि, जिनधर्मी नर बहुते जु नाहीं ।।
जब आवत है षष्टमजु काल, दुख में दुख प्रगटे अति कराल।
जहाँ माँसभक्षी नर सर्व होय, तहाँ धर्म नाम सुनिये न कोय ।।
दश क्षेत्रन में रचना समान, जिनवाणी भाख्यो सो प्रमाण।
चौबीसी हैं इक क्षेत्र तीन, दश क्षेत्रनि में जानो प्रवीन ।।
आगत नागत अरु वर्तमान, सत सात शतक अरु बीस जानि।
सब ही महाराज नमूं त्रिकाल, मम भवसागर तें लेहु निकाल ।।
यह वचन हिये में धार लेहुं, मम रक्षा करहु जिनेन्द्र देव।
रविमल की विनती सुनहु नाथ मैं पांय परुं जुग जोरीहाथ ।।
मम वांछित कारज करो पूर यह अरज हृदय में धरि जरूर ।।

घत्ता

शत सात जु बीस श्री जगदीशं आगत नागत वर्तंतु हैं।
मन बच तन पूजै सुध मन हूजै स्वर्ग मुक्ति पद पावत हैं ।।

ॐ ह्रीं पंच मेरु संबंधी दश क्षेत्रनि के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः ।।अर्घं।।

—: दोहा :—

सम्वत् सन उन्नीस के, तार ऊपर पुनि आह।
पोष कृष्ण तृतीया गुरुः पूरन भयो जु पाठ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षर मात्रा की कसर, बुध जन शुद्ध करेय ।
अल्प बुद्धि मो सोचकें; दोष कबहूँ नहीं देय ।।
पढ़यो नहीं व्याकरण मैं, पिंगल देख्यो नाहिं ।
जिनवाणी परसाद तें उमंग भई घट माहिं ।।
मान बढ़ाई ना चहूँ, चहूँ धर्म को अंग ।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धारि उमंग ।।

इत्याशीर्वादः

बीस तीर्थङ्कर पूजा (भाषा)

दीप अढ़ाई मेरू पन, अब तीर्थंकर बीस ।
तिन सबकी पूजा करूँ, मनवचतन धरि शीस ।।

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रवर्ति विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्रअवतरावतर संवौषट्
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रवर्तिविद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रवर्तिविद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् ।

इंद्र फणींद्र नरेन्द्र, – वंद्य पद निर्मलधारी ।
शोभनीक संसार, सार गुण है अधिकारी ।।
क्षीरोदधिसम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार ।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ।।
श्री जिनराज हो भव तारणतरण जिहाज ।।१।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम्....
नोट—बड़ा मंत्र बोलना हों, तो इस प्रकार मंत्र बोलना चाहिए)

ॐ ह्रीं सीमंधर–युग्मंधर–बाहु–सुबाहु–संजातक–स्वयंप्रभु–ऋषभानन–अनंतवीर्य–सूरज प्रभु–विशालकीर्ती–वज्रधर–चन्द्रानन–चन्द्रबाहु-भुजङ्गम–ईश्वर–नेमि प्रभु–वीरसेण–महाभद्र-देवशोऽजित-वीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये ।
तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये ।।
बावन चंदनसों जजूं (हो), भ्रमनतपत निरवार ।। सीमं ।।२।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।।

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी ।
तातें तारे बड़ी भक्ति नौका जगनामी ।।
तन्दुल अमल सुगन्ध सों (हो), पूजों तुम गुणसार ।। सीमं. ।।३।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।।

भविक-सरोज-विकाश, निंद्यतमहर रवि से हो ।
जति श्रावक आचार, कथन को तुमही बड़े हो ।।
फूलसुवास अनेकसों (हो), पूजो मदन प्रहार ।। सीमं. ।।४।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् ।।

कामनाग विषधाम नाशको गरूड़ कहे हो ।
क्षुधा महादवज्वाल, तासुको मेघ लहे हो ।।
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार ।। सीमं. ।।५।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।।

उद्यम होन न देत, सर्व जगमाहिं भरचो है ।
मोह महातम घोर, नाश परकाश करचो है ।।
पूजों दीप प्रकाश सों (हो) ज्ञान ज्योति करतार ।। सीमं. ।।६।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्. ।।

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा ।
ध्यान अग्निकर प्रगट, सर्व कीनो निरवारा ।।
धूप अनूपम खेवतें (हो), दुःख जलें निरधार ।। सीमं. ।।७।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं ।
सबको छिनमें जीत, जैन के मेरु खरे हैं ।।
फल अति उत्तम सों जजो (हो) वांछितफल दातार ।। सीमं. ।।८।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलम् ।।
जल फल आठों द्रव्य, अरघ कर प्रीति धरी है ।
गणधर इन्द्रनिहूंतैं थुति पूरी न करी है ।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार ।। सीमं. ।।९।।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घम् ।।

जयमाला

ज्ञानसुधाकर चन्द, भविकखेतहित मेघ हो ।
भ्रमतमभान अमंद तीर्थंकर बीसों नमो ।। १ ।।

चौपाई

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जग जन तारे, कर्म सुबाहु बाहुबल दारे ।।१।।
जात सुजात केवलज्ञानं । स्वयंप्रभू स्वयंप्रभु प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं । अनन्त वीरज वीरज कोषं ।।२।।
सौरीप्रभ सौरी गुणमालं । सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
वज्रधार भवगिरिवज्जर हैं । चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं ।।३।।
भद्रबाहु भद्रनि के कर्ता । श्री भुजङ्ग भुजङ्गम हरता ।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजें । नेमिप्रभु जस नेमि विराजें ।।४।।
वीरसेन वीरं जग जानैं । महाभद्र महाभद्र बखानैं ।
नमों जसोधर जसधरकारी । नमों अजित वीरज बलधारी ।।५।।
धनुष पाँचसौ काय विराजै । आठकोडि पूरब सब छाजै ।
समवशरण शोभित जिनराजा । भवजलतारण तरन जिहाजा ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक रत्नत्रय-निधि-दानी। लोका-लोक-प्रकाशक ज्ञानी।
शत इन्द्रनिकरि वंदित सोहै। सुरनर पशु सबके मन मोहै ॥७॥

—: दोहा :—

तुमको पूजै वन्दना, करै धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥८॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ

कृत्याऽकृत्रिमचारु चैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीङ्गतान्, वन्दे भावनव्यन्तर द्युतिवर स्वर्गापरावासगान्। सद्गंधाक्षतपुष्पदाम-चरुकैः सद्दीप धूपैः फलै नीराद्यैश्च यजै प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणा शांतये ॥१॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धी जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यम् निर्वपा. स्वाहा:

वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु, यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि बन्दे जिनपुङ्गवानां। अवनितल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां, वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥२॥ जम्बूधातकी पुष्करार्द्ध वसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाश्चन्द्रा म्भोजशिखंडिकण्ठकनक प्रावृड्घनाभाजिनाः। सयग्ज्ञानचरित्र-लक्षणधराः दग्धाष्टकर्मेन्धनाः। भूतानागतवर्त्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥३॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौरजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे। वृक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुण्डले मानुषांके ॥ इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरेस्वर्गलोके। ज्योतिर्लोकेऽभि वन्दे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥४॥ द्वौ कुन्देन्दुतुषारहार धवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ, द्वौ बन्धूकसमप्रभौ जिनवृषौ। द्वौ च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रियंगुप्रभो । शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभास्ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धि ययच्छंतु नः ॥५॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधीकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपा. ॥

इच्छामिभिन्ते–चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ। अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जांणि जिण-चेईयाणि ताणि सव्वाणि, तीसुविलोयेसुभवणवासियवाण वितर-जोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गन्धेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्वाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुञ्जंति वन्दन्ति णमस्संति अहमवि इहसन्तो तत्थसन्ताइ णिच्चकाल अच्चेमि पुञ्जेमि वन्दामि णमस्सामि । दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

(परपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्णिक-माध्याह्निक-अपराह्णिक देववंदनायां पूर्वा-चार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजाबंदनास्तवसमेतं चैत्यभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(कायोत्सर्ग करना तथा ९ बार णमोकार मंत्र का जाप करना)

तीन लोक सम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालय पूजा

चौपाई

आठ करोड़रु छप्पन लाख। सहस सत्याणव चतुशत भाख।
जोड़ इक्यासी जिनवर थाव। तीनलोक आह्वान करान ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्रावतरतावतरत । संवोषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट् पपंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत । वषट् ।

क्षीरोदधिनीरं, उज्जल सीर, छान सुचीरं, भरि झारी ।
अति मधुर लखावन, परम सु पावन, तृषा बुझावन, गुण भारी ॥
वसुकोटि सु छप्पन, लाख सतावण, सहस चारशत इक्यासी ।
जिनगेह अकीर्तिम, तिहुंजगभीतर पूजत, पद ले अविनासी ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रैलोकसम्बन्ध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो जलं निर्वपा. ।

मलयागर पावन, चन्दन बावन, तापबुझावन, घसि लीनो ।
भरि कनक कटोरी, द्वै कर जोरि, तुमपद ओरि चित्त दीनो । वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्वपा. ।

बहुंभांति अनोखे, तंदुल चौखे, लखि निरदोषे, हम लीने ।
धरि कंचनथाली तुम गुणमाली, पुंज विशाली कर दीने । वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटिषट् पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् निर्वपा ।

शुभ पुष्प सुजाती, है बहु भांति, अलि लिपटाती, लेय वरं ।
धरि कनक-रकेबी, करगह लेवी, तुमपद जुगकी, भेट धरं ॥
वसुकोटि सु छप्पन, लाख सतावण, सहस चारशत इक्यासी ।
जिनगेह अकीर्तिम, तिहुंजगभीतर, पूजत पद ले अविनाशी । वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पुष्पम् निर्वपा. ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुरमा जु गिदौड़ा, बरफी पेड़ा घेवर मोदक, भरि थारी।
विधिपूर्वक कीने, घृतपय भीने, खडमें लीने, सुखकारी। वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्वपा.।

मिथ्यात महातम, छाय रह्यो हम, निजभव परणति, नहि सूजै।
इहकारण पाकैं, दीप सजाकैं, थाल धराकैं, हम पूजैं। वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्वपा.।

दशगंध कुटाके, धूप बनाके, निजकर लेके, धरि ज्वाला।
तसुधूम उड़ाई, दशदिश छाई, बहु महकाई, अति आला। वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो धूपं निर्वपा.।

बादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे, द्राख वरं।
इन आदि अनोखे, लखि निरदोखे, थाल पजोखे, भेट धरं। वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतु शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो फलं निर्वपा.।

जल चन्दन तंदुल, कुसुमरु नेवज, दीप धूप फल, थाल रचौ।
जयघोष कराऊँ, बीन बजाऊँ, अर्घ चढ़ाऊँ, खूब नचौ। वसु.

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्ट कोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतु शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपा.।

प्रत्येक अर्घ।

चौपाई

अधोलोक जिनआगमसाख। सात कोड़ि अरु बहत्तर लाख॥
श्रीजिनभवन महा छबि देई। ते सब पूजौं वसुविध लेई॥१॥

ॐ ह्रीं अधोलोकसम्बंधि-सप्तकोटिद्विसप्त-तिलक्षाकृत्रिम-श्रीजिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपा.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यलोक जिनमंदिरठाठ। साढ़े चार शतक अरु आठ॥
ते सब पूजो अर्घ चढ़ाय। मन वच तन त्रय योग मिलाय॥२॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बंधी-चतुशताष्ट-पंचाशत्-श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति।

अडिल्लः—ऊर्ध्वलोकके मांहि भवन जिन जानिये।
लख चौरासी सहस सत्यावन मानिये॥
तापै धरि तेईस जजौं सिरनायके।
कंचनथालमझार जलादिक लायकें॥३॥

ॐ ह्रीं उर्ध्वलोकसम्बंधीचतुःशीतिसप्तनवतिसहस्त्रत्रयोविंशति श्री-जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यम्—

गीता छन्द

वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर. सहससत्यावन मानिये।
सत च्यारपै गिन ले इक्यासी, भवनजिनवर जानियें॥
तिहुंलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करें।
तिन भवनको हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुःख हरें॥४॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपा.।

जयमाला

दोहा—अब बरणों जयमालिका, सुनो भव्य चित्त लाय।
जिनमंदिर तिहुं लोकके देहु सकल दरसाय॥१॥

पद्धड़ी छन्द

जय अमल अनादि अनत जान। अनिमित जुअकीर्तम अचलमान।
जय अजय अखंड अरूपधार। षट्द्रव्य नहीं दीसैं लगार॥२॥
जय निराकार अविकार होय। राजत अनंतपरदेश सोय।
जय शुद्ध सुगुण अवगाहपाय। दशदिशामाँहि इहविधि लखाय॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह भेद अलोकाकाश जान। तामध्य लोक नभ तीन मान।
स्वयमेवबन्यौ अविचल अनंत। अविनाशि अनादि जु कहतसंत ॥४॥
पुरुषाकार ठाढ़ो निहार। कटि हाथ धारि द्वै पग पसार।
दक्खिन उत्तरदिशि सर्वठोर। राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥
जय पूर्व अपर दिश घाट बाधि। सुन कथनकहूं ताको जुसाधि।
लखि श्वभ्रतलैं राजू जु सात। मधिलोक एक राजू रहात ॥६॥
फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पाँच। भू सिद्ध एक राजू जु साँच।
दश चार ऊँच राजू गिनाय। षठद्रव्य लये चतुकोन पाय ॥७॥
तसु बातबलय लपटाय तीन। इह निराधार लखियो प्रवीण।
त्रसनाली तामधि जाव खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥८॥
राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना महान।
तामध्य जीवत्रस आदि देय। निज थान पाय तिष्ठे भलेय।
लखि अधोभाग में श्वभ्रथान। गिन सात कहे आगम प्रमान ॥९॥
षटथानमांहि नारकि बसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय ॥१०॥
तसु अधो भाग नारकी रहाय। फुनि ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय।
सब रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य सज रचना स्वसेव ॥११॥
तिहथान गेह जिनराजभाख। गिन सातकोटि बहतरि जुलाख।
ते भवन नमो मन वचन काय। गतिश्वभ्रहरनहारे लखाय ॥१२॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार। लखि दीप उदधि रचनाविचार।
गिन असंख्यात भाखे जु संत। लखि संभुरमन सबके जु अंत ॥१३॥
इक राजू व्यास में सर्व जान। मधिलोकतनो इक कथन मान।
सब मध्य दीप जंबू गिनेय। त्रस दशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥
इन तेरह में जिन धाम जान। सत चार अठावन है प्रमान।
खगदेव असुर नर आय आय। पद पूँज जाँय शिर नाय नाय ॥१५॥
जय ऊर्ध्वलोकसुरकल्पवास। तिंह थान छजें निजभवन खास।
जय लाख चुरासी पै लखेय। जय सहस सत्यानव और ठेंय ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय बीसतीन पुनि जोड़देय। जिन भवन अकीर्तम जान लेय।
प्रति भवन एक रचना कहाय। जिनबिंब एकसठ आठपाय ॥१७॥
शतपंच धनुष उन्नत लसाय। पद्मासनजुत वर ध्यान लाय।
शिर तीनछत्र शोभित विशाल। त्रय पादपीठ मणिजड़ितलाल ॥१८॥
भामंडल की छबि कौनगाय। पुनि चँवरढुरत चौसठि लखाय।
जय दुंदुभिरव अदभुत सुनाय। जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥
जय तरुअशोक शोभा भलेय। मंगल विभूति राचत अमेय।
घटतूप लखे मणिमाल पाय। घटधूप ध्रुम्र दिग सर्व छाय ॥२०॥
जय केतुपंक्ति सोहे महान। गंधर्वदेव गुन करत गान।
सुर जनमलेत लखि अवधिपाय। तिसथान प्रथम पूजनकराय ॥२१॥
जिनगेहतणो वरनन अपार। हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार।
जयदेव जिनेसुर जगत भूप। नमि 'नेम' मँगै निज देहु रूप ॥२२॥

दोहा—

तीनलोक में सासते, श्रीजिनभवन विचार।
मनवचन करि शुद्धता, पूजों अरघ उतार ॥२३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपा. ॥

कवित्त

तिहु जगभीतर श्रीजिनमन्दिर, बने अकीर्तम अतिसुखदाय।
नर सुर खग करि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय ॥
धन धान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपौत्र सुख होत भलाय।
चक्री सुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपुर सुख थाय ॥२४॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजिल क्षिपेत् ।)

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध पूजा

ऊर्ध्वाधोर युतं सविन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं, वर्गापूरित-दिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वित । अंतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं । देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभ-कण्ठीरवः ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते, सिद्धपरमेष्ठिन्, अत्रअवतरअवतरसंवोषट्

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते, सिद्धपरमेष्ठिन्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते, सिद्धपरमेष्ठिन्, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

द्रव्याष्टकं

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् । वन्देहऽहं परमात्मानम-मूर्त्तं मनुपद्रवम् ॥१॥ सकलामरेन्द्र सेव्यं, ज्ञानामृत पान तृप्त निजभावं । संस्थापयामि सिद्धं, कर्मानलदाव मेघौघं ॥२॥

(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं हान्यादिभावरहितं भववीतकायम् ।
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

आनंदकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ।
सौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनानां गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वं ॥२॥

सर्वावगाहनगुण सुसमाधिनिष्ठं सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालम् ।
सौगंध्यशालिवनशालिवराक्षतानां पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रं ३

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वं. ३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria; Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञ द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दारकुन्द कमलादिवनस्पतीनां पुष्पैर्यजेशुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति ॥
उर्द्ध स्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्नसाज्यवटकै रसपूर्णगर्भै — नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्ध चक्रम ॥५॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविध्वंसनाय नैवेद्यं अर्घं निर्वपामीति ॥५॥
आतङ्कशोक भयरोगमदप्रशान्तं निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम् ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वर सिद्धचक्रम् ॥६॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति ॥६॥
पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्यगन्धघनसारविमिश्रितानां धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ।७।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधितपये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥
सिद्धासुराधिपतियक्ष नरेन्द्रचक्रै र्ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्ग पूगकदलीफलनारिकेलैः सोऽहंयजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ।८।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥
गन्धाढयं सुपयो मधुव्रतगणैः सङ्गं वरं चन्दनं पुष्पौघ विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकम् । धूपं गन्धयुतं ददामि विविध श्रेष्ठं फलं लब्धये सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमल सेनोत्तरं वाञ्छितम् ॥९॥
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तयेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं सूक्ष्मस्वभावपरम यदनन्तवीर्यम्। कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यबीजं वन्दे सदा निरुपमं वरसिद्ध-चक्रम् ॥१०॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।१०।

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं यानाराध्य निरुद्धचमण्डमनसः सन्तोऽपि तीर्थङ्कराः सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्य्य-विशदऽव्याबाद्यताद्यैर्गुणै—र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सतत सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥११॥

(पुष्पांजली क्षेपण)

अथ जयमाला

विराग सनातन शांत निरंश। निरामय निर्भय निर्मल हंस।
सुधाम विबोधनिधान विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१॥
विदूरितसंमृतिभाव निरग। समामृतपूरित देव विसंग।
अबंध कषायविहीन विरोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥२॥
निवारितदुष्कृत कर्मविपाश। सदा मलकेवलकेलि निवास।
भवोदधिपारग शांत विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३॥
अनंतसुखामृतसागर धीर। कलंक रजोमल भूरिसमीर।
विखण्डितकाम विराम विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥
विकार विवर्जित तर्जित शोक। बिबोधसुनेत्र विलोकितलोक।
विहार विराव विरंग विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥५॥
रजोमलखेद विमुक्त बिगात्र। निरंतर नित्य सुखामृतपात्र।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥६॥
नारामरबंदित निर्मलभाव। अनंतमुनीश्वरपूज्य विहाव।
सदोदय विश्व महेश विमोह। प्रसिद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विदंभ वितृष्ण विदोषं विनिद्र। परात्परशंकर सार वितद्र।
विकोप विरूप विशंक विमोह प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥८॥
जरामरणोज्झित वीत विहार। विचिंतित निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्यचरित्र विदर्प विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥९॥
विवर्ण विगंध विमान विलोभ विमाय विकायविशब्द विशोम।
अनाकुल केवल सार्व विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥

घत्ता

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नम्, परपरणतिशुक्तं पद्मनंदी-द्रवन्द्यम् निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्र विशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥१॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

अविनाशी अविकार परमरस धाम हो।
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो।
सुद्धबुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो।
जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥
ध्यानअग्निकर कर्म कलंक सबै देहे,
नित्य निरंजन देव स्वरूपी हो रहे।
ज्ञायक के आकार ममत्व निवारकैं,
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायके ॥२॥

दोहा

अविचलज्ञान प्रकाशते, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धर सो पाइये, परमसिद्ध भगवान ॥१॥

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध पूजा का भावाष्टक

निजमनोमणिभाजनभरया, समरसैकसुधा रस धरया।
सकल-बोध-कला-रमणीयकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥१॥
मोहि तृषा दुखदेत, सो तुमने जीती प्रभु।
जल से पूजूं तोय, मेरो रोग निवारियो ॥१॥ जलम् ॥
सहजकर्मकलंकविनाशनैं रमलभावसुवासित चन्दनैः।
अनुपमान-गुणावलि-नायकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥२॥
हम भव आतप मोहि, तुम न्यारे संसार से।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दन से पूजा करूँ ॥२॥ चन्दनं ॥
सहजभावसुनिर्मलतन्दुलैः सकलदोषविशाल विशोधनैः।
अनुपरोध सुबोध-निधानकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥३॥
हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षय गुण के भरे।
पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजियो ॥३॥ अक्षतान् ॥
समयसारसुपुष्प सुमालया सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोग-बलेन वशीकृतं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥४॥
काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम।
पुष्प चढ़ाऊँ तोय, मेरो रोग निवारियो ॥४॥ पुष्पं ॥
अकृतबोध सुदिव्यनैवेद्यकैर्विहित जातजरामरणान्तकैः।
निरवधि-प्रचुरात्म-गुणालयं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥५॥
मोहि क्षुधा दुःख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती।
मेरी बाधा चूर, नेवेज से पूजा करूँ ॥५॥ नैवेद्यं ॥
सहजरत्नरुचि-प्रतिदीपकैः रुचि-विभूतितमः प्रविनाशनैः।
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनैं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥६॥
मोह तिमिर हम पास, तुमपै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तिमिर निवारियो ॥६॥ दीपं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज-गुणाक्षय-रूपसुधूपनै स्वगुण-घातिमल-प्रविनाशनैः ।
विशद-बोधदीर्घ-सुखात्मकं सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥७॥
अष्टकर्म बन जाल, मुक्त मांहि स्वामी, सुख करो ।
खेऊँ धूप रसाल, अष्टकर्म निरवारिया ॥७॥ धूपं ॥
परमभाव-फलाबलि-सम्पदा सहज-भावकुभावविशोधया ।
निजगुणास्फुरणात्म निरंजनं सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥८॥
अन्तराय दुःखटाल, तुम अनन्त थिरता लही ।
पूजूं फलधरसार, विघन टाल शिव फल करो ॥८॥ फलम् ॥
नेत्रोन्मीलि–विकाश–भाव–निवहै–रत्यंत–बोधाय वै ।
वार्गं–धाक्षत–पुष्प दाम–चरुकैः सद्दीप–धूपैः फलैः ॥
यश्चिन्तामणि शुद्ध–भाव–परम–ज्ञानात्मकं–रचयेत् ।
सिद्धं स्वादुमगाध बोधमचल, सचर्चयामी वयम् ॥९॥
हमसे आठों ही दोष, जजहुं अर्घ ले सिद्धजी ।
दीज्यो वसु गुण मोय, कर जोड़े 'द्यानत' खड़ा ॥९॥ अर्घम् ॥

कविवर वृन्दावनजी कृत

समुच्चय चौबीसी जिनपूजा

छन्द कवित्त

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराज ।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजित सुरराय ॥
विमल अनंत धर्म जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय ।
मुनि-सुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिन समूह ! अत्र अवतर अ.
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिन समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ.
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिन समूह ! अत्र मम सन्नि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर प्रासुक गन्ध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पदजजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष मही॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् नि.।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भव आताप हरी॥ चौ. ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्व.।

तंदुल सित सोम समान, सुन्दर अनियारे।
मुकताफल की उन्मान, पुञ्ज धरौं प्यारे॥ चौ. ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व.।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगन्ध भरे।
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम कलंक हरे॥ चौ. ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व.।

मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधारि हने॥ चौ. ॥५॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्व.।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगै।
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागै॥ चौ. ॥६॥

ॐ ह्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व।

दशगंध हुताशन मांहि, हे प्रभु खेवत हों।
निज धूम करम जरि जांहि; तुम पद सेवत हों॥ चौ. ॥७॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

शुचिपक्वसरस फल सार; ताको अर्घ करों।
देखत दृगमन को प्यार; पूजत सुख पायो॥ चौ. ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फल आठों शुचिसार, सब ऋतुके ल्यायो।
तुमको अरपो भवतार, भव तरि मुक्ति वरों॥
चौबीसो श्रीजिनचन्द; आनन्दकन्द सही।
पदजजत हरत भवफन्द; पावत मोक्ष मही॥ चौ. ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं।

जयमाला

छन्द धत्तानन्द

श्रीमत तीरथनाथ पद; माथ नाय हितहेत।
गाऊँ गुणमाला अबै; अजर अमर पद हेत॥१॥

छन्द पद्धरी

जय भवतम भंजन जनमनकँजन रंजन दिन मनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक; अरिगुण नाशक चौबीसों जिनराज वरा॥२॥
जय ऋषभदेव ऋषिगननमंत। जय अजितजीत वसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर। जय अभिनन्दन आनन्दपूर॥३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जय पद्म पद्मद्युति तनरसाल।
जय जय सुपास भवपास नाश। जय चंद चंदतनद्युति प्रकाश॥४॥
जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत। जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुतसहजभुज्ज। जय वासवपूजित वासुपूज्य॥५॥
जय विमल विमलपददेनहार। जय जय अनन्त गुनगुन अपार।
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत। जय शान्ति शान्ति पुष्टि करेत॥३॥
जय कुंथु कुंथु आदिकरखेय। जय अरजिन बसुअरि छयकरेय।
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल। जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल॥७॥
जय नमि नित वासवनुत सप्रेम। जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्द्धमान शिवनगर साथ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छन्द धत्तानंद

चौबीस जिनन्दा आनन्दा, पापनिकन्दा सुखकारी।
तिनपद जगचंदा उदय अमंदा, वासवबन्दा हितकारी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजे सो शिव लहै॥

इत्याशीर्वादः

चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा।

परम पूज्य चौबीस, जिहं जिह थानक शिवगये।
सिद्ध भूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतरावतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाणक्षेत्राणि! अत्रमम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

गीता छन्द

शुचि क्षीर दधि सम नीर निरमल, कनकझारी में भरौं।
संसार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौं॥
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरि कैलाशकौं।
पूजों सदा चौबीस जिन-निर्वाण भूमि निवास कौं॥१॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्नाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन, सलिल शीतल विस्तरौं।
भयताप को संताप मेटो, जोर कर विनती करौं ॥ मम्मेद ॥२॥

चन्दनम्।

मोती समान अखण्ड तंदुल, अमल आनन्द धरि तरौं।
औगुण हरौ गुणकरौ हम पर, जोरकर विनती करों ॥ सम्मेद ॥

अक्षतान्

शुभफूलरास सुवासवासित, खेद सब मन का हरौं।
दुःख धाम काम विनाश मेरो, जोरकर विनतीकरौं ॥ सम्मेद. ॥

पुष्पम्।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं।
यह भूख दूषण टार प्रभुजी, जोर कर विनती करों ॥ सम्मेद. ॥

नैवेद्यम्।

दीपक प्रकाश उजास उज्जल, तिमिरसेती नहींडरों।
संशय विमोहविभर्म तमहर, जोर कर विनती करों ॥ सम्मेद. ॥

दीपम्।

शुभ धूप परम अनूप पावन, भाव पावन आचरों।
सब करमपुंज जलाय दीजो, जोर कर विनतीकरौ ॥ सम्मेद. ॥

धूपम्।

बहुफल मंगाय चढ़ाय उत्तम, चार गतिसौं निरवरों।
निश्चै मुकति फल देहु मोकों, जोरकर विनतीकरों ॥ सम्मेद. ॥

फलम्.।

जग गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूपायन धरों।
'द्यानत'करो निरभयजगत तैं, जौरकर विनतीकरों ॥ सम्मेद. ॥

अर्घम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

सोरठा

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलासादिक नमो।
तीरथ महा प्रदेश, महापुरुष निरवान तैं ॥१॥

चौपाई १६ मात्रा

नमों ऋषभ कैलाश पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर बन्दों, सनमति पावापुर अभिनन्दो ॥२॥
बन्दों अजित अजित पददाता, बन्दौ संभव भव दुःखघाता।
बन्दों पद्म मुकति पद्माधर, वन्दों सुपार्श्व आशपासाहर।
बन्दों चन्द्रप्रभु प्रभुचन्दा, बन्दों सुविधि सुविधि निधिकन्दा ॥४॥
वंदों शीतल अघतप शीतल, वंदों श्रियांस श्रियांस महीतल।
बन्दों विमल विमल उपयोगी, बन्दों अनन्त अनन्त सुखभोगी।
बन्दों धर्म धर्म विसतारा, बन्दों शान्ति शान्ति मनधारा।
बन्दो कुंथु कुंथु रखवालं, बन्दो अर अरिहर गुनमाल ॥६॥
बन्दो मल्लि काममल्ल चूरन, बन्दों मुनिसुव्रत व्रत पूरन।
बन्दों नमि जिन नमित सुरासर, बन्दों पार्श्व-पार्श्व भ्रमजरहर ॥७॥
बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
भाव सहित बन्दे जो कोई १, ताहि नरक पशुगति नहीं होई ॥८॥
नरगति नृप सुर शक्र कहावें, तिहुं जग भोगि-भोगि शिव पावे।
विघन विनाशन मंगलकारी, गुण निशास बन्दों भवतारी ॥९॥

छन्द घत्तानन्द

जो तीरथ जावे पाप मिटावे, ध्यावे गावे भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिर के गुण को बुध उचरै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विशति तीर्थंकर निर्वाणक्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचमेरू पूजा

गीता छन्द

तीर्थंकरों के न्हवनजलतैं भये तीरथ शर्मदा। तातैं प्रदच्छन देत सूरगन, पंचमेरन की सदा॥ दो जलधि ढाईदीप में सब, गनत-मूल विराजहि। पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होहि सुख, दुःख भाजही ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरूसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिन प्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर, सवौषट्। ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिन प्रतिमा समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिन चैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहिनो भव भव वषट्।

चौपाई

शीतलमिष्टसुवास मिलाय, जलसो पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पाँचों मेरु असि जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥१॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो जलं निर्व.।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होह देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों॥ चन्दनं॥
अमल अखण्ड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुखहोय॥पांचों.॥ अक्षतान्॥
वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचों.॥ पुष्पं॥
मनवांछितबहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचो.॥ नैवेद्यं॥
तमहर उज्ज्वल ज्योतिजगाय दीपसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पाँचो.॥ दीपं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खेऊँ अगर परिमल अधिकाय, धूपसौं पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पाँचों ॥ धूपं ॥
सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पाँचों. ॥ फलम् ॥
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों ॥ अर्घम् ॥

जयमाला

सोरठा।

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमें प्रगट ॥१॥
प्रथम सुदर्शन मेरु बिराजै, भद्रशाल वन भरपूर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन वन्दना हमारी ॥२॥
ऊपर पंच शतकपर सौहै, नदनवन देखत मन मोहै ॥चैं.॥३॥
साढ़ेबासठ सहसऊँचाई, वनसौमनस शौभेअधिकाई ॥चैं.॥३॥
ऊंचाजोजन सहसछत्तीसं, पांडुकवभ सोहेगिरिशीस ॥चैं.॥५॥
चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुं जाने।
चैत्यालय सौलह सुखकारी मनवचतन वन्दना हमारी ॥६॥
ऊँचे पांचशतक पर भाखे, चारों नंदनवनअभिलाखे ॥चैं.॥७॥
साढ़ेपचपन सहसउतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा ॥चैत्या.
उच्चउठाइस सहसबताये, पांडुकचारौ वन शुभगाये ॥ चैत्या.
सुर नर चारन वंदनआवैं, सो शोभा हमकिह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥१०॥

दोहा— पंचमेरुकी आरती, पढ़ै सुने जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभु, तुरत महासुख होय ॥११॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्योऽर्घं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वर द्वीप (अष्टान्हिका) पूजा

सरब परब में बड़ो अठाई परब है, नन्दीश्वर सुर जाहिं लेय वसु दरब है। हमें सकति सो नाहिं इहाँ करि थापना, पूजों जिन गृह प्रतिमा है हित आपना ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमा समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचनमणिमयभृंगार, तीरथनीरभरा, तिहूं धार दयी निरवार जामन मरन जरा। नन्दीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पूजा करों। वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्दभावधरों।

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्वापंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं,
प्रभु यह गुन कीजे साँच, आयो तुम ठाहीं ॥ नंदी. ॥ चन्दनम् ॥
उत्तम अक्षत जिनराज, पुन्ज धरे सोहै,
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है ॥ नंदी. ॥ अक्षतान् ॥
तुम काम विनाशक देव, ध्याऊँ फूलनसौं।
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं सूलनसौं ॥ नंदी. ॥ पुष्पम् ॥
नेवज इन्द्रिय बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ॥ नंदी. ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपक की ज्योतिप्रकाश, तुमतन मांहिलसै।
टूटै करमन की राशि, ज्ञानकणी दरसै ॥ नंदी. ॥ दीपम् ॥
कृष्णागरुधूपसुवास, दशदिशिनारि बरै।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अति हरष भाव परकाश, मानों नृत्य करै ।। नंदी. ।। धूपम् ।।
बहुविधिफल ले तिहुंकाल, आनंद राचत हैं ।
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जांचतहैं ।। नंदी. ।। फलम् ।।
यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतुहों ।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतुहों ।। नंदी. ।। अर्घ्यम् ।।

जयमाला

दोहा— कातिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिन मांहि ।
नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजें इह ठांहि ।।१।।

एकसौ त्रेसठ कोडि जोजनमहा। लाख चौरासि एक-एक दिश में लहा ।। आठमो द्वीप नन्दीश्वरं भास्वरं। भौन भावन्न प्रतिमा सुख करं ।।२।। चारदिशि चार अंजनगिरि राजहीं। सहज चौरासिया एकदिश छाजहीं। ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं। भौनः. ।।३।।

एक इक चार दिशि चारशुभ बावरी।
एक इक लाख जोजन अमल जलभरी ।।
चहुंदिशि चार बन लाभ जोजन वरं। भौन. ।।४।।
सोल वापीनमधि सोल गिरि दधिमुखं।
सहज दश महा जोजन लखत ही सुखं ।।
बावरी कौन दोमांहि दो रतिकरम्। भौन. ।।५।।
शैल बत्तीस इक सहस जौजन कहे।
चार सोलह मिलैं सर्व बावन लहे ।।
एक इक सीसपर एक जिनमन्दिरम्। भौन. ।।६।।
बिंब आठ एकसौ रतनमयो सोहही।
देवदेवी सरव नयन मन मोहही ।।
पांचसै धनुष तन पद्मासन परम्। भौन. ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाल नख मुख नयन स्याम अरु श्वेत हैं।
स्यासमरंग भौंह सिरकेश छवि देत हैं॥
वचन बोलत मनो हँसत कालुषहरम्। भौन. ॥८॥
कोटि शशि भानदुति तेज छिप जात है।
महावैराग परिणाम ठहरात है॥
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरम्। भौन. ॥९॥

सोरठा

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमामहिमाको कहै।
'द्यानत' लीनों नाम, यहै भगति सब सुख करै॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्वापंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थङ्कर जे भये, हरषै इन्द्र अपार मेरुपै ले गये। पूजाकरि निजधन्यलख्यौ बहुचावसौं, हमहू षोडशकारन भावैं भावसौं॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत। वषट्।

चौपाई

कंचनझारी निर्मल नीर, पूजौं जिनवर गुनगम्भीर।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थङ्कर पद पाय।
परमगुरू होय, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥१॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्याषोडशकारणेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्व.।
चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥ चन्दनं ॥
तंदुल धवल सुगंध अनूप। पूजौं जिनवर तिहुं जगभूप।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥
फूल सुगंध मधुपगुंजार। पूजौं जिनवर जगआधार।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥ पुष्पं ॥
सदनेवज बहुविध पकवान। पूजौं श्रीजिनवर गुणखान।
परमगुरू होय, जय जय नाथ परमगुरू होय ॥ दरश ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपकजोति तिमिर क्षयकार, पूजौं श्रीजिन केवलधार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरश. ॥ दीपम् ॥
अगर कपूर गंध शुभखेय। श्रीजिनवर आगे महकेय।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥ धूपम् ॥
श्रीफल आदि बहुत फलसार। पूजौं श्रीजिन वांछितदातार।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥ फलम् ॥
जल फल आठों दरब चढ़ाय। 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परमगुरू हो, जय जय नाथ परमगुरू हो ॥ दरश. ॥ अर्घ्यं ॥

जयमाला

दोहा

षोडषकारण गुण करै, हरै चतुरगतिवास।
पाप पुण्य सब नाशकैं, ज्ञानभान परकास ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई

दरशविशुद्ध धरै जो कोई। ताको आवागमन न होई ॥
विनय महा धारैजोप्रानी। शिववनिताकी सखीबखानी ॥२॥
शील सदा दिढ़ जोनर पाले। सौ औरनकी आपद बाले ॥
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं। ताकै मोहमहातम नाहीं ॥३॥
जो संवेगभाव विसतारैं। स्वर्गमुक्तिपद आप निहारैं ॥
दानदेय मन हरषविशेखैं। इह भव जस परभवसुख देखे ॥४॥
जो तपतपै खपै अभिलाषा। चूरे करमशिखर गुरुभाषा ॥
साधुसमाधिसदा मनलावैं। तिहुंजगभोगभोगी शिवजावैं ॥५॥
निशदिन वैयावृत्य करैया। सो निहचै भव नीर तिरैया ॥
जो अरिहंतभगति मनआने। सोजन विषयकषाय न जानैं ॥६॥
जो आचारजभगति करैहै। सो निर्मल आचार धरै है ॥
बहुश्रुतवंतभगति जो करई। सो नर संपूरन श्रुत धरई ॥७॥
प्रवचनभगति करै जो ज्ञाता। लहै ज्ञान परमानन्ददाता ॥
षट् आवश्यक नित जो साधे। सो ही रत्नत्रय आराधै ॥८॥
धरमप्रभाव करै जेज्ञानी। तिन शिवमारग रीतिपिछानी ॥
वत्सल अंग सदा जो ध्यावे। सो तीर्थङ्कर पदवी पावे ॥९॥

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै ब्रत जोय।
देव इन्द्र नरवंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय ॥१०॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयाषोडशकारणेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्व.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशलक्षण धर्म पूजा

अडिल्ल— उत्तम छिमा मारदव आरजवभाव हैं।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव है ॥
आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं।
चहुंगतिदुखतैं काढ़ि मुकतिकरतार हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मं ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मं ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मं अत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

हेमाचल की धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि।
भवआताप निवार, दशलक्षन पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जव सत्यशौचसंयमपपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास, दशों दिशा। भव, ॥ चंदनं।
अमल अखण्डितसार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भव. ॥ अक्षतान्।
फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरघलोक लों। भव. ॥ पुष्पम्।
नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंजुगत। भव. ॥ नैवेद्यम्।
वाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी। भव. ॥ दीपम्।
फल की जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भव. ॥ फलम्।
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भव. ॥ अर्घ्यं।

अंग पूजा

सोरठा।

पीड़ें दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे प्रीतमा ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

उत्तमक्षमा गहोरे भाई। इहभव जस परभव सुखदाई॥
गालीसुनि मन खेद नआनो। गुनको औगुन कहैअयानो॥
कहि है अयानो वस्तु छीनै; बांध मार बहुविधि करै।
घरतैं निकारै तन विदारै वैर जो न तहां धरै॥
तैं करम पूरब किये खोटे; सहै क्यों नहिं जीयरा।
अतिक्रोधअगनि बुझाय प्रानी; साम्य जल से सोयरा॥
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान महाविषरूप, करहि नीचगति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा॥२॥
उत्तम मार्दवगुन मनमाना। मान करनको कौन ठिकाना।
वस्यो निगोदमाहितैं आया। दमरी रूंकन भाग विकाया॥
रूकन विकाया भागवशतैं; देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कोड़ों में गया॥
जीतव्य-जोजन-धनगुमान कहा करै जलबुदबुदा।
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी ज्ञानका पावै उदा॥
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट न कीजै कोय; चोरनके पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय; ताके घर वहु सम्पदा॥
उत्तमआर्जवरीति बखानी। रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में हो सो वचन उचरिये। वचन होय सो तनसौं करिये॥
करिये सरल तिहुंजोग अपने; देख विरमल आरसी।
मुख करैं जैसा लखे तैसा; कपटप्रीति अंगारसी॥
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि; करमबंध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै; आपदा नहीं देखता॥
ॐ ह्रीं उत्तमार्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कठिन वचन मत बोल, परनिंदा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी॥
उत्तम सत्यवरत पालीजै, परविश्वासघात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो॥
पेखो निहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये।
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुण लख लीजिये॥
ऊँचे सिंहासन बैठ वसुनृप, धरमका भूपति भया।
वच झूठसेती नरक पहुंचा, स्वर्ग में नारद गया॥

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरि हिरदैं संतोष, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ों संसार में॥
उत्तम शौच सर्व जगजाना, लोभ पापको बापबखाना।
आसापास महादुःखदानी, सुख पावै संतोषी प्रानी॥
प्रानी सदा सुचि शीलजपतप, ज्ञानध्यानप्रभावते।
नित गंगजमुन नित न्हाये, अशुचिदोष सुभावतें॥
ऊपरअमल, मलभरयो भीतर, कौनविध घटशुचि कहै।
बहु ठेह मैली सुगुनथेली शौच गुन साधु लहै॥

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो।
संजमरतन संभाल, विषय चौर बहु फिरत है॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव भवके भाजैं अध तेरे।
स्वर्गनरकपशुगतिमें नाहीं, आलसहरनकरन सुखठाही॥
ठाहीं पृथी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करौं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिस बिना नाहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यौ जगकीचमें ।
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जमसुख बीच में ।।
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप चाहें सुरराय, करमशिखर को वज्र है ।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकति सम ।।
उत्तम तप सबमांहि बखाना । करमशैलको वज्र समाना ।
वस्यो अनादिनिगोदमझारा । भूविकलत्रय पशुतन धारा ।।
धारा मनुषतन महादुर्लभ, सुकुल आव निरोगता ।
श्रीजिनवाणी तत्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ।।
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरैं ।
नरभवअनुपमकनकघरपर, मणिमयी कलसा धरैं ।।
ॐ ह्रीं उत्तमातपोधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दान चार परकार, चार संघको दीजिये ।
धन बिजुली उनहार, नरभवलाहो लीजिये ।।८।।
उत्तमत्याग कह्यो जगसारा, औषध शास्त्र अभय आहार ।
निश्चै रागद्वेष निव वारे ज्ञाता दोनों दान संभारे ।।
दोनों संभारे कूपजलसम; दरब घर में परिनया ।
निजहाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया वह गया ।।
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधकों ।
बिन दान श्रावक साध दोनों लहै नाहीं बोधकों ।।८।।
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी ।
तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ।।९।।
उत्तम आकिंचन गुण जानौ । परिग्रहचिंता दुखही मानो ।
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुःख भालै ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन-नगन ठाड़े, सुर असुर पायनि परैं॥
घरमाहि तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसारसौं।
वहुधन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसों॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलबाड नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाष, करहु सफल नरभव सदा॥१०॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहै वानवरषा बहु सूरे। टिकैं न नैन वान लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचितन में, कामरोगी रति करै।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों चौंचैं भरे॥
संसार में विषबेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरमदशपैंडि चढ़िकैं, शिवमहल में पग धरा॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

—: दोहा :—

दशलक्षन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहो आरती भारती, हम पर होहु सहाय॥१॥

बेसरी छन्द

उत्तमछिमा जहाँ मन होई, अंतरवाहिर शत्रु न कोई।
उत्तममार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै॥२॥
उत्तमआर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुमतिउपजावे।
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै॥३॥
उत्तम शौच लोभपरिहारी, संतोषी गुणरतनभंडारी।
उत्तमसंयम पालै ज्ञाता। नरभव सफल करै ले साता॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तमतप निरवांछित पालै, सो नर कर्मशत्रु को टालै।
उत्तमत्याग करै जो कोई, भोगभूमि सुर-शिव सुख होई ॥५॥
उत्तमआकिंचनव्रत धारै। परमसमाधि दशा बिसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुकतिफल पावै ॥६॥

—: दोहा :—

करै करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि ॥
अजर अमरपद को लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि ॥७॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मांगाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय पूजा

—: दोहा :—

चहुंगतिफनिविषहरनमणि, दुखपावक जलधार।
शिव–सुख–सुधा–सरोवरी, सम्यकत्रयी निहार ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट् !
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्वल जल अति सोहनो।
जनमरोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजूं ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केसर गारि, परिमल महासुरंगमय। जन्म. ॥ चंदनम् ॥
तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदास के। जन्म. ॥ अक्षतान् ॥
महकैं फूल अपार अलि गुंजे ज्यों थुति करैं। जन्म. ॥ पुष्पम् ॥
लाडू बहु विस्तार, चीकन मीष्ट सुगंधयुत। जन्म. ॥ नैवेद्यम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपरतनमय सार, जोत प्रकाश जगत में। जन्म.॥ दीपम्॥
धूप सुवास विथार चंदन अगर कपूरकी। जन्म.॥ धूपम्॥
फल शोभा अधिकार लोंग छुहारे जायफल। जन्म.॥ फलम्॥
आठदरब निरधार उत्तमसों उत्तम लिये। जन्म.॥ अर्घ्यम्॥

सम्यकदरशनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी।
पार उतारन यान, 'द्यानत' पूजों व्रतसहित॥१०॥

दर्शन पूजा

—: दोहा :—

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीवसोपान।
जिहविन ज्ञानचरित अफल, सम्यकदर्श प्रघान॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्रावतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करे।
सम्यकदर्शनसार; आठ अंग पूजों सदा॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करे। सम्य.॥ चंदनम्॥
अछत अनूप विहार, दारिद्र नशै सुख भरे। सम्य.॥ अक्षतान्॥
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्य॥ पुष्पम्॥
नेवज विधि प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै। सम्य.॥ नैवेद्यन्॥
दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्य.॥दीपम्॥
धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हर। सम्य.॥ धूपम्॥
श्रीफलआदि विथार, निहचैं सुरशिवफल करैं। सम्य.॥ फलम्॥
जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फलफूल चरु। सम्य.॥ अर्घम्॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

—: दोहा :—

आप आप निश्चै लखै, तत्वप्रीति व्योहार।
रहितदोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुण सार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यकदरशन रतन गहीजै। जिनवचमें सन्देह न कीजे।
इहभव दिभव चाह दुःखदानी। परभवभोग चहैमत प्रानी ॥
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरूपभु परखिये।
परदोष ढकिये धरम डिगतेको; सुथिर कर हरषिये ॥
चहुंसंघको वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहां फेर न आवना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं ॥

ज्ञानपूजा

—: दोहा :—

पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेयप्रकाशन भान।
मोह-तपन हर चन्द्रमा सोई सम्यकज्ञान ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

नीरसुगंध अपार, त्रिषा हरैं मल क्षय करैं।
सम्यकज्ञान विचार, आठ भेद पूजों सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलचेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्य. ॥ चंदनम् ॥
अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरैं। सम्य. ॥ अक्षतान् ॥
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करैं। सम्य. ॥ पुष्पं ॥
नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करैं। सम्य. ॥ नैवेद्यम् ॥
दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्य. ॥ दीपम् ॥
धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्य. ॥ फलम् ॥
श्रीफल आदि विथार, निश्चौ सुरशिवफल करै। सम्य. ॥ फलम् ॥
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्य. ॥ अर्घम् ॥

जयमाला

दोहाः—आप आप जानै नियत, ग्रंथपठन ब्योहार।
संशय विभ्रम मोह विन, अष्टअंग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यकज्ञान रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अक्षर शुद्ध अरथ पहिचानो, अक्षर अरथ उभय संग जानौं ॥
जानौं सुकालपठन जिनागमें, नाम गुरु न छिपाइये।
तपरीति गहि बहु मौन देकैं, विनयगुन चित्त लाइये ॥
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना।
इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र पूजा

दोहाः—विषयरोग औषध महा, दवकषायजलधार।
तीर्थङ्कर जाकौं धरैं, सम्यकचारितसार ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोरठा

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल क्षय करै।
सम्यक-चारित-सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्यक. ॥ चन्दनं ॥
अक्षत अनूप निहार दारिद्रनाशै सुख भरै। सम्यक. ॥ अक्षतान् ॥
पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्यक. ॥ पुष्पम् ॥
नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै। सम्यक. ॥ नैवेद्यम् ॥
दीप जोति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्यक. ॥ दीपम् ॥
धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्यक. ॥ धूपम् ॥
श्रीफलआदि विथार, निश्चै सुरशिवफल करै। सम्यक. ॥ फलं ॥
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्यक. ॥ अर्घम् ॥

जयमाला

—: दोहा :—

आप आप थिर नियत नय, तपसंयम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुःखहार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीताछन्द

सम्यकचारित्र रतन संभालौ, पाँच पाप तजिकें व्रत पालौ।
पंचसमिति त्रय गुपति, गहीजै नरभव सफल करहु तन छीजै॥
छीजै सदा तनको जतन यह एक संजम पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोदमाहीं, विषयकषायनि टालिये॥
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठों, शिवपुरी कुशलात है ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय जयमाला

दोहाः—सम्यकदरशन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुकति न होय।
अँध पंगु अरू आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ।।१।।

चौपाई

जाणै ध्यान सुथिर बन आवै। ताके करमबंध कट जावैं।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।२।।
ताको चहुंगति के दुःख नाहीं। सो न परै भवसागर मांही।
जनमजरामृत्यु दोष मिटावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।३।।
सोई दशलक्षको साधै। सौ सौलह कारण आराधै।
सो परमातम-पद उपजावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।४।।
सोई शक्रचक्रिपद लेई। तीनलोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ।।५।।
सोई लोका-लोक निहारैं। परमानंद-दशा विसतारैं।
आप तिरैं औरन तिरवावैं। जो सम्यकरतत्रय ध्यावै ।।६।।

दोहाः—एकस्वरूपप्रकास निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार, सब द्यानतको सुखदाय ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनसम्यग्चारित्ररत्नत्रयाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त व्रत पूजा

अडिल्ल छन्द

श्री जिनराज चतुर्दश जग जयकार जी। कर्म नाश भवतार सुशिव सुखकार जी।। संवौषट् ठः ठः सुवषट् यह उच्चरूं। आह्वानन स्थापन मम सन्निधि करूं ।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दशजिनेन्द्रा, अत्र अवतरत, अवतरत, सवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः। अत्र मम सन्निहित भवत भवत वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीता छन्द

गङ्गादि तीरथ को सुजल भर कनकमय भृंगार में।
चउदश जिनेश्वर चरण युग परि धार डारा सार में ।।
श्री वृषभ आदि अनन्त जिन पर्यन्त पूजों ध्याय के।
करि अनंत व्रत तप कर्म हनिके लहों शिवसुख जायके ।।

ॐ ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो जलं।

चन्दन अगर घनसार आदि, सुगन्ध द्रव्य घसाय के।
सहजहिं सुगन्ध जिनेन्द्र के, पद चर्च हों सुखदाय के ।।
श्री वृषभ. ।।२।।

ॐ ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं।

तन्दुल अखण्डित अति सुगन्ध सुमिष्ट लेके कर धरों।
जिनराज तुम चरनन निकट भविपाय पूजौं शुभघरी ।।
श्री वृषभ ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान्।

चम्पा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लायके।
केवड़ा कमल गुलाब गेंदा जुही सुमाल बनायके ।।
श्री वृषभ ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं।

लाडू कलाकन्द लेव घेवर और मोतीचूर ले।
गूँजा सुपेड़ा क्षीर व्यञ्जन थाल भर भरपूर ले ।।
श्री वृषभ ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं।

ले रत्न जड़ित सुआरती तामांहि दीप मंजोय के।
जिनराज तुम पद आरती कर मिथ्यातिमिर सुखोयके ।।
श्री वृषभ ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो दीपम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन अगरतर सिलारस कपूर की करि धूप को।
ता गंध में मधु चकित सो खेऊँ निकट जिन भूप को।।
श्री वृषभ ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनन्तनाथ पर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो धूपम् ।

नारंग केला दाख दाड़िम बीज पूर मंगाय के।
पुनि आम्र और बदास खारक कनक थार भराय के।।
श्री वृषभ ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनंतनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो फलम् ।

जल सुचन्दन अक्षत पूष्प सुगन्ध बहुविध लायके।
नैवेद्य दीप सुधूप फल इनको जु अर्घ बनायके।।
श्री वृषभ ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि अनंतनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो अर्घम् ।

जयमाला

पद्धरी छन्द

जय वृषभनाथ वृष को प्रकाश, भविजन को तारे पाप नाश।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदो जुभर्म ।।१।।
जय संभव जुग सुख के निधान, जगसुखकरता तुम दियो ज्ञान।
जय अभिनन्दन पद धरौं ध्यान, तासों प्रकटे शुभज्ञानभान ।।२।।
जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरे भव उदधिपार।
जय पद्मपद्म पद कमल तोहि, भविजन अतिसेवैं मगनहोहि ।।३।।
जयजय सुपार्श्व तुम नमत पाय, क्षय होत पाप बहु पुण्यथाय।
जय चन्द्रप्रभु शशिकोटि भान, जग का मिथ्यातम हरोजान ।।४।।
जय पुष्पदंत जगमांहि सार, पुष्पकको मारयो अति सुमार।
करि धर्मभाव जग में प्रकास, हरिपापतिमिर दियो मुक्तिवास ।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय शीतल जिन हरभव प्रवीन, हरि पापताप जग सुखीकीन।
श्रेयांस कियो जगको कल्यान, देधर्म दुखित तारे सुजान ॥६॥
जय वासूपूज्य जिन नमों तोहि। सुरनर मुनिपूजत गर्व खोहि।
जय विमल विमल गुणलीन मेय। भविकरे आप सम सुगुणदेय ॥७॥
जय अनतनाथ करि अनंतवीर। हरिघाति कर्मधरि अनंतधीर्य।
उपजायो केवल ज्ञानभान। प्रभु लखे चराचर सब सुजान ॥८॥

—: दोहा :—

यह चतुर्दश जिन जगत में, मंगल करन प्रवीन।
पाप हरन बहु सुखकरन, सेवक सुख मयकीन ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिअनंतनाथपर्यन्त चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निःस्वाहा।

स्वयंभू पाठ भाषा

चौपाई

राजविषैं जुगलनि सुख कियो। राजत्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान। वन्दौं आदिनाथ गुणखान ॥१॥
इन्द्र क्षीरसागरजल लाय। मेरू न्हवाये गाय बजाय।
मदनविनाशक, सुखकरतार। बन्दों अजित अजितपदकार ॥२॥
शुकलध्यानकरि करमविनाशि। घातिअधाति सकल दुःखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार। बन्दों संभव भव दुःखटार ॥३॥
माता पच्छिम रयनमंझार। सुपने सोंलह देखे सार।
भूप पूछि फल मुनि हरषाय। बंदौं अभिनन्दन मनलाय ॥४॥
सब कुवादवादी सरदार। जीते स्यादवाद धुनिधार।
जैनधरमपरकाशक स्वाम। सुभतिदेव पद करहुं प्रमाण ॥५॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय। करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास। नमों पद्मप्रभु सुखकी रास ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्र फनिन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल। बानी सुनिसुनि होंहि खुस्याल।
द्वादशसभा ज्ञानदातार। नमौं सुपारसनाथ निहार ॥७॥
सुगुन छियालिस हैं तुममांहि। दोष अठारह कोऊ नांहि।
मोहमहातमनाशक दीप। नमौं चंद्रप्रभु राख समीप ॥८॥
द्वादशविधि तप करम विनाश। तेरहभेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान। बन्दौं पुहुपदंत मन आन ॥९॥
भविसुखदाय स्वर्गतें आय। दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह। बन्दौं शीतल धर्म सनेह ॥१०॥
समता सुधा कोपविनाश। द्वादशांगवानी परकाश।
चारसंघ आनन्ददातार। नमौं श्रियांस जिनेश्वर सार ॥११॥
रतनत्रयचिरमुकुटविशाल। शोभैं कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनारि भरता भगवान। वासुपूज बन्दौं धर ध्यान ॥१२॥
परम समाधिस्वरूप जिनेश। ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत। बन्दौं विमलनाथ भगवंत ॥१३॥
अन्तर बाहिर परिग्रह डारि। परमदिगम्बरव्रतको धारि।
सर्वजीव-हित-राह दिखाय। नमों-अनन्त वचन-मन-लाय ॥१४॥
सात तत्व पंचास्तिकाय। अरथ नवों छः द्रव्य बहु भाय।
लोक अलोक सकल परकाश। बन्दौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५॥
पंचमचक्रवरति निधिभोग। कामदेव द्वादशम मनोग।
शान्तिकरन सोलमजिनराय। शान्तिनाथ बन्दौं हरखाय ॥१६॥
बहुथुति करै हरख नांहि होय। निंदे दोष गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्म-स्वरूप। बन्दौं कुंथुनाथ शिवभूप ॥१७॥
द्वांदशगण पूजे सुखदाय। थुतिवन्दना करै अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुं न होय। बन्दौं अरजिनवर पद दोय ॥१८॥
परभव रतनत्रय अनुराग। इहभव व्याहसमय वैराग।
बालब्रह्म-पूरन-व्रतधार। बन्दौं मल्लिनाथ जिनसार ॥१९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिन उपदेश स्वयं वैराग। थुति लौकांत करैं पगलाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेंहि। बन्दौं मुनिसुव्रत व्रत देंहि ॥२०॥
श्रावक विद्यावन्त निहार, भक्तिभावसों दियो आहार।
बरसी रतनराशि ततकाल, बन्दौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥२१॥
सब जीवन की बन्दी छोर, रागरोष द्वै बन्धन तोर।
रजमति तजि शिवतियसों मिलैं, नेमिनाथ वंदौं सुखनिले ॥२२॥
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार।
गयो कमठ शठ मुखकर श्याम, नमौं मेरुसमपारसस्वामी ॥२३॥
भवसागरतें जीव अपार, धरमपोत में धरे निहार।
डुबत काढ़त दया विचार, वर्द्धमान बन्दौं बहुबार ॥२४॥
दोहा:— चौबीसौं पद कमल जुग, बन्दौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुने सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥

सरस्वती पूजा

—: दोहा :—

जनम जरा मृत्यु क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छीरोदधिगङ्गा, विमल तरङ्गा, सलिल अभंगा, सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा॥
तीर्थङ्करकी ध्वनि, गणधरने सुनी, अङ्ग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी, पूज्य भई ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करपुर मंगाया चन्दन आया, केशर लाया, रङ्ग भरी ।
शारदपद बन्दौं, मन अभिनन्दौं, पाप निकंदों इहा हरी ।।
तीर्थं. ।। चन्दनं ।।२।।

सुखदासकमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं, चन्दसम ।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ।।
तीर्थं. ।। अक्षतान् ।।३।।

बहुफूल सुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरासं लाय धये ।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोषहरे ।।
तीर्थं. ।। पुष्पं ।।४।।

पकवान बनाया बहुघृतलाया, सब विधभाया, मिष्ट महा ।
पूजूं थुति गाऊँ, प्रीति बढ़ाऊँ, क्षुधा नशाऊँ, हर्ष लहा ।।
तीर्थं. ।। नैवेद्य ।।५।।

करि दीपक जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं, तुमहिंचढ़ै ।
तुमहो परकाशक, भरमविनाशक, हम घटभासक, ज्ञानचढ़ै ।।
तीर्थं. ।। दीपं ।।६।।

शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर, खेवत हैं ।
सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं, सेवत हैं ।।
तीर्थं. ।। धूपं ।।७।।

बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं ।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं ।।
तीर्थं. ।। फलं ।।८।।

नयनन सुखकारी, मृदुगुणधारी, उज्जवलभारी, मौलधरैं ।
शुभगंधसम्हारा, वसननिहारा, तुमतन धारा ज्ञानकरैं ।।
तीर्थं ।। अर्घं ।।९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल चंदन अक्षत फूल चरु चत, दीप धूप अति फल लावैं।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं ॥
तीर्थंङ्कर की. ॥ अर्घम् ॥१०॥

जयमाला

सोरठा

ओंकार धुनिसार, द्वादशाङ्ग वाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करैं जड़ता करैं ॥

वेसरी

पहला आचारांग बखानों। पद अष्टादश सहस प्रमानो। दूजा सूत्रकृतं अभिलाष। पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥१॥ तीजा ठाना अंग सुजान। सहस बियालिस पदसरधानं। चौथा समवायांग निहार। चौंसठ सहस लाख इकधारं ॥२॥ पंचम व्याख्याप्रज्ञपति दरशं। दोय लाख अठ्ठाइस सहसं ॥ छट्ठा ज्ञातृकथा विस्तारं। पाँच लाख छप्पन हज्जारं ॥३॥ सप्तम उपासकाध्ययनंग। सत्तर सहसग्यारलख भगं। अष्टम अंतकृत दस ईसं। सहस अठ्ठाइस लाख तेईसं ॥३॥ नवम अनुत्तरदश सुविशाल। लाख बानवै सहस चवालं ॥ दशम प्रश्नव्याकरण विचारं। लाख तेरानवै सोलह हजारं ॥५॥ ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखं। एक कोड़ि चौरासी लाखं ॥ चार कोडि अरु पन्द्रह लाखं। दो हजार सब पद गुरु-शाखं ॥६॥ द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं। इकसौ आठ कोडि पन वेदं ॥ अडसठ लाख सहस छप्पन हैं। सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ॥७॥ इकसौ बारह कोडि बखानो। लाख तिरासी ऊपर जानों। ठावन सहस पंच अधिकाने। द्वादस अंग सर्व पद माने ॥८॥ कोडि इकावन आठ हि लाखं। सहस चुरासी छहसौ भाखं ॥ साढ़ें इकीस श्लोक बताये। एक-एक पदके ये गाये ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घत्ता

जा बानी के ज्ञानतैं, सूझै लोंक अलोक।
'द्यानत' जगजयवंत हो, सदा देत हों धोक।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जिनपूजा

नाभिराय मरुदेविके नंदन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
कर्मभूमिके आदि पधारे, मध्यम लोक मांहि जिनराज।।
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिलकरके अपने कर पूजें प्रभु पांय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ अष्टक

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म जरा दुःख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय।।
श्रीआदिनाथके चरणकमल पर बलि-बलि जाऊँ मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुःख मेटो, तातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मलियागिरि चन्दन दाह निकंदन, कंचन झारी में भर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, भव आताप तुरन्त मिटि जाय।।
श्री आदि.।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय चंदनं निर्व.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभशालि अखंडित सोरभमंडित, प्रासुक जलसों धोकर ल्याय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पद को तुरन्त उपाय॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति।

कमल केतुकी बेल चमेली, श्रीगुलाब के पुष्प मंगाय।
श्रीजी के चरण चढ़ावो भविजन, कामबाण तुरन्त नसिजाव॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

नेवज लीना तुरन्त रस भीना, श्री जिनवर आगे धरवाय।
थाल भराऊं, क्षुधा नसाऊं, जिन गुण गावत मन हरषाय॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

जगमग जगमग होत दशोदिश, ज्योति रही मन्दिर में छाय।
श्रीजी के सन्मुख करत आरती, मोह तिमिरनासे दुःखदाय॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि.।

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर, चन्दन कूट सुगन्ध मिलाय।
श्रीजी के सम्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुंगति मिटिजाय॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये धूपं निर्वपा.।

श्रीफल और बादाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय।
महामोक्ष फल पावन कारन, ल्याय जढ़ाऊँ प्रभुजी के पाय॥
श्री आदि.॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपा.।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुचि निरमल नीर गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय॥
श्रीआदिनाथके चरण-कमल पर बलिबलि जाऊं मनवचकाय।
हो करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजौ प्रभु पाय॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति।

पंचकल्याणक

—: दोहा :—

सर्वारथ सिद्धि तैं चये, मरुदेवी उर आय।
दोज असित आषाढ़ की, जजूं तिहारे पाय॥

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़कृष्णद्वितीया यां गर्भकल्याणकप्राप्तये श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी नोमी दिना, जनम्यां श्री भगवान।
सुरपति उत्सव अति करा, मैं पूजौं धरिध्यान॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ अ.।

तृणवत् ऋद्धि सब छांडिके, तप धरयो बनजाय।
नौमी चैत्र असेत कौं जजूं तिहारे पाय॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्रीआदिनाथ अ.।

फागुन बदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण एकादश्यां ज्ञान कल्याणकप्राप्ताय श्री क्षादिजिनाय अर्घं।

माघ चतुदर्शी कृष्ण की, मोक्ष गये भगवान।
भवि जीवों को बोधिके, पहुंचे शिवपुर थान॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्यामकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ जयमाला

आदीश्वर महाराज, मैं विनती तुमसे करूं, चारों गति के मांहि, मैं दुःख पायो सो सुनो। अष्ट कर्म मैं हूं इकलो यह दुष्ट महादुःख देत हो, कबहूं इतर निगोद में, मौकूं पटकत करत अचेत हो ॥ म्हारी दीनतनी सुन वीनती ॥१॥ प्रभु कबहुं पटक्यो नरक में, जठे जीव महादुःख पाय हो। निष्ठुर निरदई नारकी, जठे करत परस्पर घात हो। म्हारी.।२। प्रभु नरकतणा दुःख अब कहूं जठे करत परस्पर घात हो, केइयक बांध्यो खम्भस्यो पापी दे मुद्‌गरकी मार हो, कोइयक काटें करोतसों, पापी अंगतणी दोय फाड़हो। म्हारी.।३। प्रभु इहविधि दुःख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरयंच हो। हिरण बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हों। पकड़ कसाई जाल में, पापी काट-काट तन खाय हो। म्हारी.।४। प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, जापै लादियो भार अपार हो। नहीं चाल्यो जब गिर परचो, पापी दे सोटन की मार हो।म्हारी.।५। प्रभु कोइयक पुण्य संयोग सूं मैं तो पायो स्वर्गनिवास हो। देवांगना सम रम रह्यौ, जठे भोगनि को परखास हो। म्हारी.।६। प्रभु संग अप्सरा रम रह्यो, तामे कर-कर अति अनुराग हो। कबहुंक नंदन बनविषैं प्रभु कबहुं बनगृह माहि हो। म्हारी.।७। प्रभु इहि विधि काल गमाइके फिर माल गई मुरझाय हो। देह क्रान्ति सब घट गई, फिर उपज्यौं सोच अपार हो॥ सोच करत तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो। म्हारी.।८। प्रभु गर्भतणा दुःख अब कहूं, जठे सकड़ाई की ठौर हो। हलन चलन नांहि कर-सक्यो, जठे सघन कीच घनघोर हो॥ माता खावे चरपरो फिर लागे तन संताप हो। म्हारी.।९। प्रभु जो जननी तातो भखे, फेर उपजे तन सन्ताप हो। औंधे मुख झूलौ रह्यो फेर निकसन कौन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपाय हो। कठिन-कठिन कर नीसरयो, जैसे निसरैं जंत्री में तार हो। म्हारी.।१०। प्रभु निकसित ही धरत्या पड्यो फिर लागी भूख अपार हो। रोय-रोय बिलख्यो घनो, दुःख वेदन को नाहि पार हो। म्हारी. ।११। प्रभु दुःख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूँ तिहारे पाय हो सेवक अरज करै सुनो मोकूं भवोदधि पार उतार हो ॥ म्हारी दीनतनी सुन वीनती ॥१२॥

दोहा:—श्रीजिन महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हो, कौन करे विस्तार ॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनती ऋषभ जिनेश की, जो पढ़सी मन ल्याय।
सुरगों में संशय नहीं, निश्चै शिवपुर जाय ॥

इत्याशीर्वादः।

अर्घावली

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै, चरु सुदीप सुधुप फलार्घकै।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ संभवनाथ अभिनन्दनाथ सुमतिनाथ पद्मप्रभु सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

छन्द हरिगीता तथा गीता

जय जय जिनिंद गनिंद इंद, नरिंद गुन चिंतन करैं।
तन हरीहर मन सम हरत मन, लखत उट आनंद भरैं ॥
वृष सुपरतिष्ट वरिष्ट इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया।
नित मद के पद वृन्द, अमद थापतु जुतक्रिया ॥१॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टक

तुम पद पूजो मन वच काय, देव सुपारस शिवपुरराय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो।
उज्जवल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भर कर लाय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।। तुम. ।।१।।
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
मलयागिर चन्दन घसिसार, लीनो भवतप भंजनहार।
दयानिधि हो.। तुम पद.। चन्दनं ।।२।।
देवजीर सुखदास अखंड, उज्जवल जल छालित सित मंड।
दयानिधि हो.। तुम पद.। अक्षतान् ।।३।।
प्रासुक सुमन सुगंधित सार, गुंजतअलि मकरध्वज हार।
दयानिधि हो.। तुम पद.। पुष्पम् ।।४।।
क्षुधाहरन नेवज वर लाय, हरों वेदनी तुम्हें चढ़ाय।
दयानिधि हो.। तुम पद.। नैवेद्यम् ।।४।।
ज्वलित दीप भरकरि नवनीत, तुम ढिग धारतु हों जगमीत।
दयानिधि हो.। तुम पद। दीपम् ।।६।।
दशविधि गंध हुताशन माँहि, खेवत क्रूर करम जर जारि।
दयानिधि हो.। तुम पद.। धूपम् ।।७।।
श्रीफल केला आदि अनूप, लै तुम अग्रधरों शिव भूप।
दयानिधि हो.। तुम पद.। फलम् ।।८।।
आठों दरबसजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढ़ाय।
दयानिधि हो। तुम पद.। अर्घ्यं ।।९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक

छन्द द्रुत विलंबित तथा सुन्दरी

शुकल भादव छट्ठ सुजानिये, गरभ मंगल तादिन तानिये।
करत सेव शची रचि मात की, अरघ लेय जजो वसु भांतिकी ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल षष्ठीदिने गर्भ मंगल मंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल जेठ दुवादशि जन्मये, सकल जीव सु आनंद तन्मये।
त्रिदशराज जजैं गिरिराजजी हम जजै पद मंगल साजजी ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां जन्ममंगलप्रमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम के दिन श्रीधर ने धरि तप समस्त प्रमादन को हरि।
नृप महेन्द्र दियो पय भावसों, हम जजै इत श्रीपद चाव सों ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमर फाल्गुन छट्ठ सुहावनों, परम केवल ज्ञान लहावनों।
समवसरन विषैं वृष भाखियो हम जजैं पद आनंद चाखियो ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण षष्ठी दिने ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असित फाल्गुन सप्तमी पावनों सकल कर्म कियों क्षय भावनो।
गिरि समेद थकी शिव जातु हैं, जजतही सब विघ्न विलातुहैं ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तमि दिने मोक्ष मंगल प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहाः—तुंग अंग वसु दोय सौ, शोभा सागर चन्द।
मिथ्यातपहर सुगुन कर, जय सुपास सुख कंद ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छन्द कामिनी मोहन

जयति जिनराज शिवराज हित हेत हो, परम वैराग्य आनंद भरि देत हो। गर्भ के पूर्व षट्मास धनदेव ने, नगर निरमापि वाराणसी सेवने ॥१॥ गगन सों रतन की धार बहु वरषही, कोड़ि त्रै अर्द्ध त्रैवार सब हरषहो, तात के सदन गुन वदन रचना रची, मात की सर्वविधि करत सेवा शची ॥२॥ भयो जब जनम तब इन्द्र आसन चल्यो, होय चक्रित तुरत अवधितें लखि भल्यो। सप्तपग जाय शिरनाय बंदन करी, चलत उमायो तवै मानि धनि-धनि धरी ॥३॥ सात विधि सेन गज वृषभ रथ बाज लै, गंधरव निरतकारी सवै साज लै। मलित मदगंड ऐरावती साजियो, लच्छ-जोजन सुतन वदन सत राजियो। वदन वसुदत प्रतिदंत सरवर भरे, तासुमधि शतक पनवीस कमलिन खरे। कमलिनी मध्य पनवीस फूले कमल, कमल प्रति कमल महँ एकसौ आठ दल ॥४॥ सर्व दल कोड़शतवीस परमान जू, तासु पर अपछरा नचहिं जुतमान जू। तततता तततता विततता ताथई, धृगतता धृगतता धृगतता में लई ॥६॥ धरत पग सनन दनन नन सनन गगन में, नूपुरे झनन नन पगन में। नचत इत्यादि कई भांति सौ मगन में, केई इम इम सुइम इम मृदंगनि धुनै, केइ झल्लरि झनन झंझनन झझनै। केइ संसागृदि सारंगि सुर, केइ वीणा पटल बंसी बाजै मधुर ॥८॥ केइ तननननन तननन तानै पुरैं शुद्धउच्चारि सुर केई पाठैं फुरैं। केइ झुकि झुकि फिरैं चाक्रसी भामिनी, धृगततां धृगततां परम शोभा बनी ॥९॥ केइ छिन निकट छिन दूर दिन धूल लघु, धरत वैक्रियक परभावसों तन सुभगु। केइ करताल करतालतल में धुनै, तत वितत धन मुखरि जात बाजै सुनै ॥१०॥ इन्हें आदिक सकल साज संग धारि कैं, आय पुर तीन फेरी करी प्यार कैं। शचिय तब जाय परसूत थल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोद में, भातु करि नींद लीनों तुम्हें गोद में ॥११॥ आन गिरवाण-नाथहि दियो हाथ में; छत्र अर चमर वर हरि करन माथ में। चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो, जाय गिरिराज पांडुकशिला थापियो ॥१२॥ लेय पंचम उदधि उदक कर-कर सुरनि, सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि सहस अरु आठ शिर कलश ढरि जवै, अघघ घघ घघघघघ भभभ भभ भौतवै ॥१३॥ धघघ घध धघध घध धुनि मधुर होत है, भव्य जनहंस के हरष उद्योत है। भये इमि ह्वोन सकल गुन रंग में, पोंछि शृंगार कीनों शची अङ्ग में ॥१४॥ आनि पितु सदन शिशु सौंपि हरि चल गयो, वालवय तरुन लहि राजसुख भोगियो। भोग तज जोग गहि चार अरि को हने, धारि केवल परम धरम दुइविधि भने ॥१५॥ नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये, ज्ञानदृग शर्म वीरज अनंते लये। जगत राज यह अरज उर धारियो, धरम के नंद को भय उदधि तारियो ॥१६॥

छन्द धत्तानन्द

जय करुणाधारी शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो।
सेवत नित वंदे मन आनंदे, भवभय मेबन काजा हो॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

—: दोहा :—

श्रीसुपार्श्वपद जुगल जो जजै पढ़ै यह पाठ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनन्द ठाठ॥

(इत्याशीर्वादः)

—卐—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चन्द्रप्रभु जिनपूजा

अडिल्ल

शुभ अतिशय चौंतीस प्रातिहारिज अधिकाही,
अनन्त चतुष्टयजुक्त दोष अष्टादस नाहीं।
आह्वानन विधि करूं नाय सिर सुधकरि मनही,
लोक मोह तम हरन दीप अद्भु त ससि जिनही ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता छन्द

हिमशैल निरगत तोय सीतल मधुर स्वर्गंथकी परै।
भरि भृङ्ग जिनवर चरण आगैं धार दे भवमृति हरै ॥
श्रीचन्द्रप्रभु द्युतिचन्द के पद कमल नखशशि लगि रह्यो।
आतंकदाह निवारि मेरी अरज सुनि मैं दुःख सह्यो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्ममृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपा. स्वाहा।

भवतात दाह दहन्त मोकूं एक छिन न बिसारही।
घनसार मलय थकी जिनेश्वर पूजिहूं दुःख टारही ॥श्रीचंद्र॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दन निर्वपा स्वाहा।

संसार उदधि अपार तारन भक्ति प्रभु तुमरी सही।
शुभ सालिपुंज जिनाग्र करिहूं लहूं वसुलगुण वसुमही ॥श्रीचंद्र॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपा स्वाहा।

अति सुभट मार प्रचंड सरतैं हने सुर नर पशु सबै।
शुभ कुसुमसों पद पूजिहूं जिनहरो मनमथ दुख अबै ॥श्रीचंद॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु स्वामिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपा स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह क्षुधा मोकूँ दहे नितहीं, नैक सुख नहीं पावहीं।
चरु मिष्टतें पद पूजिहूं जिन ! क्षुधारोग नसावहीं ।।श्रीचंद्र।।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभु स्वामिने क्षधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपा स्वाहा।

अतिमोहतम ममज्ञान ढाक्यो, स्वपर पद नहीं बेवही।
तुम चरण पूजूँ रतन दीपक, करो तमको छेवही ।।श्रीचंद्र।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु स्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् निर्वपा स्वाहा

शुभ मलय अगर सुगंधसौरभ, थकीअलिबहु आवहीं।
जिन चरन आगे धूप खेये, कर्म वसु जरि जावहीं ।।श्रीचंद्र।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु स्वामिनेऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्षमग अंतरायरोक्यो, मोहि निरदलजानिकैं।
जिन मोक्ष द्यौ तव चरण पूजूँ, फल मनोहर आनिकैं ।।श्रीचंद्र।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुस्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्ध तन्दुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलोघही।
कनक थाल अर्घ बनाय शिवसुख, 'रामचंद्र' लहै सही ।।श्रीचंद्र।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुस्वामिने अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक अर्घ

—: दोहा :—

चैत असित पंचमि चये, बैंजयन्त तें इंद्र।
उदर सुलछना अवतरे, जजूं त्रिविधि गुणवृंद ।।१।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

असित पोह एकादसी, जनमें जुत त्रयज्ञान।
वासव उत्सव करि जजे, जजूं जनम कल्यान ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैद्वादश्यां जन्मकल्याणकसहिताय श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्रपुरी साम्राज्य तजि कृष्ण एकादशी पोह।
धरयो उग्र तप बन विषैं जजूँ नाशहित द्रोह ॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैद्वादश्यां तपः कल्याणसहिताय श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन सप्तमी कृष्णही जाति हने लहि ज्ञान।
अध्यातम बोधे घने जजहुं ज्ञान कल्यान ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-सप्तम्यां ज्ञानकल्याणक-सहिताय श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल फाल्गुन सप्तमी, शेष कर्म हनि मोक्ष।
गये समेदाचल थकी, जजूं गुणन के कोख ॥५॥

ॐ ह्रीं फागुणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणक-मंडिताय श्रीचन्द्रप्रभु स्वामिने अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

—: दोहा :—

वसुजिन वसु विधो हनिके, बसे धरा बसु जाय।
हरो हमारे कर्म बसु, नमूं अङ्ग वसु नाय ॥१॥

चाल अहो जगत गुरू की।

अहो चन्द्र दुति नाथ, ज्ञायक अन्तरजामी। सकल लोक तिरकाल, लखे जुगपद गुणधामी ॥ जे चर अचर अबार, अनागतीत उपायो। लोकालोक निहारि, लखे कछु नांहि छिपायो ॥२॥ भाख्या ज्यों कर मांहि, सिधारथ धारि निहारे। अथवा अंगुरी रेख, लखे कर जत इकबारे। ऐसौ ज्ञान अपार, और कहूं नांहि सुन्यो है। दरसन को परताप, तुहें जिन मांहि भन्यौं है ॥३॥ मैं दुःख पाये घोर, चतुरगति मांहि घनेरे। तुमतें छाने नांहि, कहा भाषुं जिन मेरे ॥ पय शिशु की सब बात, ख्यात पितु जननी जाने। मांग्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विन नहिं देहि, तोय पायधान न खाने ॥४॥ देखो करम अपार, सुभट जड़ चेतन नाहीं। चेतनकूं करि रंक, चोर जिम बांधत जाहीं ॥ सातों अवनिमझारि, नरक दारुण दुःख देहो। कोउ सरनो नाहिं, धरम बिन निश्चै येही ॥५॥ तिरयंचगति दुःख घोर, सहे बिन संजम धारे। भूख प्यास लदिभार, आर दे पीठ मझारे ॥ भारत बधकर धाय, जाल मधि उड़न पखेरू। पकरि कसाई लेय, सरनि नहीं जिहिवेरू ॥६॥ मानुष गति कुल नीच, विकल इन्द्री चखि नाहीं। भूपति आगे दौरि, तुबक कांधे धरि जाहीं ॥ अहि निशि चौकी देय, मेह सिय घाम सहे ही। बिन दरसन दुःख येह घने चिरकाल लहे ही ॥७॥ कोऊ पुन्यवसाय, बाल तपतें सुर थायो। हस्ती घोटक बैल, महिष असवारो धायो ॥ [illegible] आयु जु थाय, तबै माला मुरझानी। आरत्ति तैं तजि प्रान, [illegible] भय पाय अज्ञानी ॥८॥ ऐसे दुःख अपार सहे, थिरता नाहिं पाई। क्रोध मान छल लोभ, थकी दिन-दिन अधिकाई ॥ तुम करुणानिधिलेखि, सरनि आयो ततकरि। दुःख को कर निरवार, अहो जगपति जग–तारी ॥९॥ जगनायक जगदीश, जगोत्तम दृष्टि निहारो। मोकूं दास विचारी, करो वपुतें निरवारो ॥ या बपुसंगति पाय सहे दुःख और न हेती। यह निश्चै करि जानि, लखे तुम वानी सेती ॥१०॥ करम विचारे कौन, भूलि मेरी अधिकाई। अगनि सहै घनघात, लोहकी संगति पाई ॥ ऐसे या वपुसंग सहे, दुःख और न सेति। धनि बानी तुम देव, सुनी गुरू के मुख एती ॥ तुम अनुकंप पसाय, तजूं दुर ध्यान विकारो। वरनादिकतैं भिन्न लखूं चिद्रूप हमारो ॥ जोतिस्वरूपी देव, बसै याही घट माहीं। ढूंढूं कौन सुथान, लखूं तुम ध्यान उपाही ॥१२॥ तेरे ध्यान प्रताप, करम जरि जाय अनंता। 'रामचन्द्र' करि ध्यान, लहे सुख नर गुणवन्ता ॥ इह भव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुक्ख अपार और भव सुर पद पावैं। अनुक्रमतें निरवान, जिसके सुरनर गुण गावैं ॥१३॥

दोहा:—वसु द्रव्यले सुध भावतें, जजूं तिहारे पाय।
देहु देहु शिव शिव मुझ अबै, अहो चन्द्रदुति राय ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुस्वामिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचन्द्रप्रभु पूजा।

उदक चन्दन आदि बोलकर।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तशीतलनाथश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घम् निर्वपा स्वाहा।

अति निर्मल नीर गन्ध गहीरं, तन्दुल पुष्प सु चरु लावैं।
पुनि दीप धूपं चल सु अनुपं अर्ध राम कर गुण गावैं॥
चम्पापुर थानं शुभ कल्यानं, वासुपूज्य जिनराज वरं।
वसु विधकर अरचै भवदुख विरचै परचै सब सुख तास घरं॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चन्दन इत्यादि बोलकर।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथअनन्तनाथधर्मनाथजिनेन्द्रभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

रोडक छन्द

दोहा:— सर्वारथ सुविराम त्याग गजपुर में आये।
विश्वसेन भूपाल तासु के नन्दन कहाये॥
पंचम चक्री भये मदन द्वादस में राजै।
मैं सेवूं तुमचरण तिष्ठिये ज्यों दुख भाजै॥

स्थापना

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टक

कुसुमलता छन्द

पंचम उदधि तनो जल निरमल कंचन कलश भरे हरषाय।
धार देत ही श्रीजिन सन्मुख जन्म जरामृत्यु दूर भगाय॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल को पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥
जलम्

मलियागिरिचन्दन कदली नंदन कुंकुम जल के संग घसाय।
भव आताप विनाशन कारण चरचूं चरण सवैं सुखदाय॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥
चन्दनम्

पुन्य राशि समउज्ज्वल अक्षत शशि मरीचि तसुदेख लजाय।
पुंज किये तुम चरणन आगे अक्षत पद के हेतु बनाय॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥
अक्षतान्

सुर पुनीत अथवा अवनी के कुसुम मनोहर लिए मंगाय।
भेंट धरत तुम चरणन के ढिग ततक्षिन कामबाण नस जाय॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥
पुष्पम्

भाँति-भाँति के सद्य मनोहर कीने मैं पकवान संवार।
भर थारी तुम सन्मुख लायो क्षुधावेदनी रोग निवार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥

नैवेद्यम्

घृत सनेह करपूर लायकर दीपक ताके धरे प्रचार।
जगमग जोत होत मन्दिर में मोह अन्ध को देत सुटार॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल को पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥

दीपम्

देवदारु कृष्णागरु चन्दन तगर कपूर सुगन्ध अपार।
खेऊँ अष्ट करम जारन को धूप धनञ्जय मांहि सुडार॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल को पूजे रोग रोक दुःख दारिद्र जाय॥

धूपम्

नारंगी बादाम सुकेला एला दाडिम फल सहकार।
कंचन थाल मांहि धर लायो अरचत हो पाऊँ शिव नार॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल को पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥

फलम्

जल फलादि वसु द्रव्य संवारे अर्घ चढ़ाऊँ मंगल गाय।
बखत रतन के तुम ही साहिब दीजे शिवपुर राज कराग॥
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर द्वादश मदन तनो पद पाय।
तिनके चरण कमल के पूजे रोग शोक दुःख दारिद्र जाय॥

अर्घम्

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचकल्याणक ।

छन्द उपगीत ।

भादव सप्तमि श्यामा, सर्वारथत्याग नागपुर आये ।
माता ऐरा नामा, मैं पूजूं अर्घं सुभलाये ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय भाद्रपद कृष्ण सप्तमी गर्भ कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्मे तीरथ नाथ, वर जेठ असित चतुर्दशी सोहे ।
हरिगण नावें माथ, मैं पूजूं शान्तिचरण युग जोड़े ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी जन्म कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौदस जेठ अंधयारी, कानन में जाय योग प्रभु लीन्ना ।
नवनिधिरत्न सुछांड़ी मैं बन्दू आत्मसार जिन चीन्हा ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी तप कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष दसे उजियारा, अरिघात ज्ञान भानुजिन पाया ।
प्रातिहार्यं बसुधारा, मैं सेऊँ सुर नर जासु यश गाथा ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पौष शुक्ल दशमी ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्मेदशैलभारी, हन कर अघाति मोक्ष जिन पाई ।
जेठ चतुर्दशिकारी मैं पूजूं सिद्धनाथ सुखदाई ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

छप्पन छन्द।

भये आप जिनदेव जगत में सुख विस्तारे। तारे भव्य अनेक तिनों के संकट टारे॥ टारे आठों कर्म मोक्ष सुख तिनको भारी। भारी विरद निहार लही मैं शणर तिहारी॥ तिहारे चरणन को नमूं दुःख दारिद्र संताप हर। हर सकल कर्म छिन एक में, शान्ति जिनेश्वर शांतिकर॥१॥

—: दोहा :—

सारंग लक्षण चरण में, उन्नत धनु चालीस।
हाटक वर्ण शरीर द्युति, नमूं शांति जग ईश॥२॥

प्रभु आपने सर्व के फन्द तोड़े, गिनाऊँ कछु मैं तिन्हें नाम थोड़े। पड़ो अबुधे बीच श्रीपाल राई, जपो नाम तेरो भये थे सहाई॥३॥ धरो राय ने सेठ को सूलिका पै, जपी आपके नाम की सार जापै। भये थे सहाई तबै देख आये, करी फूल वर्षा सु विष्टर बनाये॥४॥ जबै लाख के धाम वह्नि प्रजारी, भयो पाण्डवों पै महा कष्ट भारी। जबैं नाम तेरे तनी टेर कीनी, करी थी विदुर ने वही राह दीनी॥५॥ हरी द्रोपदी धातु की खंड मांहीं, तुम्हीं व्हां सहाई भला और नाहीं। लियो नाम तेरो भलो शील पालो, बचाई तहां ते सबै दुःख टालो॥६॥ जबै जानकी राम ने जो निकारी, धरे गर्भ को भार उद्यान डारी। रटो नाम तेरो सबै सौख्यदाई, करी दूर पीड़ा सु क्षण ना लगाई॥७॥ व्यसन सात सेवे करें तस्कराई, सुअंजन से तारे घड़ी ना लगाई। सहे अंजना चंदना दुःख जेते, गये भाग सारे जरा नाम लेते॥८॥ घड़े बीच में सास ने नाग डारो, भलो नाम तेरो जु सोमा संभारो। गई काढ़ने को भई फूल माला,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भई है विख्याता सबै दुःख टाला ॥९॥ इन्हें आदि देके कहां लो बखाने, सुनों विरद भारी तिहूंलोक जानें। अजी नाथ मेरी जरा ओर हेरो, बड़ी नाव तेरी हरती बोझ मेरो ॥१०॥ गहो हाथ स्वामी करो बेग पारा, कहूं क्या अबै आपनी मैं पुकारा। सबै ज्ञान के बीच भासी तुह्मारे, करो देर नाहीं मेरे शान्ति प्यारे ॥११॥

धत्ता

श्री शान्ति तुह्मारी कीरत भारी सुर नरनारि गुणमाला।
बख्तावर ध्यावैं रतन सुगावे मम दुख दारिद्र सब टाला ॥१२॥

ॐ ह्रीं शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ इति ॥

अजी एरा नन्दन छवि लखत ही आप अरण।
धरे लज्जा भारी करत सुख सो लाग चरण ॥
करै सेवा सोई लहत सुख सो सार क्षण मैं।
घणे दीना तारे हम चहत हैं बास तिन में ॥

इत्याशीर्वादः।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

छन्द लक्ष्मी तथा अर्घं लक्ष्मीधरा

जैति जै जैति जै जैति जै नेमि को, धर्म अवतार दातार श्यौचैन की। श्री शिवानन्द भौफन्द निकदनं, ध्यावे जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी। पर्मइल्याण के देनदार तुह्मीं, देव हो एवं तातैं करौं ऐनकी। थापि हौ बार त्रै शुद्ध उच्चार कैं, शुद्धता धार भवतार कूं लेन की ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्टक

दाता मोक्ष के श्री नेमिनाथ जिनराय ।। दाता. ।। टेक ।।
निगम नदी कुश प्रासुक लीनों, कंचन भृंग भराय।
मनवचतनतैं धार देत हो, सकल कलंक नशाय ।।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय ।। दाता. ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिचन्दन जुत कदली नन्दन, कुंकुम संग घसाय।
विघनताप नाशन के कारन, जजौं तिहारे पाय ।। दाता. ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुण्य राशि तुम जस सम उज्वल, तन्दुल शुद्ध मंगाय।
अक्षय सौख्य भोगन के कारण, पुंज धरों गुनगाय ।। दाता. ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पुंडरीक तृण द्रुम को आदिक, सुमन सुगंधित लाय।
दर्पक मनमथभजनकारन जजहुं चरन लवलाय ।। दाता. ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरत मंगाय।
क्षुधा वेदनी नाश करन को, जजहुं चरन उमगाय ।। दाता. ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कनकदीप नवनीत पूरकर, उज्वल जोति जगाय।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजहुं चरन हुलसाय ।दाता.।६।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशविधि गंध मंगाय मनोहर गुंजत अलिगन आय ।
दशविध जारनके कारन, खेवों तुम ढिग लाय ।। दाता. ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस बरन रसना मन भावन, पावन फल सु मंगाय ।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुम पाय ।। दाता. ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय ।
अष्टमक्षितिके राज करनकों, जजों अङ्ग वसुनाय ।। दाता. ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक

सित कातिक छट्ठ अमंदा, गरभागम आनन्द कन्दा ।
शचि सेय शिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई ।।१।।

ॐ ह्रीं कातिक शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगल प्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सित सावन छट्ठ अमंदा, जनमे त्रिभुवन के चन्दा ।
पितु समुद महा सुख पायो, हम पूजत विघन नशायो ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां जन्म मंगलप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ।।

तजि राजमती व्रत लीनों, सित सावन छट्ठ प्रवीनो ।
शिवनारि तबै हरिषाई, हम पूजैं पद शिरनाई ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्या तपः कल्याणक प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सित आसिन एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजें अष्ट प्रकारा ॥४॥

ॐ ह्रीं अश्विन प्रतिपदि केवल प्राप्तये श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितषाढ़ अष्टमी चूरे, चारों अघातिया कूरे।
शिव उर्ज्जयंततैं पाई हम पूजैं ध्यान लगाई ॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लाष्टम्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

श्याम छवी तन चाप दश, उन्नत गुण निधिधाम।
शंख चिन्हपद में निरखि, पुनि पुनि करो प्रणाम ॥१॥

पद्धरी छन्द (१३ मात्रा लश्वन्त)

जै जै जै नेमि जिनिंद चंद। पितु समुद देव आनंदकंद।
शिवमात कुमुदमनमोददाय। भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥२॥

जय देव अपूरव मारतंड। तुम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड।
शिवतियमुखजलजविकाशनेश। नहिं रही सृष्टि में तम अशेष ॥३॥

भवि भीत कोक कीनों अशोक। शिव मग दरशायो शर्मशोक।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर। तुम आगम निपुन पुनीत धीर ॥४॥

तुम केवल जोति विराजमान। जै जै जै जै करुणानिधान।
तुम समवसरन में तत्व भेद। दरशायो जातें नशत खेद ॥५॥

तित तुमको हरि आनंदधार। पूजत भगतीजुत बहु प्रकार।
पुनि गद्यपद्य मय सुजस गाय। जै बल अनंत गुनवंत राय ॥६॥

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश। जय बुद्धि विधाता विष्णुवेष।
जय कुमतिमतंगनको मृगेन्द्र। जयमदनध्वांतकोरविजिनेन्द्र ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध। जय ऋद्धिसिद्ध दाता प्रबुद्ध।
जय जगजनमनरंजन महान जय भवसागर महं सुष्ट थान ॥८॥

तुम भगति करैं ते धन्य जीव। ते पावैं दिव शिवपद सदीव।
तुमरो गुन देव विविधप्रकार। गावत नित किन्नर की जुनार ॥९॥

वर भगतमांहि लवलीन होय। नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल। अब मोकों बेगि करो निहाल ॥१०॥

मैं दुख अनन्त वसुकरमजोग। भोगे सदीव नहिं और रोग।
तुमको जग में जान्यों दयाल। हो वीतराग गुनरतनमाल ॥११॥

तातैं शरना अब गही आय। प्रभु करो वेगि मेरी सहाय।
यह विघन करम मम खंडखंड। मनवांछितकारज मंड मंड ॥१२॥

संसार कष्ट चकचूर चूर। सहजानंद मम उर पूर पूर।
निज पर प्रकाशबुधि देह देह। तजिके विलंब सुधि लेह लेह ॥१३॥

हम जांचत हैं यह बार बार। भवसागरतें मों तार तार।
नहिं सह्योजात यह जगत दुःख। तातैं बिनवों हे सुगुनमुक्ख ॥१४॥

घत्तानन्द।

श्रीनेमिकुमारं, जितमदमारं, शीलागारं सुखगारं।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं, धर्माधार ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिनी।

सुख, धन, जस, सिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि।
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि ऋद्धि॥
जजत हरषधारी नेमि को जो अगारी।
अनुक्रम अरिजारी सो वरै मुक्ति नारी ॥१६॥

इत्याशीर्वादः।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5206

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

गीता।

वर सुरग आनत को विहाय सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर चरन तिनके सुर नये॥
नव हाथ उन्नत तन विराजे उरग लच्छन अतिलसैं।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठहु रमक मेरे सब नसैं॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छन्द।

क्षीर सोम के समान अम्बुसार लाइये।
हेमपात्र धारके सु आप को चढ़ाइये॥
पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा।
दीजिये विवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये।
आप चर्न चर्चं मोहताप को हनीजिये॥ पार्श्वनाथ॥ चन्दनं॥

फेन चन्द के समान अक्षतें मंगाइकैं।
पादके समीप सार पुंजकौं रचाइकैं॥ पार्श्वनाथ॥ अक्षतान्॥

केवड़ा गुलाब और केतु की चुनाइये।
धार चर्न के समीप काम की नसाइये॥ पार्श्वनाथ॥ पुष्पं॥

घेवरादि बावरादि मिष्ट सर्पि में सने।
आप चर्न चर्चते क्षुधादि रोग को हने॥ पार्श्वनाथ॥ नैवेद्य॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाय रत्न दीपको सनेह पूरके भरूं ।
वातिका कपूरवारि मोहध्वांत को हरूं ।। पाश्र्वनाथ ।। दीपं ।।
धूप गधं लेयके सु अग्नि संग जारिये ।
तासु धूप के सुसंग अष्ट कर्म वारिये ।। पाश्र्वनाथ ।। धूपं ।।
खारिकादि चिभटादि रत्नथाल में धरूं ।
हर्षधारके जजूं सुमोक्ष सुक्खकूं वरूं ।। पाश्र्वनाथ ।। फलं ।।
नीर गंध अक्षतं सुपुष्प चरू लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतें जजिये ।। पाश्र्वनाथ ।। अर्घं ।।

पंच कल्याणक ।

छन्द ढाल ।

शुभ आनत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।
बैसाख तनी दुति कारी, हम पूजें विघ्न निवारी ।।१।।

ॐ ह्रीं बैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्री पाश्र्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता ।।
श्यामातन अद्भुत राजै, रविकोटिक तेजसु लाजै ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री पाश्र्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लोंच सुकीना, हम पूजें चर्न जजीना ।।२।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपः कल्याणमंडिताय श्री पाश्र्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल ज्ञान उपाई ।
तब वृष-उपदेश जु कीना, भवि जीवनकों सुख दीना ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थीदिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित श्रावण सातैं आई, शिव नारि वरी जिनराई।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तमी दिने मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

कवित्त।

पारसनाथ जिनेन्द्र तने बच पौन भखी जरते सुन पाये।
कियों सरधान लियो पद आन भये पद्मावती शेष कहाये॥

नम प्रताप टरैं संताप सुभव्यन को शिव शर्म दिखाये।
हो अश्वसेन के नन्द भले गुन गावतु हैं तुमरे हरषाये॥

दोहा।

केकीकंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लच्छन उरग निहार पग बन्दूं पारसनाथ॥

छन्द मोतिदाम।

रची नगरी षठ मास अगार। बने चहुं गोपुर शोभ अपार॥
सुकोट तनी रचना भवि देत। कंगूर पं लहकैं बहुकेत॥३॥

बनारस की रचना छबिसार, करी बहुभांति धनेश तैयार।
तहां अश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार॥४॥
तज्यो तुम आनत नाम विमान, भये तिनके वर नन्दन आन।
तबै पुर इन्द्र नियोग जु आय, गिरिन्द करी विधि न्हौन सु जाय॥५॥
पिता घर सौंपि गये निज धाम, कुबेर करै वसु जाम सुकाम।
बढ़ैं जिन दोज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महा-सुखकार।
पिता जब आनकारी अरदास, करो तुम ब्याह वरो मम आस ॥७॥
करूं तब नाहिं कहे जग चंद, किये तुम काय कषाय जु मंद।
चढ़े गजराज कुमारन संग, सुदेखत गंगतनी सु तुरंग ॥८॥
लख्यो इक रंग करै तप घोर, चहुं दिशि अग्नि बलै अति जोर।
कही जिन नाथ अरे सुन भ्रात, करै बहु जीवतनी मत घात ॥९॥
भयो तब कोपि कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव।
लख्यो इह कारन भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषीश्वर आय ॥१०॥
तबै सुर चार प्रकार नियोगि, धरी शिविका निज कंध मनोगि।
कियो बन माँहि निवास जिनन्द, धरे व्रत चारित्र आनन्दकन्द ॥११॥
गहे तह अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महासुख सार भई पणवृष्टि तहां तिहबार ॥१२॥
गये तब कानन माँहि दयाल धर्‌यो तुम योग सबै अघं टाल।
तबै वह धूमसुकेत अजान, भयो कमठाचरको सुर आन ॥१३॥
करै नभगौन लखे तुम धीर, सुपूरब वैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्ष्ण पौन झकोर ॥१४॥
रह्यो दशहूं दिशि में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुंडन के बिन मुंड दिखाय- परै जल मूसलधार अथाह ॥१५॥
तवे पदभावतिकंथ धर्निद, गहे जुग आय तहं जिनचंद।
भग्यो तब रंक सुदेखत हाल लह्यो तब केवलज्ञान विशाल ॥१६॥
दियो उपदेश महाहितकार, सुभव्यनि बोधि समेद पधार।
सुवर्णभद्र सुकूट प्रसिद्ध, वरिशिवनारि लही वसु रिद्ध ॥१७॥
जजूं तुम चर्न दुहू कर जोर, प्रभु लखिये अब ही मम ओर।
कहै 'बख्तावर' 'रत्न' बनाय, जिनेश हमें भव पार लगाय ॥१८॥

घत्ता।

जय पारसदेवं, सुरकृतसेवं, बंदत चर्न सुनागपती।
करुनाके धारी, पर उपकारी, शिवसुखकारीकर्म हती ॥१९॥
ॐ ह्रींपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छंद मदावलिप्त कपोल ।

जो पूज मन लाय भव्य पारसप्रभु नित ही ।
ताके दुख सब जाय भीति व्यापै नहिं कितही ।।
सुख सम्पत्ति अधिकाय पुत्रमित्रादिक सारे ।
अनुक्रमतै शिव लहै 'रत्न' इमि कहैं पुकारे ।।२०।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री वर्द्धमान जिनपूजा

छन्द मत्तगयन्द ।

श्रीमतवीर हरैं, भवपीर भरैं, सुखसीर अनाकुलताई ।
केहरिअंक अरीकरदक, नये हरिपकतिमौति सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधन धारकदेव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हान ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र ! अत्र मम भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

छन्द अष्टपपदी ।

क्षीरोदधिसम शुचिनीर, कंचनभृंग भरों ।
प्रभु ! वेगिहरो भवपीर, यातैं धार करों ।।
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मतिदायक हो ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मलयागिरि चन्दन सार, केसर संग घसा ।
प्रभु भव-आताप निवारि, पूजत हिय हुलसा ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी ।
तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ भजन हेत, पूजो पद थारे ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपासीति स्वाहा ।

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय अष्टकर्मविनायनाय धूपम् अर्घ निर्दपामीति स्वाहा ।

ऋतुफल कलवर्जित लाय, कंचन थार भरा ।
शिवफलहित हे जिनराय, तुम ढ़िग भेंट धरा ।।श्री वीर०।।

ॐ ह्रीं महावीरजिनाय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलफल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥श्री वीर०॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक।

राग टप्पाचाल में।

मोंहि राखो हो सरना, श्री वर्द्धमान जिनरायजी, मोंहिराखो० ॥
गरभ साढ़सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ रहना।
सुर सुरपति तित सेव करें नित, मैं पूजों भवतरना ॥ मो० ॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्लषष्ठ्या गर्भमंगल मण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैतसित तेरस के दिन, कुंडलपुर कनवरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायौ, मैं पूजों भवहरना ॥ मोंहि० ॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसरि असित मनोहर दसमी, ता दिन तप आचरना।
नृप कुमार घर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ॥मोंहि० ॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष कृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकल दशैं बैसाख दिवस अरि, घात चतुक छय करना।
केवललहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना ॥मोंहि०।४।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ल दशम्यां ज्ञान कल्याण प्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुर तें परना।
गनफनिबृन्द जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भय हरना ॥मोहि०॥५॥

ॐ ह्रीं कातिक कृष्णामावश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री महावीर जियेन्द्राय अर्घं निर्वंपामीति स्वाजा।

जयमाला।

छन्द हरिगीता २८ मात्रा।

गनधर अशनिधर चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा॥
दुखहरन आनन्द भरन तारन तरन चरण रसाल है।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भालको जयमाल है॥१॥

घत्तानन्द छन्द।

जय त्रिशला नंदन हरिकृत बंदन, जगदा नंदन चंदवरं।
भवतापनिकंदन, तनकनमदन, रहित सपंदन नवनधरं॥२॥

छन्द त्रोटक।

जय केवल भानुकलासदन, भविकोक विकाशन कंदवनं।
जगजीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूरकरं॥१॥
गर्भादिकमंगलमण्डित हो, दुख दारिद्रको रित खंडित हो।
जगमांहि तुम्हींसतपंडित हो, तुमही भवभावविहंडित हो॥२॥
हरिवंशसरोजन कौं रवि हो, बलवंत महत तुम्हीं कवि हो।
लहिकेवलधर्मप्रकाशकियौ, अबलों सोई मारग राजाति यौ॥३॥
पुनि आप तने गुन मांहि सही, सुर मग्न रहें जितने सबही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसौं मनभावत हैं॥४॥
पुनि नाचत रग उमंग भरी, तुअ भक्तिविषैं पग वेग धरी।
झननं झननं झननं झनन, सुरलेत तहां तनन तननं॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घननं घननं घनघंट बजे। दृमदृं दृमदृं मिरदंग सजे॥
गगनांगन गर्भगतासुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत हैं। सुरताल रसाल जु छाजत हैं॥
सननं सनन सननं नभ में। इक रूप अनेक जु धारि भमें॥७॥
कई नारि सुबीन बजावति हैं। तुमरो जस उज्जवल गावति हैं॥
करताल विषैं करताल धरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं॥८॥
इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी॥
तुमही जगजीवन के पितु हो। तुमही बिनकारनतैं हितु हो॥९॥
तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनद भासन हो॥
तुमही चितचिंतितदायक हो जगमांहि तुम्हीं सब लायक हो।१०।
तुमरे पनमंगलमांहि सही। जिय उत्तम पुन्य लियो सबही॥
हमको तुमरी शरनागत है। तुमरे गुन में मन पागत है॥११॥
प्रभु मो हिय सदा बसिये। तबलौं वसुकर्म नहीं नसिये॥
तबलों तुम ध्यान हिये वरतौ। तबलों श्रुतचिंतन चित रतौ।१२।
तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभ भाव सुगाहतु हो॥
तबलों सतसंगति नित्त रहो। तबलों मम संजम चित्त गहो॥१३॥
जबलों नहिं नाश करों अरिको। शिवनारि वरो समता धरिको॥
यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जांचतु हैं इतनी सुनजी।१४।

घत्तानन्द।

श्रीवीरजिनेशा, नमित सुरेशा, नागनरेशा, भक्ति भरा।
'वृन्दावन' ध्यावैं, विघन नशावे, वांछित पावै शर्म वरा॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

श्री सनमति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत॥१६॥

(इत्याशीर्वादः)

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचपरमेष्ठि जयमाला

मणुय-णाइंद-मूरधरियछत्तत्तया, पंचकल्याणसुक्खावली पत्तया ।
दंसणं णाण झाण अणंतं बलं ते जिणादितु अम्ह वरं मगलं ॥
जेहि झाणग्गिनिवांणहि अइथठ्ठयं, जम्मजरमरणणयत्तयं दट्ठयं ।
जेहि पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महा दितु सिद्धा वरं णाणयं ।
पंचहाचारपंचग्गिसंसाहया, वारसंगाइ सुपुजलहि अवगाहया ।
मोक्खलच्छी महंती महतेसया सूरिणो दितु मोक्खं गया संघया ।
घोरसंसार भीमाडवीकाणणं, तिक्ख वियरालणहपापंचाणणे ।
षठ्ठमग्गाण जीवाण पहदेसया, बंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया ॥
उग्गतवनरणकरणेंहि, झीणं गयां धम्मवरझाण मुक्केक्कझाणंगया ॥
णिब्भरं तवसिरीए समालिंगया, साहुओ ते महामोक्खपहमग्गया ॥
एण थोत्तेण जो पंचगुरु वंदए, गुरुयसंसारघणवेल्लि सो छिंदये ॥
लइइ सो सिद्धसुक्खाइ वरमाणं, कुणइकम्मिधणं पुञ्जपञ्जलाणं ।

आर्य्या ।

अरिहा सिद्धाइरिया, उवज्झाया साहु पंचपरमेष्ठी ।
एयाण णमुक्कारो, भवे भवे मम सुह दितु ॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्सिद्धाचार्योपध्याय सर्वं साधुपंचपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इच्छामि भंते पंचगुरुभत्ति काओसग्गो कओ,
तस्सालोचेओ अठ्ठमहापाडिहेरसजुत्तोण अरहताण ।
अठ्टगुण सपण्णाणं उड्ढलोयम्मि पइठ्ठियाणं सिद्धाणं ।
अठ्ठंपवयणमाउसंजुत्ताण आइरियाण । आयारादिसुदणणोवदेसयाणं उवज्झायाणं । तिरयणगुणपालणरवाणं सव्वसाहूणंणिच्च कालं अच्चेमि पुज्जेमि बदादि णमस्सामि, दुःक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगईगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

यहां पच महागुरु भक्ति कायोत्सर्ग करें ।

(इत्याशीर्वादः)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शान्तिपाठ संस्कृत

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनो हाथों से पुष्प वृष्टि करते रहना चाहिए)।

शान्तिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयम पात्रम्।
अष्टशतार्च्चितलक्षणगात्रं, नौमिजिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ॥१॥
पंचमभीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्र नरेन्द्र गणैश्च।
शान्तिकरंगणशान्तिमभीप्सुः, षोडश तीर्थंकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि, दुंन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥३॥
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं, शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वंगणाय तु यच्छतु शान्ति, मह्यमरंत पठते परमांच ॥४॥

बसन्त तिलका छन्द

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ॥
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपास्।
तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भवन्तु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधननानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञःकरोतु शान्ति भगवान जिनेन्द्रः ॥

(जलधारा ३ बार छोड़नी चाहिए)

स्रग्धरावृत्तम्।

क्षेमं सर्वंप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपाल।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके।
जनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्यप्रदायि ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुष्टुप ।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवल ज्ञान भास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्ति वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥
(चन्दन की धारा ३ बार छोड़ना चाहिए)

प्रथमं करण चरणं द्रव्य नमः ।

अथेष्ट प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपति नुतिः संगतिः सर्वदार्य्यै ।
सद्‌वृत्तानां गुणगणकथा, दोषवादे च मौनम् ॥
सर्वस्यापि प्रियहितवचो, भावना चात्मतत्वे ।
सम्पद्यंतां मम भवभवे, यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

आर्यावृत्तम ।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥१०॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीण च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुःक्खक्खय दितु ॥११॥
दुःक्खखओ कम्मखओ समाहिमरण च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगत-बान्धव तव जिणवर चरणसरणण ॥१२॥

शान्तिपाठ भाषा

शांतिनाथमुख शशि उनहारी । शील गुण व्रत संजम धारी ॥ लखन एकसौ आठ बिराजें निरखत नयन कमलदल लाजै ॥१॥ पंचमचक्रवर्तिपदधारी । सोलम तीर्थंकर सुखकारी । इन्द्रनरेन्द्र पूज्य जिननायक । नमौं शांतिहित शान्ति विधायक ॥२॥ दिव्य विटप पहुपन की बरसा । दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ॥ छत्र चमर भामण्डल भारी । ये तुव प्रतिहार्य मनहारी ॥३॥ शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई । जगतपूज्य पूजौं सिर नाई ॥ परमशांति दीजे हम सबको । पढ़ैं तिन्हैं पुनि चार संघको ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसन्ततिलका ।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।।
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ।।५।।

संपूजकोको प्रतिपालकों को, यतीनको औ यतिनायको को ।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजे सुखी हे जिन शान्ति को दे ।६।

[तीन वार जलधारा छोड़ना चाहिए]

स्त्रग्धरा—होवे सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समयपै तिलभर न रहे व्याधियो का अंदेशा ।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ।।७।।

दोहा—घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवल राज ।
शान्ति करैं ते जगत में, वृषभादिक जिनराज ।।८।।

(चन्दन की धारा तीन वार छोड़नी चहिए)

मन्दाक्रान्ता-- शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगति का ।
सद्व्रतों के सुगुन कहके, दोष ढांकूं सभी का ।
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरन जिनके मोक्ष जोलौं न पाऊं ।।९।।

आर्या—तुवपद मेरे हिय में, ममहिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तबलों लीन रहें प्रभु, जबलों पाया न मुक्तिपद मैंने ।।१०।।

अक्षरपद मात्रा से दूषित जो कुछ कहा गया मुझ से ।
क्षमा करौ प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुखसे ।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर पाऊं तव चरण शरण बलिहारी ।
मरणसमाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।।

परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय अर्घ

(पूजा के अन्त में पढ़ा जाता है)

मैं देव श्री अर्हं पूजूँ, सिद्ध पूजुं त भाव सों। आचार्य श्री उवझाय पुजूं साधु पूजु भाव सों।। अर्हन्त-भाषित वैन पूजु द्वादशांग रचे गुनी पूजु दिगम्बर गुरुचरन शिव हेत सब आशाहनी।। सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दयामय पूजु सदा। जजि भावना षोडष रतनत्रय जाबिना शिव नहीं कदा।। त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय जजूं। पंच-मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पुजित भजूं।। कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पुजूं सदा। चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।। चौबीस श्री जिनराज पुजूं बीस क्षेत्र विदेह के। नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेह के।।

दोहा— जल गन्धाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहुं बहुविध भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं भावपूजा, भाव वन्दना त्रिकालपूजा त्रिकाल वन्दना करवी कराववी-भावना भाववी, श्री अरहन्तजी सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी सर्वसाधुजी. पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोगकरणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुभ्योगेनमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडष कारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दसलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यगर्शन दर्शन सम्यगज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषं, थल विषे आकाश विषे. गुफा विषे. पहाड़ विषे, नगर-नगरी विषे, उर्ध्वलोक पाताल लोक विषे विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिन बिम्बेभ्योनमः। विदेह क्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्योनमः। पाँच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीस चोबीसी के सातसोबीस जिनेभ्यों नमः। नन्दीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिन चत्यालयेभ्यो नमः। पच मेरु सम्बन्धी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेद शिखर, कैलाश, चम्पारपुर, पावापुर, गिरनार, सिद्धवरकूट, ऊन, पावा गिरी, बावनगजा आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। जैन बिद्री मूड़बद्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजगृही, शत्रुन्जय तारंगा चमत्कार महावीरजी, पदमपुरीजी मक्सी पार्श्वनाथ बनेड़िया आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीचारण ऋद्धि-धारी सात परम ऋषिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवतं कृपालवतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंश तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्वुद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे—नाम्न नगरे मासनामुतममें— शुभ—पक्षे — शुभे - तिथौ—वासरे मुनि आर्यिकानां क्षुल्लक क्षुल्लिकानां श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ पद प्राप्तये सर्वेभ्यो सम्पूर्णार्घें निर्वापामिति स्वाहाः

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतोवापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्वप्रसादाज्जिनेश्वर ॥

आव्हानन नैवजानामि क्षमस्व परमेश्वर।
विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥

आहूता ये पुरा देवालब्ध भागायथाक्रमं।
तेमयाऽभ्यर्चिताभक्त्यां सर्वेयांतु यथास्थिति ॥४॥

सर्व मंगल माँगल्यं सर्व कल्याण कारकम्।
प्रधानं सर्वधर्माणाम् जैनं जयतु शासनम ॥५॥

चापाई।

भाषा स्तुति पाठ।

तुम तरनतारन भवनिवारन, भविकमनआन्दनों।
श्रीनाभिनंदन जगतवन्दन, आदिनाथ निरंजनों ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री आदिनाथ अनादि सेऊं, सेय पद पूजा करूं ।
कैलाशगिरिपर रिषभजिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ॥२॥

तुम अजीतनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महावली ।
यह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजे नाथजी ॥३॥

तुम चंद्रवदन सु चन्द्रलक्षन, चन्द्रपुरि परमेश्वरो ।
महासेननन्दन, जगतवन्दन, चन्द्र नाथ जिनेश्वरो ॥४॥

तुम शान्ति पांच कल्याण पूजूँ, शुद्ध मन वच कायजू ।
दुर्भिक्ष चोरीपापनाशें, विघन जाव पलायजू ॥३॥

तुमबालब्रह्म विवेक सागर, भव्यकमलविकाशनो ।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥६॥

जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसैन्या वश करी ।
चारित्र रथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ॥७॥

कन्दर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो ।
अश्वसेननदंन, जगतवन्दन, सकलसंघ मंगल कियो ॥८॥

जिन धरी बालक पणै दीक्षा, कमठमान विदारकै ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद, मैं नमों सिर धारकै ॥९॥

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानिदया करो ।
सिद्धार्थनन्दन, जगतवन्दन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥

छत्र सोहै सुर नर मोहै विनती अब धारिये ।
कर जोड़ि सेवक बीनवै प्रभु, आवागमन निवारिये ॥११॥

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहूं ।
कर जोड़ यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहूं ॥१२॥

जो एकमाहीं एक राजै, एकमाहि अनेकनों ।
इक अनेकनकी नहीं संख्या, नमों सिद्धनिरंजनो ॥१३॥

मैं तुम चरण कमलगुणगाय, बहुविधि भक्ति करूं, मन लाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥१४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरण मिटावो मोय।
बार-बार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं ॥१५॥
नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूं चरणतव सेव ॥१६॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करकैंनवाऊं निजशीश मुझ अपराध क्षमहुं जगदीश।१७।

दोहा— सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान। मो गरीब की वीनती सुन लीजो भगवान ॥१८॥ पूजन करते देवका, आदि मध्य अवसान स्वर्गन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥१९॥ जैसी महिमा तुमविषैं, और धरै नांहि कोय। जो सूरज में ज्योति हैं तारन में नहिं सोय ॥२०॥नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिनमांहि पलाय। ज्यों दिनकर परकाशतैं, अन्धकार विनशाय ॥२१॥ बिनु मतलब बहुते अधम, तार दिये स्वयसेव। ज्यों मेरा कारज सफल कर देवन के देव ॥२२॥ बहुतप्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान। पूजाविधि जानू नहीं शरन राखि भगवान ॥२३॥

आगम अभ्यास चाहूँ सेवा सर्वज्ञ तेरी, सगति सदैव मिलो साधर्म्मी जननकी। संगति के गुणन को वखान यह बान मेटो परो टवदेव पर औगुन के कथन की सवही सोंन सुख दैन मुख वैन भापूं—भावना त्रिकाल राखूं आत्मीक धन की। जौलों कर्म काट खोलूं मोक्ष कै कपाट तोलों एही वात हूजो प्रभु पूजों आस मनकी।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री रक्षाबंधन (सलूना) पूजा

प्रथम श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत मुनि पूजा प्रारंभ्यते

॥ अडिल्ल छन्द ।

श्री अ'कपन आदि सबे मुनि सातसै ।करबिहार हथनापुर आये सातसै। तहां भयो उप सर्ग बड़ो दुख कारजू । शान्तभाव से सहन कियो मुनिराजजू ।।१।।मितिजु पन्द्रस श्रावन शुक्ल प्रमानिये । ध्यानारू सुतिष्ट सर्वमुनि मानिये ॥ हुए उपसर्ग जुदूर धन्य घड़ी आजजी। तिन प्रतिशीश नमाय पूजू' मुनिराजजी ।।२।। तिनकी पूजा रचूं भाव अरु भक्ति से ।दिवस सलूना भयो यही इस युक्ति से। आह्वानन संस्थापन सन्निधि कर्णजी। तिष्ट गुरू इत आय करूं पद अर्चजी।

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशतमुनिश्वर समूह अत्र अवतरत अत्र- तत्र संवौषट अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः । अत्र मम सन्निहतो भवत भवत वषट्।

चाल जोगीरासा ।

शीतल प्राशुकउज्वल जल ले, कंचन झारी लाऊं ।
जन्म जरा मृत नाश करन को, तुमरे चरण चढाऊं ॥
श्री अकंपन गुरु आदि दे, मुनिसप्तसै जानों ।
तिन की पूजा रचूं सुखकारी भव भव के अधहानों ॥

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादिसप्तशत मुनिभ्यो जलं ॥

चन्दनकेशर मिश्रित करके, नीको चन्दन लाऊं ।
भव आताप जु दूर करन को, गुरु के चरण चढ़ाऊं ॥
श्री अ'कपन गुरु० ॥चन्दनं

चन्द्रकिरणसम उज्वल अक्षत, भावभक्ति से लीजे ।
पुंज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख, श्रद्धा करजु धरीजे ॥
श्री अ'कपन गुरु० ॥अक्षतं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बेल चमेली श्री गुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊं ।
काम बाण के नाश करन को श्री गुरु चरन चढ़ाऊं ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥पुष्पं॥

गुंजा फेनी मोदक लाडू, ताजे तुरत बनाऊं ।
श्री गुरुवर के चरन चढ़ाकर, हर्ष हर्ष गुण गाऊं ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥नैवेद्य॥

घृत कपूर की उत्तम जोतिसु, स्वर्ण कटोरी धारूं ।
श्री मुनिवर को पूज करूं मैं मोह कर्म को जारूं ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥दीपं॥

धूप सुगन्ध सुवासित लेकर, धूपायन में खेऊं ।
अष्ट कर्म के नाश करन को, आनन्द मंगल लेऊं ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥धूपं॥

लौंग इलायची श्रीफल पिस्ता, अरु बादाम मंगाऊं ।
सेंव सन्तरा खट्टा मीठा, श्रीगुरु चरन चढ़ाऊं ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥फलं॥

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर, भावभक्ति से लाया ।
हे गुरु हमको भव से तारो, ताते चरन चढ़ाया ॥
श्री अंकपन गुरु० ॥अर्घं॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अंकपन मुनि आदि सब, सप्त सैकड़ा जान ।
तिनकी यह जयमाल सुनि, भाषा करूं बखान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई ।

जीव दया पाले गुरु स्वामी दे धर्मोपदेश बहुनामी ।
छहों काय की रक्षा पाले, तपकर आठ कर्म को टाले ।।२।।
झूंठ न रंचमात्र मुख बोले, जो मन होय बचन सो खोले ।
महा सत्य व्रत के मुनिधारी, तिनके पांयन धोक हमारी ।।३।।
तृण जल भी अदत्त नहिं लेवे, धन कंचन सब तृणसम जोवे ।
महा अचौर्य व्रत के गुरुधारी, तिनके पांयन धोक हमारी ।।४।।
अठारह सहस शील के भेदा, निर्भय धारन हो सु अखेदा ।
शील महाव्रत के मुनिधारी, तिनके पाँयन धोक हमारी ।।५।।
चौबिस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग बनवास कराये ।
परिग्रह त्याग महाव्रतधारी, तिनके पांयन धोक हमारी ।।६।।

पद्धड़ी छन्द ।

सुभावत भावन बारह नित्त, विचारत धर्म सदा सुपवित्त ।
जय ग्यारह अंगसु पढ़त पाठ, संसार भोग को त्याग ठाठ ।।७।।
पंचेन्द्रिय दमन करे महान, मन वचन कायकर शुद्ध ध्यान ।
जय मुनिवर वन्दौ शान्त चित्त, संसार देह भोगन विरत्त ।।८।।
जय मौन धारि मुनि तपकरंत, तब कर्म काठ सबही जरंत ।
जय आनन्द कन्द विधान रूप, जय ध्यावत गुरु आतम सरुप ।९।
संसार कष्ट ताटो मुनीन्द्र, तुम चरन नमें सब देव इन्द्र ।
जय मुनिवर वन्दों कर्मकाट, शिवनारि वरनका करत ठाट ।१०।

मैं अल्पमती अज्ञान बुद्ध, प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्ध ।
रघुवर सुत वंदत शीशनाय, श्री गुरु के गुण गाये बनाय ।।११।।

घत्ता ।

मुनिसब गुण धारं, जग उपकारं कर भव पारं सुखकारं ।
कर कर्म जु नाशा आतम शासा, सुख परकाशा दातारं ।।१२।।
ॐ ह्रीं अंकपनादि सप्तशत मुनिभ्यो महार्घं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—भक्ति भाव मन लायकर, पूजे बांच जोय।
बाबूलाल सु स्वर्ग पद, निश्चय ताको होय ॥
इत्याशीर्वादः।

श्री विष्णुकुमार मुनि की पूजा

अडिल्ल छन्द।

विष्णुकुमार मुनीश्वर को ऋद्धि भई, नाम विक्रिया तास सकल आनन्द ठई। सो मुनि आते हथनापुर के बीच में, मुनि बचाये रक्षा कर बन बीच में ॥१॥ तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो, जिम चिन्तामणि रत्न रंक पायो मनो। सब पुर जै जै कार शब्द उचरत भये, मुनि को देय अहार आप करते भये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टकं

गंगा जल सम उज्जवल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनये नम; जलं निर्वा ॥

मलयागर चन्दन शुभ सार, पूजों श्री गुरुवर निर्धार।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥सप्त सैंकड़ा मुनि ।चन्दनं।
श्वेत अखण्डित अक्षत लाय, पूजो श्री मुनिवर के पाय।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥ सप्त सैंकड़ा ॥अक्षतं॥
कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो काम बाण दुखदाय।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥सप्त सैंकड़ा मुनि ॥पुष्पं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरन चढ़ाय।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु, दयानिधि हो ॥सप्त सैंकड़ा ॥नैवेद्यं॥
घृत कपूर का दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावे खोय।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥ सप्त सैंकड़ा ॥दीपं॥
अगर कपूर सु धूप बनाय, जारे अष्ट करम दुखदाय।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥सप्त सैंकड़ा मुनि ॥धूपं॥
लौंग इलायची श्रीफल सार, पूजों श्री मुनि सुख दातार।
दयानिधि हो, जय जग बन्धु दयानिधि हो ॥ सप्त सैंकड़ा मुनि ॥फलं॥
जल फल आठों सर्व संजोय, श्री मुनिवर पद पूजों दोय।
दयानिधि हो, जय जग बंधु दयानिधि हो ॥सप्त सैंकड़ा मुनि० ॥अर्घं॥

दोहा—श्रावण सुदी सु पूर्णिमा मुनि रक्षा दिन जान।
रक्षक विष्णु कुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ॥१॥

चाल छंद-भुजंग प्रयान ॥

श्री विष्णु देवा, करूं चर्ण सेवा।हरो जग की बाधा सुन टेर देवा॥
सुगजपुर पधारे महा सुखकारी। धरो रुप बामन सु मन में विचारी।२।
गये पास बलि के हुआ वो प्रसन्ना।जो मांगो सो पावो दियो ये वचन्ना॥
मुनि तीन डग मांगि धरनी सु नापै दईताने तत्क्षणसुनहि ढील थापै।३।
करी विक्रिया मुनि सु काया बढ़ाई। जगह सारीलेली सु डग दो के मांहीं
धरी तीसरी डग सु बलीपीठ माहीं। सु मांगी क्षमा तब बली ने बनाई ४
जल की सु वृष्टि करी सुखकारी। सरब अग्नि क्षण में भई भस्म सारी॥
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से। भई जै जै कारा सरब नगर ही से॥५॥

चौपाई—फिर राजा के हुक्म प्रमान। रक्षा बंधन बन्धी सुजान॥
मुनिवर घर घर कियो बिहार। श्रावक जन तिन दियो अहार ॥६॥
जा घर मुनि नहीं आये कोय। निज दरवाजे चित्र सुलोय॥
स्थापन कर तिन पूज रचाय। फिर सब भोजन कियो बनाय ॥७॥
तब से नाम सलूना सार। जैन धर्म का है त्यौहार॥
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव। जासो धर्म सु बढ़े अतीव ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म पदारथ जग में सार। धर्म बिना झूंठो संसार॥
सावन सुदी पूनम जब होय। यह पूजन दो कीजे लोय॥९॥
सब भाइन को दो समझाय। रक्षा बन्धन कथा सुनाय॥
पर्व प्रवर्तक विष्णुकुमार। तिनकी भक्ति हृदय में धार॥१०॥
सब के रक्षा बन्धन बांध। जैन मुनिन की रक्षा साध॥
इस विधि से मानों त्यौहार। नाम सलूना जगमें सार॥११॥
या पूजन कवि नहिं रचो कोय। जो रची देख पाई न सोय॥
तातैं या पूजन रची सार। पढ़ियो सुभव्य भूले सम्हार॥१२॥
श्री विष्णु गुरू के चरण दोय। तनुज वर्मे नित मन संजोय॥
"नगले सरूप" वासी जु दास। मुनि चरन सेव की करत आस॥१३॥

घत्ता।

मुनि दीन दयाला, सब दुख टाला, आनन्द माला सुखकारी॥
रघु सुत नित बन्दे, आनन्द कन्दे, सुक्ख करंदे हितकारी।१४।।महार्घं।

दोहा।

विष्णुकुमार मुनि चरन, जो पूजे धर प्रीति।
रघु सुत पावे स्वर्गपद, लहे पुण्य नवनीत॥

इत्याशीर्वाद।

सुगन्ध दशमी पूजा

अडिल्ल।

सुगन्ध दशमी को पर्व भादवा शुक्ल में।सब इन्द्रादिक देव आ मधि लोक में॥ जिन अकृतिम धाम धूप खेवें तहां। हम भी पूजत आव्हानन करिके यहां॥

ॐ ह्रीं सुगन्ध दशमी व्रतोद्योपनाय श्री जिन विम्ब समूह अत्रावर अवतर संवौषट् आव्हान। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ;ठ; स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

पद्मादिक द्रह को जल उत्तम मणि भृंगार भरावे।
जनम जरा मृत्यु नाशन कारण जल धारा जु ढरावे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर्व सुगन्ध दशै दिन जिनवर पूजै अति हरषाई ।
सुगन्ध देह तीर्थंकर पद की पावै शिव सुखदाई ।।१।।
ॐ ह्रीं सुगन्ध दशमी व्रतोद्योपनाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलंनिर्व स्वाहा
मलयागिर चन्दन संग केसरि केलीनन्द घसावै ।
ता द्रव्य ते पूजत जिनवर को भव आताप मिटावै ।।पर्व० चन्दनं।।
चन्द्र किरण सम अक्षत उज्जवल कमल शालि के ल्यावे ।
जिन चरणाग्रज पुंज करत ही तुरत अक्षय पद पावे ।।पर्व०पुष्पं।।
पारिजात संतान कल्प तरु पुष्प सुगंध घनेरे ।
कमल जिनेश्वर पद पूजै चहोणै बाण मनोज उड़े रे ।।पर्व अक्षतं।।
खाजा फैनी मोदक अग्नि कपूर हो घृत बनावै ।
मिष्ट रसत करि पूरित जिन पद पूजत क्षुधाधि न शावै ।पर्व०नैवेद्य।
दीप रतन मय कपूंरादिक सूर्य किरण से ल्यावै ।
जिन चरणन पर वारै आंथिक ज्ञान अनन्त हो जावै ।।पर्व०दीपं।।
अगर तगर मलियागिर चंदन धूप दशांग संगावै ।
स्वर्ण धूपायन संग हुतासन खेये बिधिजर जावै ।।पर्व०धूपं।।
फल सुलाय के आम्र सुगं सूना शा नेत्र सुहावे ।
जिनवर पद पूजत हो फल देते मुकातिवधूवर थापै ।।पर्व० फलं।।
कमल सुगन्धित नीर सु चन्दन अक्षत पुष्प मिलावै।
चरु अरु दीप धूप फल सेती सुवरण थाल भरावै ।।
नृत्य गान वादित्र बजावै अर्घं जिनेन्द्र चढ़ाई ।
सुगन्ध देह तीर्थंकर पद की पावै शिव सुखदाई ।।
ॐ ह्रीं सुगन्ध दशै व्रतोपद्योनाय अर्घ ।।९।।

जयमाला

दोहा ।

सर्व सुगन्ध देश तनो, अति महिमा को धाम ।
ताकी जयमाला कहूं, मुक्ति मिलने को काम ।।

ढारते गुरु की में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाद्रव सुदि दशमी विषै इन्द्रादिक सब देव।
सुर सुरांगना सैन्य जुत आवत है स्वमेव।। सुगन्धि दशम जिन ।।१।।
खेय करि धूप सुगन्ध मुकति कमल मुख भ्रमर होय।।
सूंघत निशदिन गन्ध सुगन्ध दशम जिन पूजस्यां ।।२।।
ताकी विधि वर्णनत करूं करके जिन सेव।
भक्ति थकी वाचाल है सुगंधदशम जिन पूजस्यां ।।३।।
चतुरनिकाय सुराधिया प्रति इन्द्र जु सहेत।
ध्वज वादित्र जु अग्रकरि जिनगुन गान करेह।। सुगन्ध दशमजिन।४।
मध्यलोक में आय कैं अकृतिम जिनगेह।
तहाँ आय पूजन करै जिन गुन गान करेह।। सुगंध दशम जिन ।।५।।
विविध सुगन्ध मिलाय कै खेवत धूप सुगन्ध।
तांकी धूम्र जुअलि सबै नभ जु करै सनबन्ध।। सुगन्ध दशम जिन।६।
धूप धूम मिस करम की मानू धूप उडंत।
दशों दिशा में भरमत फिरै ठौरन कहूं दीसंत।।सुगन्ध दशम जिन ।।७।।
जय जय रव देवन तनै गुन गुन गान करेत।
शब्दातम पृथ्वी भई मानू हरषत अंग।।सुगन्ध दशम जिन ।।८।।
नरनारी अति हरखतें उत्सव अति ही कराहि। सुगन्ध दशम जिन।९।
वस्त्राभूषण धारितन धूप सुगन्ध बनाय।
जिन मन्दिर में धूप घट खेवत धूप जु जाय।।सुगन्ध दशम जिन ।।१०।।
सुगंध दशै का पर्व की वर्णन की बुधि नांहि।
चन्द सरुप जु कहत है कोलो कहूं बनाय।।
यहाँ हूं नगर मझारि सब अर ग्रामादिक मांहि।।सुगन्ध दशम जिन।११।
जो यों दशमी व्रत करे मनवच तन कर शुद्ध।
सकल कर्म को नाश करि होय केवली बुद्ध।। सुगन्ध दशम जिन ।।१२।।
ॐ ह्रीं सुगंध दशै व्रोद्योपनाय पूर्णार्घं ।।

इति श्री सुगन्ध दशमी पूजा सम्पूर्णम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगन्ध दशमी व्रत कथा

चौपाई

पंच परम गुरु वन्दन करुं, ताकरि सम अघ-बंधन हरुं
सार सुगन्ध दशमी व्रत कथा; भाषत हूं भाषी जिन यथा
गुरु अरु शारद के परसादि, कहस्यूं भेद सारपूजादि ।
जे भवि इह व्रत करिहैं सही. तिन स्वर्गादिक पदवी लही
सन्मति जिन गौतम मुनिराय, तिनके क्रम नमि श्रेणिकराय
करत भयो इन थुति सुखकार, विश्वकारण जगबंधु करार
भव्य-कमल प्रतिबोधन सूर्य, मुक्तिपंथ निरबाहन धूर्य ।
श्रुतवारिधि को पोत समान, इन्द्रादिक तुम सेवक जान
व्रत सुगन्ध दशमी इह सार, कीन्हूं किान किमि विधिविस्तार
अरु याको फल कैसो होय, मोकूं उपदेशो मुनि सोय ५

यह सुनकर गौतम गणधर कहने लगे—

मगध देश के तुम भूपार, सुनि व्रतकी सुकथा सुखकार।
इह प्रश्न तुम उत्तम करयौ, मैं भाषूं जो जिन उच्चरयौ
सुनत मात्र व्रतको विस्तार, पाप अनन्त हरैं तत्कार ।
जे कर्ता क्रमतैं शिव जाय. और कहा कहिये अधिकाय

दोहा---जम्बू द्वीप विषैं इहां, भारत क्षेत्र सुजान।
तहां देश काशी लसै, पुर वाराणसि मान ॥ ८ ॥

चौपाई

पद्मनाभ जाको भूपार, कीन्हू वसु मदको परिहार ।
सप्त व्यसन तजि गुण उपजाय, ऐसे राज करैं सुखदाय ९
श्रीयमति जाकै वर नारि, निज पतिकूं अति ही सुखकारि
एक समय वनक्रीडा हेत, जावत थो निज भूमि समेत १०
पुर नजीकसे ही जब गयो, निज मन मांहीं आनंद लयो
तवही एक मुनीश्वर सार, मासवास करिकै अवतार ११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असन काजि आते मुनि जोय राणीसों भाखै नृप सोय
तुम जावो द्यो भोजन सार, कीजो मुनिकी भक्ति अपार
इम सुनि राणी मन इम धरयो, भोगांगे मुनि अनन्तरकरयो
दुखकारी पापी मुनि आय मेरो सुख इनि दियो गमाय
मन ही में दुःखी अति घणी, आज्ञा मान चली पतितणी
जाय कियो भोजन ततकाल, आगै और सुनो भूपाल
मुनि भूपतिके ही घर गयो, राणी असन महा निंदयो।
करी तुम्बरीको जु अहार, दियो मुनिश्वरकुं दुखकार १५
भोजन करि चाले मुनिराय, मारगमांहि गहल अति आय
परयो भूमिपर तव मुनिराज, कियो श्रावकां देखि इलाज
बैठे एक जिनालय सार, तहाँ ले गये करि उपचार।
फेरि सकल ऐसे वच चयो, रानी खोटो भोजन दयो
तातैं मुनि महा दुख पाय, सून्य हो गये हैं अधिकाय।
धिक २ है ताको अति घणों, दुष्ट स्वभाव अधिक जातणों
तवही वनसौं आयो राय, सुनी बात राजा दुख पाय।
राणीसों खोटे बच कहे, बस्त्राभरण खोसि कर लये १९
काढ़ि दई घर बाहरी जबै दुखी भइ अतिही सो तबै।
कुष्टातुर १ व्है आरत कियो, प्राण छोरि महिषी तन लीयो
याकी सात भैंस मरि गई, तव ये अति दुर्बलता लई।
एक समै कर्दम मधि जाय, मरण भई नाना दुख पाय २१
तहां थकी देख्यौ मुनि कोय, सींग हिलाये क्रोधित होय
तबही पंक विषै गडि गई, प्राण छोरि खरणी उपजई।
भई पांगुरो पिछले पांय, तब ही एक मुनिश्वर आय।
पूरब वेर सु मन में ठयो, तहां कलुष परिणाम जु भयो
दोहा—कियो क्रोध मन मैं घणों, दई दुलत्ती जाय।

प्राण छोरि निज पापतैं, लई सूकरी काय ॥२४॥
श्वानादिक के दुखतैं, भूखी प्यास होय।
मरि चंडालीके सुता, उपजी निंदित सोय ॥२५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई

गरभि आवतां विनस्यौ तात, उपजतही तन त्याग्यौ मात
पालै सुजन मरै पुनि सोय, अरु आवत तनमें बदबोय २६
इक जोजनलों आवै बास, ताहि थकी आवै नहिं श्वास।
पंच अभख फल खावो करें, ऐसी बिधि बनमें सो फिरै
तहां एक मुनि शिश जुत देख, रागद्वेष तजि शुद्ध विशेख
ता वनमें आये गुण भरे, लघु मुनि गुरुसौं परसन १ करे २८
वास निंद्य आवे अधिकाय, स्वासी कारण मोहि बताय
मुनि भाषैं सुनि मन वचकाय, जो प्राणी ऋषिको दुखदाय
ते नाना दुख पावैं सही, मुनिनिंदा सम अब को नहीं।
कन्या इनि पूरव भव माहिं, मुनि दुखायो थो अधिकाहि
ता करि तिरजग२ में दुखपाय, भई वधिक कै कन्या आय
सो इह देखि फिरतु है वाल, मुनि संशय भागो तत्काल
दोहा—पुनि गुरुसे इम शिष कहै अब किम इनि अघ जाय
मुनि बोले जिन धर्मको धारे पाप हराय ॥ ३२

चौपाई

गुरु शिष वचन सुता इम सुण्यो, उपशमभाव सुखार मुण्यो
पंच अभख फल त्यागे जबै, अशन मिलै लागो शुभ तबै
शुद्ध भावसों छोरे प्रान, नगर उज्जैनी श्रेणिक जान।
तहां दरिद्री द्विज इक रहैं, पाप उदै करि वहु दुख लहै
ता द्विजकै यह पुत्री भई पिता मात जमके वसि थई।
तब यह दुखवती अति होय, पाप समान न बैरी कोय
कष्ट कष्ट करि वृद्ध जु भई, एक समै सो वनमैं गई
तहां सुदर्शन थे मुनिराय, जिनससे न राजा तिहि जाय।
धर्म सुन्यो भुपति सुखकार, इह पुनि गई तहां तिहिवार
अधिक लोक कन्याकूं जोय, पाप थकी ऐसो पद होय ३७
दोहा—जिस समे इह कन्याका, घासपुञ्ज सिरि धारि

१ प्रश्न २ तिर्यंच

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खडी मुनी वच सुनत थी, पुनि निज भार उतारि

चौपाई

मुनि मुखतें सुनि कन्या भाव, पूरवभव सुमरण तव थाय
याद करी पिछली वेदना, मूर्छा खाय परी दुख घना ३९
तव राजा उपचार कराय, चेत करी पुनि पूछि बुलाय।
पुत्री तू ऐसे क्यूं भई, सुनि कन्या तव यूं वरनई ।४०।
पूरवभव विरतन्त वताय, मैं जु दुखायो थो मुनिराय।
करी तुम्बिकाको जु आहार, दियो मुनोकूं अति दुखकार
सौ अघ अबलौं भी मुझ दहै, इम सुनि नृप मुनिवरसों कहै
इह किमी विधी सुख पावै अवै, जव मुनिराज बखान्यु तवै
जब सुगन्ध दशमी व्रत धरै, तब कन्या अघ संचय हरै ।
कैसो विधि याकी मुनिराय, तव ऋषि भादव मास बताय
सुदि पंचमि दिनसों आचरै, यथाशक्ति नवमी लौं करै।
दशमी दिन कीजे उपवास, ता करि होय अधिक अघ नास
शुक्ल पक्ष दशमी दिन सार, दश पूजा करि वसु परकार
दश स्तोत्र पढिये मन लाय, दश मुखका घटसार वनाय
तामें पावक१ उत्तम धरै, धूप दसांग खेद अघ हरै ।
सप्तधानको साथ्यो सार, करि तापरि दश दीपक धार
ऐसे पूज करै मन लाय, सुखकारी जिनराज बताय ।
तातैं इहविधि पूजा कहै, सो भवि जीव भवोदधि तरै ४७

दोहा:—जिनकी पूज समान फल, हूवो न ह्वसी कोय ।
स्वर्गादिक पदको करै, पुनि देहै शिव जोय ॥ ४८

चौपाई

दश संवत्सरलौं जो करै, ताहीके जिन गुण अवतरै ।
करै बहुरि उद्यापन राय, सुनहु सुविधि तुम मन वच काय

१ अग्नि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाशांति अभिषेक करेय, जिन आगे वर पुहुप धरेय।
जो उपकरन धरै जिन थालि, ताको भेद सुनो चित आनि
दश जु वर्णको चन्दवो लाय, सों जिनबिंब उपरि तनवाय
और पताका दश ध्वज सार, बाजै घन्टानाद अपार ५१
मुक्तमालकी शोभा करै, चामर युगल अनूपम धरै।
और सुनो आगै मनलाय, प्रभु को भक्ति किये सुख थाय
धूपदहन दस आरति आनि, सिंहपीठ आदिक पहिचान।
इत्यादिक उपकरण मंगाय, भक्ति भावजुत भव्य चढाय
दान आहार आदि चउ देय, ताकरि भवि अधिको फललेय
आर्याको अम्बर दीजिये, कुंटीश्रुत निजरै कीजिये ५४
यथा योग्य मुनिको दे दान, इत्यादिक उद्यापन गान।
जो न इसी ह्वै शक्ति लगार, थौरो ही कीजे हित धार ५५
जो न सर्वथा घरमैं होय, तो दूणों कीजे व्रत सोय।
पणि१ व्रत तो करिये मनलाय, जो सुरमोक्ष सुथानक दाय

दोहा—साक पिंड़के दानतैं, रतन वृष्टि है राय।
इहां द्रव्य लागौ कहां, भावनिकौ अधिकाय ५७
तातैं शक्ति उपायकैं, स्वातम हित मन लाय।
व्रत कीजे जिनवर कह्यो, इम सुन करि तब राय

चौपाई

द्विज कन्याकौं भूप बुलाय, व्रत सुगन्ध दशमी बतलाय
राय सहाय थकी व्रत करयो, पूरव पाप बन्ध तब हरयो
उद्यापन करि मन वच काय, और सुनो आगे मन लाय
एक कनकपुर जानो सार नाम कनकप्रभ तसु भूपार ६०
नारि कनकमाला अभिराम, राज सेठ इक जिनदत्त नाम
जाकै जिनदत्ता वर नार, तिहिं ताके लीन्हूं अवतार ६१
तिलकमती नामा गुण भरी, रूप सुगन्ध महासुन्दरी।
क्युं इक पाप उदै पुनि आय, प्राण तजै ताकि तब माय

परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जननी बिन दुख पावे बाल, और सुनो श्रेणिक भूपाल
जिनदत्त जोवनमय थो जबं, अपनो ब्याह विचारयो तबं
इक गोर्धनपुर नगर सुजान, वृजभदत्त बाणिज तिह थान
ताकै एक सुता शुभ भई, वन्धुमती तसु संज्ञा दई ६४
तासो कीन्हुं सेठ विवाह, बाजा बाजे अधिक उछाह।
परणि सुयरि लायो सुखकार, आगे और सुनो विस्तार

दोहा—भोग शर्म१ करती भई, कन्या इक लखि १ाय।
नाम धरयो तब मोदतें, तेजोमती सुभाय ॥ ६६

छन्द

प्यारी माताकूं लागे, नहिं तिलकमति सों रागे।
नाना बिधि करि दुखद्यावे, ताके मन सो नहि भावे ६८
तव तात सुतासु निहारी, कन्या यह दुखित विचारी।
जब दासी आधिक नारी, तिनसों इम सेठ उचारी ६८
याकी सेवा सुखकारी, कीजौ युक्ति विचारी।
ऐसे सुन ते सुख पावे, तव नीकी भांति खिलावैं ॥६९

चौपाई

एक समे कंचनप्रभ राय, दीपांतर जिनदत्त पठाय।
नारीसों तब भाखै जाय, हमकूं राजा दीपि खिनाय ७०
तातैं एक सुनो तुम बात, इह पढो रणाज्यो हरषात।
अष्टगुणायुत जो वर होय. इनको करि दीज्यो अव लोय
इम कहि दीपि चल्यो तत्काल, और सुनो श्रेणिक भूपाल
आवै करन सगाई कोय, तिलकमति जाचै तब सोय ७२
बन्धुमती भाखै जब आय यामैं अवगुण हैं अधिकाय।
मम पुत्री गुणवन्ती घणी, रूप आदि शुभ लक्षण भणी
तातै मो कन्या शुभ जान, वर नक्षत्र ब्याहौ तुम आन
ते इनकी माने नहिं बात, तिलकमती जाची शुभ गात

सुख।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कही फेरि यों ही तव सही, मनमैं कपटाई धरि लई।
व्याह समै कन्या ममसार, करदेस्यु व्याहित जिहिवार
करी सगाई आनन्द आये व्याह समै आये तब सोय।
बन्धुमती फेरों की वार, तिलकमती बहु भांति सिंगार
घडी दोय रजनी जब गई, तिलकमतीको निज संति लई।
जबहिं मसाण भूमिमधि जाय, पुत्रि कूं तिहि थान बैठाय
तहां दीप जाये शुभ चार पूरै तेल उद्योत अपार।
चौगिरदा दीपक चउ धरे, मध्य तिलकमति थिरता करै
तिलकमती सो भाषी जहां, तो भरता आवेगो इहां।
ताहि विवाहि आवजे१ वाल, इमि कहिकर चाली तत्काल
आधी रात गये तब राय, महल थके२ लखि वितर्क३ लाय
देवसुता यक्षनि वा कोय, ना जानै वा किन्नरि होय॥
के इह नारि इहां को आय, ऐसी विधि चितवन करि राय
हस्त खडग ले चाल्यो तहां, तिलकमती तिष्ठे थी जहां

दोहा—जाय पूछियो रायजी, तू गुण है इहि थान।
तिलकमती सुनकै तबै, ऐसी भांति बखान ॥८२॥
भूपति मेरे तात कूं, रतन सुदीपि पठाय।
मोकूं मम माता इहां थापि गई अब आय ॥८३॥

चौपाई

भाषि गई इनि थानकि कोय आवेगो ते भरता सोय।
यातैं तुम आये अब धीर मैं नारी तुम नाथ गहीर ८४
सुणि राजा तव व्याहसु करयो रेनि रह्यो तैंठे४ सुख धर्यो
राजा प्रात समै अवलोय५ निज मंदिर आविनको होय
तिलकमती ऐसे तब कही अब तो तुम मेरे पति सही।
सर्पजेमि६ डसि जावो कहां सुणि इमि भाये भूपति तहां
निशिकी निशि आस्यूं तुझि पास, तू तो महाशर्म की रासि

१आना २से ३कल्पना ४वहां ५देख ६सर्प के समान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिलकमती पूछै शिरनाय कहा नाम तुम मोहि बताय ।।
राजा गोप कह्यो निज नाम इम सुनि तिय पायो सुखधाम
यूं कहिं अपने थानिक गयो तब ही परभात सुभयो ।।
वन्धुमती कहि कपट विचार तिलकमती है अति दुखकार
व्याह समे उठिगों किनि थान जन जनसों पूछे दुख मान
दोहा—देखो है सा पापिनी गई कहां दुखदाय ।
ढूंढ़त ढूढ़त कन्या को लखी मसाणां जाय ।।९०।।
जाय कहै दुखदा सुता इनि थानको क्रिम आय।
भूत प्रेत लागो कहां ऐसी विधि बतलाय ।।९१।।

चौपाई

तिलकमती भाषै उमगाय तैं भाख्यो कोन्हूं तो माय ।
वन्धुमती कहि त्वंग१ पुकार देखो हे यह ! असत उचार
जानूं कहां कबै इह आय व्याहसमैं दुख दिया अघायर
तेजोमती विवाहित करी साहा३ की समये नहिं टरी ।।
खिजि भाषी उठि चल घर अबै ले आई अपने थल तबै ।
तिलकमती सो पूछै मात तैं कैसो वर पायौं रात ।।९४।।
सुता कह्यो बरियो हम गोप रैनि परणि परभात अलोप ६
वन्धुमती भाषी तत्काल रो ! ते वर पायो गोपाल
दोहा— घर इक गेहि समीप थो सों दीन्हूं दुख पाय ।
नित प्रति रजनी के विषै आवै तहां सूरराय ।।९५।।
दीप निमित नहीं तेल दे तबहि अंधेरे मांहि ।
राजा तेठे ही रहै सुख पावे अधिकाहिं ।।९७।।
केते इक दिन ऐसे गये वन्धुमती तब यूं बच चये ।
तोहि गुवाल्यातें कहि जाय दोय बुहारी तो दे लाय ।।९८
तिलकमती आरे४ करि लई राति भये निज पतिपै गई ।
करि क्रीडा मुख वचन उचार नाथ सुनो अरदास हमार ।।

१ जोर से २ बहुत ३ लग्न ४ स्वीकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुगल बुहारी मेरी मात जांची है तुम पै हरषात।
यातैं ल्यादीज्यो तुम देव अंगी१ कीन्हूं भूप स्वमेव ॥
सभा जाय बैठ्यो तब राय स्वर्णकार तब सार बुलाय।
इम सुनि तबहि सुकंचनकार२ लागि गये घड़ने अधिकार
स्वर्ण सींक सबके मन मोहि रत्नजड़ित सूंट्यो अति सोहि
षोडष भूषण और मंगाय डाबा में धरि चाल्यो राय।
एक वेष उत्तम करि लयो रजनी समय नारि ढिग गयो ॥
रतन जडितकी कोर जु सार शोभे सारी के अधिकार।
भूषण वेश दये नृप जाय दोय बुहारी लखत सुहाय
नारि चरण नृप के तब धोय सिर केशनि लैं पूंछि बहोय
क्रीडा करि वहुते सुख पाय प्रात भये नृप तो घरि जाय ॥
तिलकमती अति हर्षित होय जाय दई सुबुहारी दोय ॥
और दिखाये भूषण वेश माई देख्यो सार जु वेश १०५
मन में दुखित वचन इम चयो तेरो भरता तस्कर भयो।
राजा के भूषण अरु वेश लाय दये तोकूं जु अशेष १०६
हम सबकूं दुखद्यासी४ सोय इम कहि खोसिलये दुखि होय
इह विलगीर भई अधिकाय रात बिबैं पतिसों कहि जाय
भूषण वेश खोसिलते माय निज काठे५ राखे दुख पाय।
राय तबै सम्बोधी जोय मन चिंता राखो मति कोय ॥
ओर घणेही देहूं लाय इम सुनि तिलकमती सुख पाय।
दीपथकी जिनदत्त जु आय बन्धुमती पतिसों बतलाय ॥
तिलकमती के अवगुण घणां कहां कहूं पति अब वा तणां।
व्याह समं उठिगो किहि थानि परण्यो चोर तहां सुखठानि
सो तस्कर भूपति के जाय भूषण वेश चोर करि लाय।
याकूं वह दीन्हे तब आय खोसि रहे मोढिग मैं लाय ॥
सेठ देखि कम्पित मनमांहि तबहि राज सुथानिक जाहि।
धरे जाय राज के पांय सब विरतन्त कह्यो सुनि राय।

---

१ स्वीकार, २ सुनार, ३ दुख, ४ देगा, ५ पास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कह्यो वेश भूषण तौ आय परिह्नर चोर आनिह्यो लाय।
इहविधि सेठ सुनि नृप बात चाल्यो निज घरि कंपित गात
साह सुतासौं इह वच कह्यो तें हमकूं इह कुण दुख दियो।
पति को जाणें है अकि नांहि कह्यो दीप बिन जाणू कांहि
कबहूं दीपक हेति सनेह मोकूं मम माता नहिं देह।
सेठ कहै किसही विधि जान तिलकमती जब बहुरि बखान
इक विधि करि मैं जानूं तात सो वह सुनो हमारी बात।
जब पति आते मो ढिग जहां तब उनि पद धोवत थी तहां
धोवत चरण पिछानूं सही और इलाज इहां अब नहीं
सेठ कही भूपति सौं जाय कन्या तो इस भांति बताय॥
ऐसे सुनि तब बोल्यौ भूप, इहतौ विधि तुम जांणि अनूप
तस्कर ठीक करनने काज, तुम घर आवेंगे हम आज
सेठ तबै प्रसन्न अति भयो, जाय तयारी करतो भयो।
तब राजा परिवार मिलाय, तबही सेठ तणै घर जाय
प्रजाजु सकल इकट्ठी भई, तिलकमती बुलबायसु लई।
नेत्र मूंदि पद धोबत जाय, यह भी नहीं नहीं पति आय
जब नृप के चरणाम्बूज धोय, कहत भई एही पति होय
राजा हंसि इम कहतो भयो, इनि हमकूं तस्कर कर दियो
तिलकमती पुनि ऐसे कही, नृप हो वा अनि हो यह सही
लोक हंसन लागै जिहि बार, भूप मनै कीन्हें ततकार
वृथा हास्य लोका मति करो, मैं ही पति निश्चय मनधरों
लोक कहै कैसे इह वणी, आदि अन्त लों भूपति भणी
तबही लोक सकल इम कह्यो, कन्या धन्य भूप पति लह्यो
पूरब इनि ब्रत कीन्हूं सार, ताको फल इय फल्यौ अबार
भोजन-अन्तर कर उत्साह, सेठ कियो सब देखत ब्याह
ताकूं पटराणी नृप करी, भूपति मन में साता धरी
एक समय पतियुत सो नारि, गई सुजिन के गेह मझारी
वीतराग मुख देख्यो सार, पुण्य उपायो सख दातार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सभाविषै श्रुतिसागर मुनि, बैठे ज्ञान निधी बहु गुनी।
तिनकौं बंदि परम सुख पाय, पूछे मुनिवरसौं इमि राय
पूरवभव मेरी पटनारि, कहा सुव्रत किन्हूं विधि धारि।
जाकर रूपवती इह भई, अधिक सम्पदा शुभकरि लई
योगी पूरव सब विरतन्त, मुनि निन्दादिक सबं कहन्त।
अस सुगन्धदशमी व्रत सार, सो इन कीन्हों सुखदातार।
ताकौ फल इह जानो सही, एसे मुनि श्रुतिसागर कही
तबही आवो एक पुमांन१, जिन श्रुत गुरुवन्दे तजि मान
मुनिकूं नमस्कार करि सार, फेरि तहां नृप देवि निहार
तिलकमती कै पांवै परयो, अरु ऐसे सुवचन उच्चरयो

दोहा—स्वामिनि कै परसाद तैं, मै पायो फल सार
व्रत सुगन्ध दशमी कीयो, पूरव विधाधार १३३
ता व्रत के परभावतैं, देव भयो मैं जाय।
तुम मेरी सार्धमिणी, जुग क्रम देखनि आय १३४
इमि कहि वस्त्राभरण तैं, पूज करो मन लाय
अरु सुर पुनि ऐसे कही, तुम मोरी वर माय १३५

चौपाई

श्रुतिकर सुर निज थानिक गयो, लोकां इह लखि निश्चय०यो
धन्य सुगंध दशमी व्रत सार, ताकौ फल है अनन्त अपार
तब सब ही जन यह व्रत धरयो, अपनो कम महावलहरयो
तिलकमती कंचनप्रभराय, मुनिकों नमि अपने घरि जाय
देती पात्रनिकों शुभ दान, करती जिनकी पूज अमान२।
पालै दर्शन शील सुभाय, अरु उपवास करै मन लाय १३८
पतिव्रत गुणकी पालन हारि, पुनि सुगन्ध दशमी व्रत धारि
अन्त समाधि थकी तजि प्रान, जाय लयो ईशान सुथान
सागर दोय जहां थिति लई, शुभतैं भयो सुरोत्तम सही
नारिलिंग निंद्य छेदियो, चय शिव पासी जिन वर्णयो

१ पुरुष २ मान रहित होकर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहां देव सेवा बहु करे, निरमल चमर तहां शिर ढरै।
और विभव अधिकौ जिहि जान, पूरवपून्य भयो तित आन
इह लखि गन्ध दशैं व्रत सार, की जैं हो! भवि शर्म विचार
जे भवि नरनारी व्रत करें, ते संसार-समुद्रसों तिरैं।
दोहा—श्रुतसागर ब्रह्मचारि को, ले पूरव अनुसार।
भाषा सार बनाय के, सुखित खुस्याल अपार १४३

॥ इति सुगन्ध दशमी व्रत कथा समाप्त ॥

जाप्य मन्त्र

व्रत करने वालों को व्रत के दिन जाप्य करना चाहिये। जाप्य-मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां चतुर्विशतिजिनेभ्यो नमः।

नोट—इस व्रत के करने वाले श्रावक का कर्तव्य है कि इस दिन मन वचन कर्म की शुद्धि पूर्वक भक्ति भावना से शीतलनाथ भगवान का पूजन करें।

卐 श्री रवि व्रत पूजा 卐

स्थापना अडिल्ल छन्द

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही। करहु भव्य जन सर्व, सु मन दे के सही॥ पूजों पार्श्व जिनेन्द्र, त्रियोग लगाय के। मिटे सकल सन्ताप, मिले निधि आयके॥ मतिसागर इक सेठ, सुग्रन्थन में कहो। उनही ने यह पूजा, कर आनन्द लहो॥ तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये। सुख सम्पत्ति सन्तान, अतुल निधि लीजिये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

प्रणमों पार्श्वजिनेश को, हाथ जोड़ शिर नाय ।
परभव सुख के कारने, पूजा करों बनाय ॥
रवीवार व्रत के दिना, ये ही पूजा ठान ।
या फल सम्पत्ति को लहे, निश्चय लीजे मान ॥

ओं ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् परिपुष्पांजलि क्षिपेत्

उज्ज्वल जल भरके मैं लायो, रतन कटोरन मांही ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत, जन्म जरा मिट जाहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों, रविव्रत के दिन मांई ।
सुख संपति बहु होय तुरत ही, आनन्द मंगल दाई ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वजिनेन्द्राय जलम् ।

मलयागिरि केशर अतिसुन्दर, कुमकुम रङ्ग बनाई ।
धार देत जिनवरनन आगे, भव आताप नसाई ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय चन्दनम् ।

मोतीसम अति उज्ज्वल तन्दुल, लाके नीर पखारो ।
अक्षयपदके हेतु भावसों, श्रीजिनवर ढिग धारो ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षतान्

बेला अरु मजकुन्द चमेली, पारिजात के ल्याओ ।
चुन-चुनश्रीजिनअग्र चढ़ाऊँ मनवांछितफलपावो ॥ पारस०

ओं ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पुष्पम्

बावर फैनी गोजा आदिक, घृत में लेत पकाई ।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढ़ाई ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यम् ।

मणिमय दीप रतनमय लेकर, जगमग जोति जलाई ।
जिनके आगे आरति करके, मोहितिमिर नशजाई ॥ पारस०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय दीपम् ।

चूरन कर मलयागिरि चंदन, धूप दशाङ्ग बनाई ।
पावकतट में खेय भाव सों, कर्मनाश हो जाई ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय धूपम् ।

श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, भाँति भाँति के लावो ।
श्रीजिनचरनचढ़ाय हरषकर, तांतेशिवफलपावो ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय फलम् ।

जल गन्धादिक अष्ट द्रव्य ले, अर्घ्य बनायो भाई ।
नाचत गावत भक्तिभावसों, कंचन थाल भराई ॥ पारस०

ओं ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यंम् ।

गीतिका छन्द

मन वचन काय विशुद्ध करके पार्श्वनाथ सुपूजिये ।
जल आदि अर्घ्य बनाय भविजन, भक्तिवन्त सुहूजिये ॥
पूज्य पारसनाथ जिनवर, सकल सुखदातार जी ।
जे करत हैं नर नारि पूजा, लहत सौख्य अपार जी ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् ।

अथ जयमाल दोहा

जे जग में विख्यात है, पारसनाथ महान ।
तिन गुण की जयमालिका, भाषा करो बखान ॥

जय जय प्रणमों श्री पार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव ।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहुं लोक विषें आनन्द कीन ॥

जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भये सुखचैन ऐन ।
जय वामादेवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ॥
जय जिनने प्रभु का शरण लीन, भविजन के त्राता भये ऐन ।
जय तीन लोक आनन्द देन, तिनकी सहाय प्रभु जी सुकीन ॥

जय नाग नागिनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तजि के शरीर स्वर्ग सुजाय, धरणेन्द्र पद्मावति भये आय ॥
जय अञ्जन चोर अधर्मि जान, चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान।
जय मृत्यु भये स्वर्गं सु जाय, ऋद्धी अनेक उनने सु पाय ॥
जय मतिसागर इक सेठ जान, जिन रविव्रत पूजा करी ठान।
तिनके सुत ते परदेश मांहि, जिन अशुभकर्म काटे सुतांहि ॥
जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सबसे भई भेंट।
जिन जिन ने प्रभुका शरणलीन, तिन रिद्धि सिद्धि पाई नवीन ॥
यह रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सौख्य अनन्तान्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावति हुये सहाय, प्रभु भक्त जान तत्काल आय ॥
पूजा विधान इहि विधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय।
जो भक्तिभाव जयमाल गाय, सो ही सुख सम्पत्ति अतुल पाय ॥
बाजत मृदङ्ग बीनादि सार, गावत नाचत नाना - प्रकार।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर जु लेव।
ता थेइ थेइ थेइ पग घरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय।
ते लहहिं सौख्य शिवपुर सुजात, जे करहिं निरत इहि भांति भांत।

रविव्रत पूजा पार्श्व की, करे भविक जन कोय।
सुख-संपति इह भव लहे, अन्त सुरगपद होय ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम्।

रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र, पूज भवि मन धरे।
भव भव के आताप, सकल छिन में टरें ॥
होय नरेन्द्र सुरेन्द्र, आदि पदवी लहें।
सुख-सम्पति सन्तान, अटल लक्ष्मी गहे ॥
फेर सर्व - विधि पाय, भक्ति प्रभु अनुसरे।
नानाविध सुख भोग, बहुरि शिवतिय वरे ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री भाषा रविव्रत कथा

काशी देश की वाराणसी नगरी में महीपाल राजा था। जो अतिशय प्रजावत्सल और न्यायी था। उसी नगर में मतिसागर सेठ था, सेठानी का नाम था गुणसुन्दरी। पुण्योदय से इस सेठ के अतिशय गुणवान और सुन्दर सात पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें छह का तो विवाह हो गया, केवल लघु पुत्र गुणधर कुंवारे थे।

एक दिन गुणधर क्रीड़ा करते हुए एक वन में घूम रहे थे। तब उन्हें गुणसागर मुनिराज के दर्शन हुए। ये मुनिराज वन्दनार्थ आये भव्यों को धर्मोपदेश दे रहे थे। उपदेश के पश्चात् वहाँ आई हुई सेठानी गुणसुन्दरी बोली कि हे स्वामिन्! मुझे कोई व्रत दीजिये। तब महाराज ने उसे बारह व्रत तथा सम्यकत्व का स्वरूप समझाया और कहा कि तू रविव्रत का पालन करें।

गुणसुन्दरी व्रत को लेकर घर आई और समस्त समाचार घर के लोगों को सुनाया। घर वालों ने सुनकर इस व्रत की बहुत निन्दा की। इसलिये उसी समय से उनके घर में दरिद्रता का प्रारम्भ हो गया। कुछ समय बाद इतनी हालत बिगड़ी कि सभी लोग भूखों मरने लगे।

तब सेठ के सातों पुत्र सलाह कर परदेश को निकले। और अयोध्या में जिनदत्त सेठ के यहां नौकरी करने लगे। इनके माता पिता वाराणसी में ही रहे।

कुछ समय बाद वाराणसी में अवधिज्ञानी मुनि पधारे। तब दरिद्रता से दुखी सेठ और सेठानी वन्दना को गये तथा दीनतापूर्वक पूछने लगे कि हे स्वामिन्! हम लोग इस प्रकार निर्धन क्यों हो गये? तब मुनिराज ने कहा कि तुम्हारे कुटुम्बियों ने रविव्रत की निन्दा की है इसलिये तुम्हारी यह दशा हुई है। यदि तुम पुनः श्रद्धासहित इस व्रत को करो तो तुम्हारी नष्ट हुई विभूति फिर तुम्हें प्राप्त होगी तब सेठ और सेठानी ने पुनः रवि व्रत पालन कर विशाल वैभव पाया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इनके सातों पुत्र अयोध्या में घोर परिश्रम से उदरपूर्ति करते थे। एक दिन छोटा पुत्र गुधर घास काटने जङ्गल गया। वह गट्ठा वांधकर उतावली में घर चला आया किन्तु दांतला (हंसिया) वहीं भूल आया। घर आकर उसने भावज से भोजन माँगा। उसने कहा कि हंसिया भूल आये हैं। इसलिये शीघ्र जाकर ले आओ तब भोजन करना। अन्यथा हंसिया कोई ले जायगा। यह सुनकर गुणधर तत्काल वन में गया तो देखा कि हंसिया पर वड़ा भारी सर्प लिपटा है।

यह हाल देखकर गुणधर वहुत दुखी हुए कि हंसिया मिले बिना भोजन मिलना कठिन है और हंसिया मिलना अशक्य है तब गुणधर ने तन्मयता से वीतराग भगवान का स्तवन किया। जिसके प्रभाव से धरणेन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ। उसने अवधिज्ञान से जाना कि अमुक स्थान में पार्श्वनाथ भगवान के भक्त को कष्ट हो रहा है। तव उसने करुणाभाव से पद्मावतीदेवी को आज्ञा दी कि तुम जाकर जिनभक्त गुणधर का दुःख दूर करो।

पद्मावती तुरन्त वहाँ पहुंची और गुणधर से बोली कि हे पुत्र भय मत करो तथा यह सोने का हंसिया, रत्नहार और रत्नमय पार्श्वनाथ की प्रतिमा भी ले जाओ। भक्तिपूर्वक इसकी पूजा करना, इससे तुम्हारा सारा दुख दूर हो जायगा।

देवों द्वारा दिया द्रव्य और जिनविम्ब लेकर गुणधर घर आये वह द्रव्य और प्रतिमा देखकर गुणधर के भाइयों के मन में तरह तरह की आशंकाएँ हुई। पर गुणधर से उनकी प्राप्ति का हाल जानकर उन्होंने उसकी वहुत प्रशंसा की।

कुछ दिन वाद इनका सारा दुख दूर हो गया और ये बहुत धनी हो गये। इन्होंने वड़ा भारी जिनमन्दिर बनवाया, प्रतिष्ठा कराई, वहुत दान दिया और विशाल प्रभावना की।

यह सव समाचार राजा ने सुना तव उसने अपनी कन्या गूणधर को व्याह दी और वहुत-सा दहेज दिया। जिससे वे मालामाल हो सुख से रहने लगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ समय बाद सातों पुत्र अपने पिता के घर आये तथा इन्हें माला-माल देखकर व्रत का प्रभाव जानकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने द्वारा की गई व्रत की निंदा पर पश्चाताप किया।

सभी नानाप्रकार के भोगोपभोग भोगकर यथायोग्य स्वर्ग आदि को प्राप्त हुए और गुणधर तीसरे भव में मोक्ष गये। इस प्रकार इस व्रत के प्रभाव से मतिसागर सेठ की दरिद्रता दूर हुई।

विधि—प्रत्येक रविवार को उपवास करना या बिना नमक का भोजन कर एकासन करना। पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक पूजन करना। आरम्भ का त्यागकर ब्रह्मचर्य से रहना। "ओं ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नमः" मन्त्र का जाप देना। इस प्रकार नौ वर्ष व्रत कर उद्यापन करना।

प्रथम—नौ उपवास करना। दूसरे वर्ष—नमक विना भात और पानी पीना। तीसरे वर्ष—नमक विना दाल भात खाना। चौथे वर्ष—विना नमक की खिपड़ी खाना। पाँचवें वर्ष—विना नमक की रोटी खाना। छठवें वर्ष—विना नमक का दही भात खाना। सातवें और आठवें वर्ष—नमक के विना मूंग की दाल और रोटी खाना और नवमें वर्ष—एक बार का परोसा हुआ बिना नमक का भोजन खाना।

नव वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करना। मन्दिर जी में नौ उपकरण देना। नौ शास्त्र या पुस्तकें बाँटना। नौ श्रावकों या व्रतियों को भोजन कराना। नौ घरों में नव फल बाँटना। मंडल विधान करना।

सामयिक पाठ भाषा

१—प्रतिक्रमण कर्म

काल अनन्त भ्रम्यो जग में सहिये दुखः भारी। जन्ममरण नित कीये पाप को व्है अधिकारी। कोटि भवांतर माही मिलन दुर्भभ सामायिक धन्य आज मैं भयो योग मिलीयो सुख दायक ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे सर्वज्ञ जिनेश किये जे पाप जु मैं अब। ते सब मनवचकाय योगकी गुप्ति बिना लभ। आय समीप हजूरमांही मैं खड़ो खड़ो सब। दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुःख देहि जब ॥२॥ क्रोध मान मद लोभ मोह मायावशि प्राणी। दुःख सहित जे किये दया तिनकी नहि आनी। बिना प्रयोजन एकेन्द्रिय विति चउ पंचेद्रिय। आप प्रसादहि मिटैं दोष जो लग्यो मोहि जिय ॥३॥ आपस में इक ठोर थापि करि जे दुख दीने, पेलि दिये पगतलें दाबि करि प्राण हरीने। आप जगत के जीव जिते तिन सबके नायक। अरज करुं मैं सुनो दोष मेटो दुखदायक॥४॥ अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय। तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि। यह पडिकोणो कियो आदि षटकर्ममांहि विधि ॥५॥

2—प्रत्य ख्यानकर्म।

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे। तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे। सो सब झुठो होउ जगपति के परसादै। जा प्रसादतैं मिले सर्व सुख दुःख न लाधै ॥६॥ मैं पापी निर्लज्ज दयाकरि हीन महाशठ। किये पाप अति घोर पापमति होय चित्त दुठ। निंदूं हूँ मैं बार-बार निज जियकों गरहूँ। सब विधि धर्म उपाय पाय फिर पापहिं करहुं ॥७॥ दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावक कुल भारी। सतसंगति संयोग धर्म जिन श्रद्धाधारी। जिन वचनामृत धार समावर्तै जिनवाणी। तोहूजीव संधारे धिक धिक धिक हम जानी ॥८॥ इन्द्रिय लम्पट होय खोय निज ज्ञान जमा सब। अज्ञानी जिमि करे तिसी विधि हिंसक ह्वै अब। गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले, ते सब दोष किये निंदूं अब मनवच तोले ॥९॥ आलोचनविधिथकी दोष लागे जु घनेरे। ते सब दोष विनाश होय तुम तैं जिन मेरे। बारबार इस भांति मोह मद दोष कुटिलता। ईर्यादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ॥१०॥

३—सामायिककर्म

सब जीवन में मेरे समता भाव जग्यौ है, सब जिय मोसम समता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राखो भाव लग्यो है। आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छांड़ि करिहूं सामायिक, संयम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायक ॥११॥ पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति, पंचहि थावरमांहि तथा त्रस जीव बसैं जित। वे इंद्रिय तिय चउ पंचेंद्रियमांहि जीव सब, तिनतैं क्षमा कराऊं मुझपर क्षमा करो अब ॥१२॥ इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु त्रण, महल मसान समान, शत्रु अरु मित्रही सम गण। जामन मरण समान जानि हम समता कीनी, सामायिकका काल जिते यह भाव नवीनी ॥१३॥ मेरो है इक आतम तामें ममतजु कीनो। और सबै मम मित्र जानि समतारस भीनो। मात-पिता सुत बन्धु मित्र तिय आदि सबै यह, मोतैं न्यारे जानि जथारथरूप करयो गह ॥१४॥ मैं अनादि जगजालमांहि फँसि रूप न जाण्यो, एकेंद्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो। ते सब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी, भवभवको अपराध छिमा कीज्यो करि मरजी ॥१५॥

४—स्तवनकर्म

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जित जीति कर्मको, संभव भवदुखहरण करण अभिनंद शर्मक। सुमति सुमति दातार तार भवसिंधु पार कर, पद्मप्रभु पद्माभ भानि भवभीति प्रीतिधर ॥१६॥ श्रीसुपार्श्व कृतपास नाश भव जास शुद्ध कर, श्रीचंद्रप्रभु चंद्रकांतिसम देह कांतिधर। पुष्पदंत दमि दोषकोष भविपोष रोषहर, शीतल शीतलकरण हरण भवताप दोषहर ॥१७॥ श्रेयरूप जिन श्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन, वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभय हन। विमल विमलमतिदेन अंतगत है अनंत जिन, धर्म शर्म शिवतरण शांति जिन शांतिविधायिन ॥१८॥ कुंथु कुंथु मुख जीवपाल अरनाथ जाल हर, मल्लि मल्लि मोहमल्ल मारण प्रचारधर। मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुरसंघहि नमि जिन, नेमिनाथ जिन नेमि धर्मस्थमांहि ज्ञानधन ॥ १९ ॥ पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति, वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भव दुःख कर्मकृत। या विधि मैं जिन संघरूप चउवीस संख्यधर, स्तवूं नमूं हूं बार बार वंदौ शिवसुखकर ॥२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५—वन्दनामर्म

वन्दूं मैं जिनवीर धीर महावीर सु सनमति, वर्द्धमान अतिवीर बंदिहूं मनवचतनकृत। त्रिशला तनुज महेश धीश विद्यापति वन्दूं वन्दौ नित प्रति कनकरूप तनु पाप निकन्दू ॥२१॥ सिद्धारथ नृपनंद द्वंद दुख दोष मिटावन, दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन। कुंडलपुर करि जन्म जगत जिय आनंदकारन, वर्ष बहत्तरि आयु पाय सब ही दुख टारन ॥२२॥ सप्तहस्त तनु तुंग भगकृत जन्म मरण भय, बाल ब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय। दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवधन, आप बसे शिवमांहि ताहि बंदौ मन बच तन ॥२३॥ जाके वंदन थकी दोष दुख दूरहि जावै, जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवै। जाके वंदन थकी वंद्य होवें सुरगनके, ऐसे वीर जिनेश वंदि हूँ क्रमयुग तिनके ॥२४॥ सामायिक षट्कर्ममांहि यह पंचम, वन्दों वीर जिनेन्द्र इन्द्रशतवद्य वंद्यमम। जन्म मरण भय हरो करो अघ शांति शांतिमय, मैं अघकोष सुपोष दोषको दोष विनाशय ॥२५॥

६ठा—कायोत्सर्ग कर्म।

कायोत्सर्ग विधान करूं अंतिम सुखदाई, कायत्य जनमय होय काय सबको दुखदाई। पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर मैं, जिनगृह वंदन करूं हरूं भव पापतिमिर मैं ॥२६॥ शिरोनती में करूं नमूं मस्तक कर धरिकैं, आवर्त्तादिक क्रिया करूं मन वच मद हरिकैं। तीन लोक जिनभवनमांहि जिन हैं जु अकृत्रिम, कृत्रिम हैं द्वय अर्द्धद्वीप माहीं वंदों जिम ॥२७॥ आठकोड़ि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं, च्यारि शतक पर असी एक दिन मंदिर जाणूं। व्यंतर ज्योतिषिमांहि सख्य रहिते जिनमंदिर, ते सब वंदन करूं हरहु मम पाप संघकर ॥२८॥ सामायिक सम नांहि और कोउ वैर मिटायक, सामायिक सम नांहि और कोउ मैत्रीदायक। श्रावक अणुव्रत आदि अंत सप्तम गुणथानक, यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक ॥२९॥ जे भवि आतम काजकरण—उद्यमके धारी, ते सब काज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विहाय करो सामायिक सारी। राग रोष मद मोह क्रोध लोभादिक जे सब, बुध महाचन्द्र विलाय जाय तातैं कीज्यो अब ॥३०॥

इति सामायिकभाषा पाठ समाप्त।

आलोचना पाठ

दोहा।

बन्दौ पांचों परम, गुरु चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धि करन के काज ॥१॥

छन्द

सुनिये जिन अर्ज हमारी, हम दोष किये अतिभारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज ॥२॥
इक वे ते चउ इन्द्रीवा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहीं करुणा धारी, निर्दय व्है घात विचारी ॥३॥
समरम्भ, समारम्भ, आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ।
कृतकारित मोदन करके, क्रोधादि चतुष्टय धरके ॥४॥
शत आठ जो इन भेदनते, अघ कीने परछेदनते।
तिनकी कहुं कोलों कहानी, तुम जानत केवल ज्ञानी ॥५॥
विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने बचतें नहीं जात कहीने ॥६॥
कुगुरुन को सेवा कीनी, केवल अदया कर भीनी।
या विधि मिथ्यात्वबढायो चहुंगति मधि दोष उपायो ॥७॥
हिंसापुनि झूंठ जो चोरी, पर बनिता से दृगजोरी।
आरम्भ परिग्रह भीने, पनपाप जो याविधि कीने ॥८॥
सपरस रसना घ्राणनको, दृगकानविषय सेवन को।
बहुकर्म किये मनमाने कछु न्याय अन्याय न जाने ॥९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फल पंच उदम्बर खाये, मद्य मांस मधु चित चाहे।
नहिं अष्टमूल गुण धारे सेये कुविसन दुःखकारे ॥१०॥
दुइबीस अभक्ष जिन खाये, साभी निशिदिन भुजाये।
कुछ भेदाभेद न पायो, ज्यो ज्यों कर उदर भरायो ॥११॥
अनन्तानुबन्धी सो जानो, प्रत्याख्यान अप्रत्याखानो।
सज्वलन चौकडी गुनिये, सब भेद जु षोडस सुनिये ॥१२॥
पुनि हास्य अरति रति शोक, भय ग्लानी त्रिवेद संयोग।
पनवीस जो भेद भये हम, इनके वश पाप किये हम ॥१३॥
निद्रा वश शयन कराया, स्वप्न में दोज लगाया।
फिर जाग विषय वन धायो, नाना विधि विषफल खायो ॥१४॥
आहार विहार निहारा इनमें नहीं यत्न विचारा।
बिन देखे धरा उठाया, बिन सोधा भोजन खाया ॥१५॥
तबही प्रमाद सतायो, बहुविधि विकल्प उपजायो।
कुछ सुधबुद्धि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गई है ॥१६॥
मर्यादा तुम ढिग लीनो, ताहु में दोष जु कीनो।
भिन्न-भिन्न अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषै सब पइये ॥१७॥
हाहा मैं दुष्ट अपराधी त्रस जीवन राशि विराधी।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहीं लीनी ॥१८॥
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जांगा चुनाई।
बिन छानो पानी ढोल्यो, पंखा ते पवन बिलोल्यो ॥१९॥
हाहा मैं अदयाचारी, बहुहरित जो काय बिदारी।
यामे जीवों के खंदा हम खाये धरि आनन्दा ॥२०॥
हाहा मैं प्रमाद बसाई. बिन देखे अग्नि जलाई।
ता मध्य जीव जो आये, ते हू परलोक सिधाये ॥२१॥
बींधी अन्न रात्रि पिसायो. इंधन बिन सोधि जलायो।
झाडू ले जांगा बुहारी. चींटिआदिक जीव बिदारी ॥२२॥
जल छानिजिवानी कीनी, सो हू पुनि डारजु दीनी।
नही जल थानक पहुचाई कीरिया बिन पाप उपाई ॥२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल मल मोरिन गिरवायो कृमि कुल उहु घात करायो।
नदियो में चीर धुआये, कोसों के जीव मराये ॥२४॥
अन्नादिक सोध कराई, ता मध्य जीव निसराई।
तिनको नहिं यत्न करायो गलियारें धूप डरायो ॥२५॥
फिर द्रव्य कमावन काजे, बहु आरम्भ हिंसा साजे।
कीये तृष्णा वश भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ॥२६॥
इत्यादिक पाप अनन्ता हम कीने श्री भगवन्ता।
संतति चिरकाल उपाई, वाणी ते कहिय न जाई ॥२७॥
ताको जो उदय अब आयो, नाना विधि मोहिं सतायो।
फल भुंजत जो दुख पायो, बच से कैसे करगाऊं ॥२८॥
तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिव थानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारण विरद सही है ॥२९॥
एक ग्रामपति जो होवे सो भी दुखिया दुःख खोवे।
तुम तीन भवन के स्वामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी ॥३०॥
द्रोपदी को चीर बढायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अन्जन से किये अकामी, दुःख मेटो अन्तर्यामी ॥३१॥
मेरे औगुण न चितारो, प्रभु अपना विरद निहारो।
सब दोष रहित कर स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी ॥३२॥
इन्द्रादिक पद नहिं चाहूं, विषयों मे नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पददीजे ॥३१॥

दोहा।

दोष रहित जिन देवजी, निजपद दीजे मोहि।
सब जीवन को सुख बड़े, आनन्द मंगल होहि ॥३२॥
अनुभव माणिक पारखी ज़ोहरी आप जिनंन्द।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरण शरणआनन्द ॥३३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी भावना

जिसने रागद्वेश कामादिक जीते, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निष्पृह हो उपदेश दिया ॥१॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति-भाव से प्रेरित हो यह, चित उसी में लीन रहो ॥२॥
विषयों की आशा नहि जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज-परके हित-साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ॥३॥
स्वार्थत्यागकी कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधू जगतके, दुख समूह को हरते हैं ॥४॥
रहे सदा सत्संग उन्हींका, ध्यान उन्हींका नित्य रहे।
उन ही जैसी चर्यामें यह, चित सदा अनुरक्त रहे ॥५॥
नही सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नहि कहा करूं।
परधन वनिता पर न लुभाऊ, सन्तषोमृत पिया करूं ॥६॥
अहंकार का भाव न रक्खूं, नहीं किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षा-भाव धरूं ॥७॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं ॥८॥
मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दीन-दुखी जीवों पर मेरे, उर से करूणास्रोत बहे ॥९॥
दुर्जन-क्रुर-कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य-भाव रक्खूं मैं उन पर ऐसी परणति हो जावे ॥१०॥
गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहां तक उनको सेवा करके यह मन सुख पावे ॥११॥
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥१२॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे ।
तो भी न्यायमार्ग से मेरा कभी न पद डिगने पावे ॥१४॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे ।
पर्वत-नदी-श्मशान भयानक, अटवी से नहि भय खावे ॥१५॥
रहे अडोल-अकंप निरन्तर यह मन दृढतर बन जावे ।
इष्टवियोग—अनिष्टयोग में सहनशीलता दिखलावे ॥१६॥
सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे ।
बैर-पाप-अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगलगावे ॥१७॥
घर घर चर्चा रहे धर्म की दुष्कृत दुष्कर हो जावें ।
ज्ञान-चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावें ॥१८॥
ईति भीति व्यापे नहिं जग में वृष्टि समय पर हुआ करें ।
धर्मनिष्ट होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करें ॥१९॥
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांति से जिया करें ।
परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करें ॥२०॥
फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करें ।
अप्रिय-कटुक कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करें ॥२१॥
बनकर सब 'युग वीर' हृदय से देशोन्नतिरत रहा करें ।
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करें ॥२२॥

निर्वाणकांड भाषा

दोहा।

वीतराग बंदौं सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूं कांड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय ॥१॥

चौपाई

अष्टापद आदीश्वरस्वामि, वासुपूज्य चंपापुरिनामि ।
नेमिनाथस्वामी गिरनार, बंदौं भावभगतिउरधार ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित बंदौं जगदीस ॥३॥
वरदत्त रायरुइंद मुनिंद, सायरदत्त आदिगुणवृंद ।
नगरतारवर मुनि उठकोडि, बंदौं भावसहित करजोडि ॥४॥
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात ।
संभु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ॥५॥
रामचन्द्र के सुत वीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर ।
पाँचकोडि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिरि बंदौं निरधार ॥६॥
पांडव तीन द्रविड राजान, आठकोडि मुनि मुक्ति पयान ।
श्री शत्रुञ्जयगिरि के सीस, भाव सहित बंदौं जगदीस ॥७॥
जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठकोड़ि मुनि औरहि भये ।
श्रीगजपथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ।८।
राम हनु सुग्रीव सुडील, गवयगवाक्ष नीलमहानील ।
कोड़ि निन्याणवे मुक्तिपयान, तुंगीगिरि बंदौं धरिध्यान ।९।
नंग अनंग कुमार सुजान, पांचकोडि अरु अर्ध प्रमान ।
मुक्तिगये सोनागिरिशीश, ते बंदौं त्रिभुवनपति ईस ॥१०॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवातट सार ।
कोड़ि पच अरु लाख पचास, ते बंदौं धरि परमहुलास ॥११॥
रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जह छूट ।
द्वै चक्री दश काम कुमार, आठ कोड़ि बंदौं भवपार ॥१२॥
बडवानी बडनयर सुचग, दक्षिण दिशि गिरिचूल उतंग ।
इन्द्रजीत अरु कुंभजुकर्ण, ते बन्दौं भव सागरतर्ण ॥१३॥
सुवरण भद्र आदि मुनिचार, पावागिरिवर शिखर मझार ।
चेलना नदी तीर के पास मुक्तिगये बन्दौं नित तास ॥१४॥
फलहोडी बडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप ।
गुरु दत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्तिगये बन्दौंनित तहां ॥१५॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।
श्री अष्टापद मुक्तिमन्झार, ते बन्दौंनित सुरत सभार ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचलापुर की दिशा ईसान, तहां मेढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ।।१७।।

वसस्थल बनके ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशिभूषण नाम, तिनके चरणनिकरूं प्रणाम ।।१८।।

दसरथ राजा के सुन कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, बंदन करूं जोर जुगपान ।।१९।।

समवसरण श्री पार्श्वजिनंद, रेसिदीगिर नयनानन्द ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम जिहाज ।।२०।।

सेठ सुदर्शन पटना जान, मथुरा से जम्बू निर्वाण ।
चरम केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीन दयाल ।।२१।।

तीन लोक के तीरथ जहां, नित प्रति वंदन कीजै तहां।
मनवचकायसहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय ।।२२।।

संवत सतरहसो इकताल, आश्विन सूदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जयनिर्वाणकांड गुणमाल ।।२३।।

अथ लघु सहस्त्रनामाय:

नमस्त्रै लोक्य नाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि, मोक्ष सौख्या भिलाषाये ।।

निर्म्मल: शाश्वतो: शुद्धो, निर्विकल्पो नीरामय: ।
नि:शरीरो निरातंको, सिद्ध: सूक्ष्मो निरंजन: ।।

नीष्कलंको निरालंबो, नीर्मोहो निर्मलोत्तम: ।
निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारो नीरुक्तगु: ।।

निर्दोषो निरुज: शान्तो, निर्वेद्यो निर्मम: शिव: ।
निस्तरंगो नीराकारो, निष्कर्मा नीष्कल: प्रभु: ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्वादो नीरुपज्ञानी, नीरागो निर्धनोजिनः ।
निःशब्दो ऽप्रतीमः श्रेष्ठ, उत्कृष्ठो ज्ञान गोचर ॥

निःसंगो प्राप्त कैवल्यो, नैष्ठिकः शब्दर्वाजतः ।
अनिंद्यश्चातिपू तात्मा, जगत्शिखरशेखरः ॥

निःशब्दो गुणसंपन्नः, पापतापप्रणाशनः ।
सोपयोगः शुभंप्राप्तः, कर्म्मंद्योत बलापहः ॥

अजरो अमरः सिद्धः, अचिंतश्चाक्षयो विभुः ।
अमूर्ति रच्युतो ब्रह्मा, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥

अनघो विश्व नाथश्च, अजयो नुपमोभवः ।
अप्रमेयो जगंन्नाथो, बोध रूपोऽजितात्मकः ॥

अव्ययः सकलाराध्यः, निष्पन्न ज्ञानलोचनः ।
अच्छेद्यो निर्म्मलोनित्यः, सर्व संकल्प वर्जित ॥

अजेयो सर्वतोभद्रः, निःकषायो भवान्तकः ।
निश्वनाथः स्वयं बुद्ध, वीतरागो जिनेश्वरः ॥

अंतकः सहजानंद, आवाङ् मानसगोचरः ।
असाध्यः शुद्धचैतन्यः कर्मानोकर्मवर्जितः ॥

अनन्तोविमलज्ञानी, निस्पृहोनिः प्रकाशकः ।
कर्मजेतामहायोगी, लोकत्रयशिरोमणि, ॥

अव्याबाधो वरःशंभु, विश्ववेदी पितामह ।
सर्वभूतहितोदेवः, सर्वलोकशरण्यकः ॥

आनन्दरुपचैतन्यो भगवान्त्रिजगद्गुरुः ।
अनंतानंतधीशक्ति स्तुताव्यक्ताव्यग्रात्मकः ॥

अष्टकर्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातुविवर्जितः ।
गौरवादित्रयादूरः, सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥

अभवःप्राप्तकैवल्यो, निर्वाणोनिरपेक्षकः ।
निष्कलः केवलज्ञानी, मुक्ति सौख्यप्रदायक. ॥

अनामयो महाराध्यः, वरदोज्ञानपावनः ।
सर्वः शश्वत्सुखावाप्तो, जिनेन्द्रोमुनिसंस्तुतः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनणुः परमज्ञानी, विश्वतत्वप्रकाशकः ।
प्रबुद्धो भगवान्नाथः, प्रशस्तपुण्यकारकः ॥
शंकर सुगतोरुद्रः, सर्वज्ञो मदनांतकः ।
ईश्वरोभुवनाधीशः, सच्चितः पुरुषोत्तमः ॥
सद्योजातप्रकाशात्मा, विमुक्तो मुक्तिबल्लभः ।
योंगीन्द्रो ऽनादिसंसिद्धो, निरोहो ज्ञानगोचरः ॥
सदाशिवश्चतुर्वक्त्रः, सत्सौख्यस्त्रिपुरातकः ।
त्रिनेत्रस्त्रि जगत्पूज्यः, अष्ठमूर्तिरकल्मषः ॥
सर्वसाधुजनैर्वंद्यः, सर्वपापविवर्जितः ।
सर्वंदेवाधिकोदेवः, सर्वभूतहितंकरः ॥
स्वयंवेद्योमहात्यागी, प्रसिद्धः पापनाशनः ।
तनुमात्रश्चिदानन्द, चैतन्योचैत्यवैभवः ॥
सकलातिशयीदेवो, मुक्तिनाथोमहामहः ।
मुक्तिकार्यायसंतुष्टो, निरागोपरमेश्वरः ॥
महादेवोमहावीरो, महामोहविनाशकः ।
महाभावोमहाशीलो, महामुक्तिप्रदायकः ॥
महाज्ञानीमहायोगी, महातपामहात्मकः ।
महर्धिकोमहावीर्यो, महार्हंतपदस्थितः ॥
महापूज्योमहावंद्यो, महाविघ्नविनाशकः ।
महासौख्योमहापुंसो, महामहमहोर्चितः ॥
मुक्तमुक्तिनिरोधाशः, एकानेकाविनिश्चलः ।
सर्वद्धंद्वविनिर्मुक्तो, निर्वाणानैकपावनः ॥
महासूरोमहाधीरो, महादुःखविनाशकः ।
महामुक्तिप्रदोधीरो, महाहृद्योमहागुरु ॥
निर्मोहो मारविध्वंसी, निष्कामो विषयच्युतः ।
भगवत्कोगतभ्रान्तः, शान्तिकल्याणकारकः ॥
परमात्मापरेज्योतिः, परमेष्टीपरमेश्वरः ।
परमोजः परं तेजः, परं धाम परं महः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसूतोनत वज्ञानी, साक्षात्‌निर्वाणसंयुतः ।
नाकृतिर्निक्षरोऽवर्णो व्योमरूपश्चिदात्मकः ॥
व्यक्तव्यक्तैकसंबोधः, ससारच्छेदकारकः ।
निरवद्योमहाराध्यः, कर्मजिद्धर्मनायकः ॥
बोधयन्सुजगद्वंद्यो, विश्वात्माविश्वनायकः ।
स्वयंभूपापहःपूज्यः पुनीतोविभवस्तुतः ॥
वर्णातीतोमहातीतो, रूपातीतोनिरंजनः ।
अनन्तज्ञानसंपन्नो, देवदेवः सुनायकः ॥
वरेण्यो भवविध्वंसी, योगिनांज्ञानगोचरः ।
जन्ममृत्युजरातंक, सर्वविघ्नहरोहरः ॥
विश्वद्रकभव्वसंवंद्यः, पवित्रोगुणसागरः ।
प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥
रत्नगर्भोजगत्स्वामी, इन्द्रवन्द्य सुरार्चितः ।
निःप्रपंचोनिरातंको, निःशेषक्लेशनाशनः ॥
लोकेशोलोकसंसेव्यो लोकालोकप्रकाशकः ।
लोकोत्तमस्त्रिलोकेशो, लोकाग्रशिखरस्थितः ॥
नामाष्टकसहस्राणि, ये पठन्ति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपदंयान्ति, मुच्यन्ते नात्रसंशयः ॥

इति लघुसहस्रनाम सम्पूर्णम् ॥

श्री आदिनाथ स्तोत्रम्

(भक्तामर स्तोत्र)

भक्तामरप्रणतमौलि मणिप्रभाणा-
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्यजिनपादयुगं युगादा-
वालम्बन भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥
बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥
वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥
सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम !
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतुः ॥६॥
त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभीष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किंवा
भूत्याश्रित य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिन्धोः
क्षारं जल जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ।
तावन्त एवं खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्रंकिमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत् यमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र ! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांक विम्बम् ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरबारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर प्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं—
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥
गम्भीरताररवपूरतदिग्वीभाग—
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतीदक्षः ।
सद्धर्म राजजयघोषणघोषकः सन्
खे दुन्दुभिध्वंनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥
मन्दारसुन्दरनमेसुपारिजात—
सन्तानकादिकुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा ।
गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रयाता
दिव्या दिवःपतित ते वयसां ततिर्वा ॥३३॥
शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ति ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरि संख्या—
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥
स्वर्गापवर्गगमसार्गविमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व—
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुंजकान्ती—
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाःपरिकल्पयन्ति ॥३६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्थ यथा तव विभूतिरभूजिनेन्द्र
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल—
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥
भिन्नेभकुम्भगल दुज्जवल शोणिताक्त—
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशङ्क—
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥
वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद—
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥
कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा—
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥
अम्भोनिधो-क्षुभितभीषणनक्रचक्र—
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजंति ॥४४॥
उद्भूतभीषण जलोदरभारभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत जीविताशाः ।
त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहाः
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥
आपादकण्ठमुरुश्रृंखलवेष्टितांगाः
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्ठजंघाः ।
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥४६॥
मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि—
संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिम सतिमानधीते ॥४७॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैतिलक्ष्मीः ॥४८॥

इति श्रीमानतुङ्गाचार्यविरचितमादिनाथस्तोत्रं समाप्तम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य श्रीमदुमास्वामिविरचितं

मोक्षशास्त्रम्

(तत्वार्थसूत्रम्)

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः,
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानरचारित्रभेदाः ।
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः,
प्रत्येति श्रद्धधाति स्पृशति च मतिमान् यः सवै शुद्धदृष्टिः ॥१॥
सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउविहाराहणाफलं पत्ते
बंदित्ता अरहन्ते, वोच्छं आराहणा कमसो ॥२॥
उज्झोवणमुज्झवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसणणाणचरित्तं, तवाणमाराहणा भणिया ॥३॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेतारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां, बंदे तद्गुणलब्धये ॥१॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रबन्धसंवरनिजंरामोक्षास्तत्वम् ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभाव तस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्सख्या क्षजस्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥८॥ मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलानि ज्ञानम् ॥९॥ ततृप्रमाणे ॥१०॥ आद्य परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥१३॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥ अवग्रहेहाऽवायधारणाः ॥३५॥ बहुबहुविधिक्षिप्राऽनिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यंजनस्यावग्रहः ॥१८॥ न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥२०॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनःपर्य्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥ विशुद्ध क्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्य्यययोः ॥ २५ ॥ मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयोविपर्ययश्च ॥३ १ ॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥३३॥

ज्ञान दर्शनयोस्तत्वं नयानां चैव लक्षणं।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्वमध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदाः यथाक्रमम् ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञाना ज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥५॥ गतिकषायलिङ्गत्रिमिथ्यादर्शनाऽज्ञानाऽसंयताऽसिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥६॥ जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ॥७॥ उपयोगो लक्षणम् ॥८॥ स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्कामनस्काः॥११॥संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्तेजवायु वनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगी भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥१९॥ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्तदर्थाः ॥२०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥२१॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥२४॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः ॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ॥२८॥ एकसमयाऽविग्रहा ॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥३०॥ सम्मूर्छनगर्भोपपादा जन्म ॥३१॥ सचित्तशीतसंवृत्ताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥३२॥ जरायुजांडजपोतानां गर्भः ॥३३॥ देवनारकाणामुपपादा ॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्छनम् ॥३५॥ औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥३७॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुण प्राक्तैजसात् ॥३८॥ अनन्तगुणं परे ॥३९॥ अप्रतीघाते ॥४०॥ अनादिसम्बन्धे च ॥४१;। सर्वस्य ॥४२॥ तदादीन भाज्यानि युगपदेकस्मिन्ना चतुर्भ्यः ॥४३॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥४४॥ गर्भस-मूर्च्छनजाद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥४७॥ तैजसमपि ॥४८॥ शुभं विशुद्धमव्याधाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥४९॥ नारकसम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ॥५०॥ न देवाः ॥५१॥ शेषस्त्रिवेदाः ॥५२॥ औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपंचोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥२॥ नारकाः नित्याऽ शुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥४॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूदीप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥७॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥८॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥९॥ भरत हैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥१०॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥११॥ हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ॥१२॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजन पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥१९॥ गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥२१॥ शेषास्त्वपरगाः ॥२२॥ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिन्ध्वादयो नद्यः ॥ २३ ॥ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ॥२४॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ॥२५॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥२६॥ भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥ २७ ॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥ २८ ॥ एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥ २९ ॥ तथोत्तरा ॥ ३० ॥ विदेहेषु संख्येयकालाः । ३१ । भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः । ३२ । द्विर्धातकीखण्डे ॥ ३३ ॥ पुष्करार्द्धे च ॥ ३४ ॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥ ३५ ॥ आर्या म्लेच्छाश्च ॥३६॥ भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य ॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्त-र्मुहूर्ते ॥३८॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥३९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकाया ॥ १ ॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पा. कल्पोपपन्नपर्यन्ता ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णका भियोग्यकिल्बिषिकाश्चैकशः ॥ ४ ॥ त्रायस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ॥ ५ ॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ६ ॥ कायप्रवीचाराः आ ऐशानत् ॥ ७ ॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवी-चाराः ॥ ८ ॥ परेऽप्रवीचाराः ॥ ९ ॥ भवनवासिनोऽसुर-नागविद्युत्सुवर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥ व्य-न्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचा ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यतयो नृलोके ॥ १३ ॥ तत्कृतः काल-विभागः ॥ १४ ॥ बहिरवस्थिताः ॥१ ५ ॥ वैमानिकाः ॥ १६ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥ १७ ॥ उपर्युपरि ॥ १८ ॥ सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तव-कापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्त्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयो-र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥ १९ ॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधि विषयतोऽधिकाः ॥ २० ॥ गतिशरीरपरिग्रहाऽभिमानतो हीनाः ॥ २१ ॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रै-वेयकेभ्य- कल्पाः ॥ २३ ॥ ब्रह्मलोकालयाः लौकान्तिकाः ॥ २४ ॥ सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टा श्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥ २६ ॥ औप-पादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥ २७ ॥ स्थितिरसुर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नागसुवर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपऽधिके ॥२९॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानितु ।३१। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपमनधिकम् ॥ ३३ ॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानन्तराः ॥ ३४ ॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यन्तराणां च ।३८। परा पल्योपममधिकम् ।३९। ज्योतिष्काणां च ।४०। तदष्टभागोऽपरा ।४१। लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।४२।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याय; ।४।

अजीवकाया धर्म्माधर्माकाशपुद्गलाः । १ । द्रव्याणि ।२। जीवाश्च । ३ । नित्यावस्थितान्यरूपाणि । ४ । रूपिणः पुद्गलाः ।५। आ आकाशादेकद्रव्याणि ।६। निष्क्रियाणि च ।७। असंख्येयाः प्रदेशा धर्म्माधर्मैकजीवानाम् ।८। आकाशस्यानन्ताः ।९। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ।१०। नाणोः ।११। लोकाकाशेऽवगाहः ।१२। धर्म्माधर्म्मयोः कृत्स्ने ।१३। एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।१४। असंख्येयभागादिषु जीवानाम् । १५ । प्रदेशसंहारविसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ।१६। गतिस्थितित्युपग्रहौ धर्म्माधर्म्मयोरुपकार- ।१७। आकाशस्यावगाहः । १८ । शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानाम् । १९ । सुख-दु-खजीवितमरणोपग्रहाश्चः ।२०।परस्परोपग्रहाश्च जीवानाम् ।२१। वर्त्तनापरिणामक्रियाः परत्वापरत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्शरस-गन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः । २३ । शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थान-भेदतमश्छायातपोद्योतवन्तश्च ।२४। अणवः स्कन्धाश्च ।२५। भेदसंघातेभ्य उत्पद्यन्ते ।२६। भेदादणुः ।२७।भेदसंघा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताभ्यां चाक्षुषः ।२८। सद्द्रव्यलक्षणम् ।२९। उत्पादव्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत् ।३०। तद्भावाव्ययं नित्यम् ।३१। अर्पिता-नर्पितसिद्धेः ।३२। स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्ध ।३३। न जघन्य-गुणानाम् ।३४। गुणसाम्ये सदृशानाम् ।३५। द्वयधिकादि-गुणानां तु ।३६। बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।३७। गुणपर्ययवद्द्रव्यम् । ३८। कालश्च ।३९। सोऽनन्तसमयः ।४०। द्रव्याश्रया निर्गुणा-गुणाः ।४१। तद्भावः परिणामः ।४१।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्याय; ।५।

कायवाङ्मनःकर्म योगः ।१। स आस्रवः ।२। शुभ पुण्यस्याशुभः पापस्य ।३। सकषाकषाययोः साम्परायिके-र्यापथयोः ।४। इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चतुःपञ्चपञ्चवि-शतिसंख्या पूर्वस्य भेदाः ।५। तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्य विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।६। अधिकरण जीवाजीवाः ।७। आद्यं सं-रम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषस्त्रिस्त्रिस्त्रि-श्चतुश्चकशः ।८। निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ।९। तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावर्णयोः ।१०। दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मा-परोभयस्थान्यसद्वेद्यस्य ।११। भूतव्रत्यनुकम्पादानसरागसंयमा द-योगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ।१२। केवलिश्रुतसंघ-धर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१३। कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्-चारित्रमोहस्य ।१४। बह्वारम्भपरिग्रहत्व नारकस्यायुषः ।१५। माया तैर्यग्यानस्य ।१६। अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ।१७। स्वभावमार्दवं च ।१८। निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ।१९। सरागसंयमसंयमासंयमाऽकामनिर्ज्जराबालतपांसि दैवस्य ।२०। सम्यक्त्वं च ।२१। योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ।२२। तद्विपरीतं शुभस्य ।२३। दर्शनवि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धिविनयसम्पन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग संवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावनाप्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोदभावने च नीचैर्गोत्रस्य ।२५। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२६। विघ्नकरणमन्तरायस्य ।२७।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ।१। देशसर्वतोऽणुमहती ।२। तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ।३। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पञ्च ।४। क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषण च पञ्च ।५। शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्म्माऽविसंवादाः पञ्च ।५। स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ।७। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्ज्जनानि पञ्च ।८। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ।९। दुःखमेव वा ।१०। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ।११। जगत्कायस्वभावौ संवेगवैराग्यार्थम् ।१२। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ।१३। असदभिधानमनृतम् ।१४। अदत्तादानं स्तेयम् ।१५। मैथुनमब्रह्म ।१६। मूर्च्छा परिग्रहः ।१७। निःशल्यो व्रती ।१८। अगार्यनगारश्च ।१९। अणुव्रतोऽगारी ।२०। दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ।२१। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षिता ।२२। शंकाकांक्षाविचिकित्साऽन्यदृष्टिप्रशसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।२३। व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् ।२४। बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।२५। मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः ।२६। स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मान प्रतिरूपकव्यवहाराः ।२७। परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताऽपरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकामतीव्रभिनिवेशाः ।२८। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।२९। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यन्तराधानानि ।३०। आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।३१। कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।३२। योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३३। अप्रत्यवेक्षिता प्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३४। सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुष्पक्वाहाराः ।३५। सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।३६। जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ।३७। अनुग्रहार्थंस्वस्यातिसर्गो दानम् ।३८। विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।३९।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्याय ।७।

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ।१। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ।२। प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ।३। आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ।४। पंचनवद्वयष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमम् ।५। मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानाम् ।६। चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानांनिद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदसद्वेद्ये ।८। दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसञ्ज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ।९। नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ।१०। गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घातसंस्थानसंहनन स्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ।११। उच्चैर्नीचैश्च ।१२। दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ।१३। आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटिकोटयः परा स्थितिः ।१४। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१५। विंशतिर्नामगोत्रयोः ।१६। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ।१७। अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ।१८। नामगोत्रयोरष्टौ ।१९। शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ।२०। विपाकोऽनुभवः ।२१। स यथनाम ।२२। ततश्च निर्जरा ।२३। नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ।२४। सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।२५। अतोऽन्यत्पापम् ।२६।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ।८।

आस्रवनिरोधः संवरः ।१। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ।२। तपसा निर्ज्जरा च ।३। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ।४। ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।५। उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाऽकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ।६। अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्ज्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यात-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ।७। मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।८। क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्य्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाऽज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसाम्पराछदमस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ बादरसाम्पराये सर्वे ॥ १२ ॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥ १३ ॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥ १४ ॥ चारित्रमोहे नागन्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयांचासत्कारापुरस्काराः ॥ १५ ॥ वेदनीये शेषाः ॥ १६ ॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नेकोनविंशतेः ॥ १७ ॥ सामायिकच्छेदोपस्थानापरिहारविशुद्धसूक्ष्मसाम्परायथाख्यातमिति चारित्रम् ॥ १८ ॥ अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यंतपः।१९। प्रायश्चितविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥ वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्यो ॥ २६ ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥ २७ ॥ आर्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥ आर्तममनोज्ञस्यसम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार ॥ ३० ॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥ ३१ ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ निदानं च ॥ ३३ ॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥३४॥ हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्यं ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियावितीर्नि ।३९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥ ४१ ॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥ ४२ ॥ वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थव्यंजनयोगसंक्रान्तिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोप-शान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रन्था ॥४६॥ संयम-श्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥९॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥ १ ॥ बन्धहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्ष ॥ २ ॥ औपशमिका दिभव्यत्वानां च ॥ ३ ॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व-ज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥ ४ ॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ अविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाम्बुवदेरण्डबीजवदग्निशिखा-वच्च ॥ ७ ॥ धर्मास्तिकायाऽभावात् ॥ ८ ॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्ग-तीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ॥

कोटिशतंद्वादश चैव कोटचो लक्ष्याण्यशीतिस्त्र्यधियानि चैव ।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतद् श्रुतं पंचपदं नमामि ॥ १ ॥
अरहंतभासियत्थं, गणहरदेवेहिं गंथियं सव्वं ।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाणमहोवयं सिरसा ।२।
अक्षरमात्रपदस्वरहीनं, व्यजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥३॥
दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्वार्थे पठिते सति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलं स्यादुपवासस्य, भाषितं मुनिपुंगवैः ॥४॥
तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वंदे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥ ६ ॥
जंसक्कइ तं कीरइ, जं चण सक्कइ तहेय सद्दहणं ।
सद्दहमाणो जीवो, पावई अजरामरं ठाणं ॥६॥
तवयरणं वयधरण, संजमशरणं च जीवदयाकरणम् ।
अन्ते समाहिमरण, चउगइदुक्ख णिवारेई ॥ ७ ॥

इति तत्वार्थसूत्रापरनाम तत्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

भूधर कृत स्तुति

अहो जगतगुरु एक, सुनिये अरज हमारी । तुम प्रभु ! दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी ॥ इस भववन के मांहि, काल अनादि गमायौ भ्रमत चहूं गतिमाँहि, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥ कर्म महारिपु जोर, एक न कान करेंजी । मनमानों दुख देंहि, काहूसों न डरें जी ॥ कबहुं इतर निगोद, कबहुं नरक दिखावें । सुर नर पशु गतिमांहि, बहुविधि नाच नचावें ॥ प्रभु ! इनके परसंग, भव भव-मांहि बुरेजी । जो दुख देखे देव ! तुम सौं नाहिं दुरेजी । एक जनमकी बात, कहि न सकौं सुनि स्वामी । तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरजामी । मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे । कियो बहुत बेहाल सुनियौं साहिब मेरे ॥ ज्ञान महानिध लूटि रंक निबल करिडारचो । इनहीं तुम मुझमांहि, हे जिन ! अन्तर पारचो ॥ पाप पुण्य की दोय, पांयनि बेड़ी डारीं । तनकारागृह-मांहिं, मोहि दियो दुख भारी ॥ इनको नेक बिगार, मैं कछु नांहि कियौ जी । विन कारन जगवंद्य, बहुविधि बैर लियौ जी ॥ अर आयौ तुम पास, सुन जिन सुजस तिहारौ । अब आयौ तुम पास, सुन जिन सुजस तिहारौ । नीति-निपुन महाराज, कीजै न्याव हमारौ ॥ दुष्टनि देहु निकास साधुनिको रखि लीजै । बिनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ढील न कीजै ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शीतल नाथ पूजा

(कविवर पं० मनरङ्गलाल कृत)

स्थापना गीता छन्द

है नगर भद्दिल भूप द्रढ़रथ, सुष्टु नन्दा ता त्रिया,
ताजि अचुत दिवि१ अभिराम२ शीतलनाथ सुत ताके प्रिया।
इक्ष्वाकु वंशी अंक श्रीतरु, हेमवरण शरीर है,
धनु नवे उन्नत पूर्व लख इक, आयु सुभग४ परी रहे।
सोरठा--सो शीतल सुखकन्द, तजि परिग्रह शिवलोक गे,
छूट गयो जगवंद, करियत तो५ आह्वान अब।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वननम्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम) अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् (इति सन्हिधीकरणं)

अष्टक, गीताछन्द

नित६ तृषा७ पीड़ा करत अधिकी, दाब अबके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन जड़ित गंगा, नीर भरि ले आइयो।
तुम नाथ शीतल करो शीतल, मोहि भवकी तापसों,
मैं जजो युगपद८ जोरि करि९ मो, काज सरसी आपसों।
ओं ह्रीं श्रीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम्

जाकी महक सों नीम आदिक, होत चन्दन जानिये,
सो सूक्ष्म घसि के मिला केशर, भरि कटोरा आनिये। तुम०
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्

मैं जीव संसारी भयो अरु, मरयो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे, अखय पदके कारना। तुम०
ओं ह्रीं श्रीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षतपदप्राप्तये अक्षतम् नि०

१ स्वर्ग, २ सुन्दर, ३ चिन्ह, ४ सुन्दर, ५ इसलिए, ६ हमेशा, ७ प्यास
८ दोनों चरण, ९ हाथ जोड़कर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन मदन मोरी सकति थोरी, रह्यो सब जग छाय के:
ता नाश कारन सुमन ल्यायो, महाशुद्ध चुनाय के। तुम०
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम्।
क्षुधा रोग मेरे पिंड लागो, देत मांगे ना घरी,
ताके नसावन काज स्वामी, ले चरू आगे धरी। तुम०।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यम्।
अज्ञान तिमिर महान अन्धा-कार करि राखो सबै,
निज पर सुभेद पिछान कारण, दीप ल्यायो हूं अबै। तुम०
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम्।
जे अष्टकर्म महान अतिबल, घेरि मो चेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले, धूप प्रभु ढिग क्षेपियो। तुम०
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।
शुभमोक्ष मिलन अभिलाष मेरे, रहत कब को नाथजू,
फलमिष्ट नानाभांति सुथरे, ल्याइयो निजहाथ जू। तुम०
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय फलं पदप्राप्तये अर्घ्यम्।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
जल गन्ध अक्षत फूल चरु, दीपक सुधूप कही महा
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हों, दोष सों वर्जित कहा। तुम०

पंचकल्याणक, गाथा छन्द

चैत वदी दिन आठें, गर्भावतार लेत भये स्वामी।
सुर नर असुरन जानी जजहूं शीतल प्रभु नामी॥
ओं ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यम्।
माघवदी द्वादशि को, जन्मे भगवान् सकलसुखकारी।
मतिश्रुत अवधि विराजे, पूजों जिनचरण हितकारी॥
ओं ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यम्।
द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि वन बसे जाई।
पूजत तहां सुरासुर, हम पूजत यहां गुण गाई॥
ओं ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यम्।
चौदशि पौषवदी में, जगगुरु केवलपाय भये ज्ञानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो मूरति मनमानी, मैं पूजों जिनचरण सुखखानी ।।
ओं ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यंम् ।
अश्विनसुवि अष्टमिदिन, मुक्तिपधारेसमेदगिरिसेती ।
पूजा करत तिहारी, नशत उपाधि जगत की जेती ।।
ओं ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यंम् ।

अ थ ज य मा ला

जयशीतल जिनवर, परमधरमधर, छवि के मन्दिर शिवभरता ।
जय पुत्र सुनन्दा, के गुणवृन्दा, सुखके कन्दा, दुख हरता ।
जय नासादृष्टी, हो परमेष्टी, तुम पदनेष्ठी, अलख भये ।
जय तपो चरनमा, रहतचरनमा, सुआ चरणमा, कलुष गये ।।

सृग्विणी छन्द

जय सुनन्दा के नन्दा तिहारी कथा, भाषि को पार पावे कहावे यथा। नाथ तेरे कभी होत भवरोग ना, इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग ना ।। अग्नि के कुण्ड में बल्लाभाराम की, नाम तेरे बची सो सती काम की । नाथ तेरे कभी होत भवरोग ना, इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग ना ।।

द्रोपदी चीर बाढ़ो तिहारी सही, देव जानी सबों में सुलज्जा रही ।।नाथ०।। कुष्ट राखो न श्रीपाल को जो महा, अब्धि तें काढ़ लीनों सितावी तहां ।। नाथ० ।।

अंजन काटि फांसी गिरी जो हतो, औ सहाई तहां तो बिना को हता ।। नाथ०।। शैल फूटो गिरो अञ्जनीपूत के, चोट ताके लगी ना तिहारे तके ।।नाथ०।। कूदियो शीघ्र ही नाम तो गायके, कृष्ण काली नथे कुण्ड में जायके ।।नाथ०।।

पांडवा जे घिरे थे लखागार में, राह दीन्ही तिन्हें ते महा-प्यार में ।।नाथ०।। सेठ को शूलिका पै धरो देख के, कीन्ह सिंहासनं आपनो लेखके ।।नाथ०।। जो गिनाये इन्हें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदि देके सबै, पादपरसाद तें भे सुखारी सबै ।। नाथ० ।।
वार मेरी प्रभू देर कीन्हीं कहा,
कीजिये दृष्टिदाया की मोपे अहा ।। नाथ०।।
धन्य तू धन्य तू धन्य तू मैं नहा,
ओ पञ्चमो महाज्ञान नीके लहा ।।नाथ०।।
कोटि तीरत्थ है तेरे पदों के तले,
रोज ध्यावें मुनीं सो बतावें भले ।।नाथ०।।
जानि के यों भली भांति ध्याऊं तुझे,
भक्ति पाऊं यही देव दीजे मुझे ।।नाथ०।।

गाथा

आपद सब दीजे भार झोंकि, यह पढ़त सुनत जयमाल ।
होत पुनीत करण अरु जिह्वा, वरते नित आनंद जाल ।।
पहुंचे जहं कबहूं पहुंच नहीं, नाहिं पाई पावे हाल ।
नहीं भयो सो होय सबेरे, सु भाषत 'मनरङ्गलाल' ।।
ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा

भो शीतल भगवान, तो पद-पक्षी जगत में ।
है जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी ।।
।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा अर्घ

ज्ञानधर कूट

कुन्थनाथ जिनराज का, कूट ज्ञान धर जेह ।
मन वच तन पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।
ओं ह्रीं श्री कुन्थनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९६ कोड़ा कोड़ी ९६ करोड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२ लाख ९६ हजार ७४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वचन, कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।१।

२४ तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

चौबीसों जिनराज के, गण नायक हैं जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ओं ह्रीं श्री गोतम स्वामि आदि गणधर देव ग्राम के उद्यान आदि भिन्न २ स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।२।

मित्रधर कूट

नमिनाथ जिनराज का, कूट मित्र धर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९ सौ कोड़ा कोड़ी १ अरब ४५ लाख ७ हजार ९४२ मुनि इस कूटसे सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।३।

नाटक कूट

अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

ओं ह्रीं श्री अहरनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९९ करोड़ ९९ लाख ९९ हजार ९९९ मुनि (यानि १ कम १ अरब मुनि) इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।४।

सवल कूट

मल्लिनाथ जिनराज का, संवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओंम ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९६ करोड़ मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।५।

संकुल कूट

श्रेयांसनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि मूनि ९६ कोड़ा कोड़ी ९६ करोड़ ९६ लाख ९ हजार ५४२ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।६।

सुप्रेभ कूट

पुष्पदन्त जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूचहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्रादि मुनि १ कोड़ा कोड़ी ९९ लाख ७ हजार ४८० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलाधि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।७।

मोहन कूट

पदमप्रभु जिनराज का, मोहन कूट है जेह।
मन वच तनकर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्री श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि ९९ करोड़ ८७ लाख ४३ हजार ७२७ मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।८।

निरजर कूट

मुनिसुव्रत जिनराज का, निरजर कूट है जेह।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ओं ह्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९९ कोड़ा कोड़ी९९करोड़ ९ लाख ९९९ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारबिन्द को मेरा मन वचन काय से बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ललित कूट

चन्द्रप्रभु जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ओं ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिमेन्द्रादि मुनि ९८४ अरब ७२ करोड़ ८० लाख ८४ हजार ५९५ मुनि इस कूट ने सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वच कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।१०।

आदिनाथ भगवान की टोंक

ऋषभदेव जिन सिद्ध भए, गिरि कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ओं ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्रादि मुनि १० हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।११।

विद्युत वर कूट

शीतलनाथ जिनराज का, कूट विद्युत वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ॥

ओं ह्रीं श्री शीलतनाथ जिनेन्द्रादि मुवि १८ कोड़ी कोड़ी ४२ करोड़ ४२ लाख २ हजार ९०५ मुनिइसकूट से सिद्धभयेतिनकेचरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।१२।

स्वयंप्रभु कूट

अनन्तनाथ जिनराज का, कूट स्वयंभू वर जेह।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९६ कोड़ा कोड़ी ७० करोड़ ७० लाख ७० हजार ७०० मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलाधि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१३।

धवल कूट

सम्भवनाथ जिनराज का, धवल कूट धर जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख बयालिस हजार पाँच सौ मुनि इस टोंक से सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१४।

वासुपूज्य भगवान की टोंक नं० १५

वासुपूज्य जिन सिद्ध भये, चम्पापुर से जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चम्पापुर मंदारगिरी से एक हजार मुनि सिद्ध भये तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१५।

आनंद कूट

अभिनन्दन जिनराज का, आनंदकूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख बयालिस हजार सात सौ मुनि इस कूट से मोक्ष भपे तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१६।

सुदत्तवर कूट

धर्मनाथ जिनराज का, कूट सूदत्त वर जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ओं ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि २९ कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार ७९५ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपमाति स्वाहा ।१७।

अविचल कूट

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा कोड़ी ८४ करोड़ ७२ लाख ८१ हजार ७८१ मुनि इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलाधि अर्घ निर्वपामीत स्वाहा ।१८।

कुन्द प्रभु कूट (शान्तिनाथ कूट)

शान्तिनाथ जिनराज का, कुन्त कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ९ कोड़ा कोड़ी ९ लाख ९ हजार ९९९ मुनि मुनि इस कूट से सिद्ध भए तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।१९।

महावीर भगवान की टोंक नं० २०

महावीर जिन सिद्ध भये, पावापुर से जोय ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर नमूं पद होय ।।

ओं ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर स्थान से २६ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।२०।

प्रभास कूट

सुपार्श्वनाथ जिननाथ का प्रभास कूट है जेह ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ४९ कोड़ा कोड़ी ८४ करोड़ ७२ लाख ७ हजार ७४२ मुनि इस कूट से मोक्ष पधारे तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो, जलाधि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।२१।

सुवीर कूट (संकुल कूट)

विमलनाथ जिनराज का, कूट सुवीर है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ७० कोड़ा कोड़ी ६० लाख ६ हजार ७४२ मुनि इस कूट से शिवपुर पधारे तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन काय से विनयपूर्वक बारम्बार नमस्कार हो जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।२२।

सिद्धवर कूट

अजितनाथ जिनराज का, सिद्धवर कूट है जेह ।
मन वच तन कर पूजहूं, शिखर सम्मेद यजेह ।।

ओं ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि १ अरब ८० करोड़ ५४ लाख मुनि इस कूट से निर्वाण पधारे तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बार नमस्कार हो जलाधि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।२३।

नेमिनाथ भगवान की टोंक नं० २५

नेमिनाथ जिन सिद्ध भये, सिद्ध क्षेत्र गिरिनार ।
मन वच तन कर पूजहूं, भवदधि पार उतार ।।

ओं ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि ७२ करोड़ ७ सौ मुनि गिरिनार पर्वतसे मोक्ष भये, तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन कायसे बारम्बर नमस्कार हो, जलादि अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।२४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वर्ण भद्र कूट
पार्श्वनाथ जिनराज का, स्वर्ण भद्र है कूट।
मन वच तन कर पूजहूं, जाऊं करम से छूट॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ८२ करोड़ ८४ लाख ४५ हजार ७४२ मुनि इस परमपुनीत कूट से मोक्ष पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन वचन कायसे विनय पूर्वक बारम्बार नमस्कार हो, जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।२५।

दुःखहरण विनती

श्रीपति जिनवर करुणायतनं दुखहरन तुम्हारा बाना है।
मत मेरी बार अवार करो, मोहिं देहु विमल कल्याना है।टेक।

त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुमसौं कछु बात न छाना है।
मेरे उर आरत जो बरतैं, निहचैं सब सो तुम जाना है।
अवलोक विथा मत मौन गहो, नहिं मेरा कहीं ठिकाना है।
हो राजिवलोचन सोचविमोचन, मैं तुमसौं हित ठाना है।श्री।१।

सब ग्रंथनि में निरग्रंथनिने, निरधार यही गणधार कही।
जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक नायक ज्ञानमही॥
यह बात हमारे कान परी, तब आन तुमारी सरन गही।
क्यों मेरी बार विलम्ब करो, जिननाथ कहो वह बात सही।श्री।२।

काहू को भोग मनोग करो, काहू को स्वर्गविमाना है।
काहूको नागनरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है।
अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अन्धेर जमाना है।
इनसाफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भरो भगवाना है।श्री।३।

खल कर्म मुझे हैरान किया, तब तुमसों आन पुकारा है।
तुम ही समरत्थ न न्याव करो, तब बन्दे का क्या चारा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खल घालक पालक बालकका नृपनीति यही जग सारा है।
तुम नीति निपुन त्रैलोकपती, तुमहीं लगिदौर हमारा है।श्री।४।
जबसे तुमसे पहचान भई, तबसे तुमही को माना है।
तुमरे ही शासन का स्वामी, हमको शरना सरधाना है।
जिनको तुमरी शरनागत है, तिनसों जमराज डराना है।
यह सुजश तुम्हारे सांचेका, सब गावत वेद पुराना है।श्री।५।
जिनने तुमसे दिलदर्द कहा, तिसका तुमने दुख हाना है।
अघ छोटा मोटा नाशि तुरत, सुख दिया तिन्हें मनमाना है॥
पावकसों शीतल नीर किया, और चीर बढ़ा असमाना है।
भोजन था जिसके पास नहीं, सो किया कुबेर समाना है।श्री।६।
चिंतामन पारस कल्पतरू, सुखदायक ये परधाना है।
तब दासन के सब दास यही, हमरे मन में ठहराना है॥
तुम भक्तनको सुरईन्द्रपदी, फिर चक्रपतीपद पाना है।
क्या बात कहों विस्तार बड़ी, वे पावैं मुक्ति ठिकाना हैं।श्री।७।
गति चार चुरासी लाख विषैं, चिन्मूरत मेरा भटका है।
हो दीनबन्धु करुणानिधान, अबलौं न मिटा वह खटका है।
जब जोग मिला शिवसाधनका तब विघन कर्म ने अटका है।
तुम विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है।श्री।८।
गजग्राह ग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है।
ज्यों सागर गोपदरूप किया, मैना का संकट टारा है।
ज्यों सूलीतें सिंहासन औ, बेडीको काट बिडारा है।
यों मेरा संकट दूर करो, प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है।श्री।९।
ज्यों फाटक टेकत पांय खुला, औ सांप सुमन कर डारा है।
ज्यौं खड्ग कुसुमका माल किया बालक का जहर उतारा है।
ज्यों सेठ विपत्त चकचूरि पूर, गर लक्ष्मीसुख विस्तारा है।
त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु भोफ आस तुम्हारा है।श्री।१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यद्यपि तुमको रागादि नहीं, यह सत्य सर्वथा जाना है।
चिनमूरति आप अनन्तगुनी, नित शुद्ध दशा शिवथाना है।।
तद्दपि भक्तन की भय भीति हरो, सुख देत तिन्हें जु सुहाना है।
यह शक्ति अचिंत तुम्हारी का, क्या पावै पार सयाना है।श्री।१२।

दुख खंडन श्रीसुखमंडन का, तुमरा प्रन परम प्रमाना है।
बरदान दया जस कीरतका, तिहुंलोकधुजा फहराना है।
कमलाधरजी! कमलाकरजी! करिये कमला अमलाना है।
अब मेरी विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना हैं।श्री ११।

हो दीनानाथ अनाथहितू, जन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्मविपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है।।
ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है।
त्यों 'वृन्दावन' यह अर्ज कर प्रभु आज हमारी बारी है।श्री।१३।

दोहा

प्रभु तुम दीनानाथ हो, मैं अनादि दुख फन्द।
सुनि सेवक की वीनती, हरो जगत दुखद्वन्द।।

श्री पावापुरी स्तुति

(श्री पं. भागचन्दजी कृत)

वीरनाथ पद कमल में, मन करि भ्रमर समान।
पावापुर गुनमालिका, गाऊं हित पहिचान।।
जगमोह असुर दुख देत करुणा मन लाये।
तजि पुष्पोत्तर तलसे त्रिशला उर आये।।
सो वीरनाथ शिवधाम, पावापुर ध्याऊं।
शुचि कमल सरोवर नाम, निशदिन गुण गाऊं।।१।।
सिद्धारथ नृप कुलचन्द, कुन्डलपुर प्रगटे।
सुवरणछवि जगदानन्द, लखि मुनि भ्रम विघटे।।
सो वीरनाथ०।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नृप कमलाकारक दाय, नांहि कुमार गही। वय तीस बरस अवगाह संयम प्रीति भई ॥ सो वीरनाथ ।३।

देखते ही चंदनबाल फंद हरे छिन में। रौद्रादिक जीव निहाल, कौन करे किन में ॥ सो वीरनाथ ।४।

इम द्वादश वर्ष बिताया, घाति कलंक हरे। केवल स्वरूप निजपाय, ज्ञानानन्द भरे ॥ सो वीरनाथ ।५।

द्वै तीस बरस उपदेश, शिवसुख सुगम कियो। सुनि श्रेणिक आदि नरेश, निज कल्याण कियो ॥ सो वीरनाथ ।६।

जसु वाणी अजहुं अभंग, निर्मल गंग बहे। तहां न्हवन करत बुध चंग समता परम लहे ॥ सो वीरनाथ ।७।

करि के पुनि जोग निरोध, अटल अचल थाये। सो अजहुं मुनि मन शुद्ध, ध्यावत हरषाये ॥ सो वीरनाथ ।८।

जसु तन लखि परम पवित्र, सुरसंस्कार नमै। धरि परिमल द्रव्य विचित्र, अनल कुमार दमै ॥ सो वीरनाथ ।९।

सो भस्म शीश हरि लाय, बोधि समाधि चहा। जिन लक्षण तत्र बनाय, स्वर्ग निवास लहा ॥ सो वीरनाथ ।१०।

छै सतपन संवत मास, विक्रम पूर्व भया। वदि कार्तिक मावस भास, तीर्थ प्रसिद्ध भया ॥ सो वीरनाथ ।११।

संवत सर शत उगनीस अधिक गुणतीस भला। वदि पौष अष्टमि दिन ईस, भाख्या शशांक कला ॥ सो वीरनाथ ।१२।

पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीसं। शतेन्द्रं सु पूजें भ जैनाय शीसं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनीन्द्रं गणेन्द्र नमैं जोड़ हाथं । नमोदेव देव सदा पार्श्व नाथं ॥१॥ गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुडावे । महा आग ते नाग ते तू बचावे ॥ महावीर ते युद्ध में तू जितावे । महा रोग ते बन्ध ते तू छुड़ावे ॥२॥ दुखी दुःखहर्ता सुखी सुख कर्ता । सदा सेवकों को महानन्द भर्ता ॥ हरे यक्ष राक्षस्स भूतं पिशाचं । विष डाकनी विघ्न के भय अवाचं ॥३॥ दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने । अपुत्रीन को तु भले पुत्र कीने । महा संकटों से निकाले विधाता । सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥ महा चोर को वज्र भय निवारे । महा पौन के पुंज ते तू उबारे ॥ महा क्रोध की अग्नि को मेघ धारा । महा लोभ शैलेश को वज्र भारा ५ महा मोह अन्धेर को ज्ञान भानुं । महा कर्म कान्तार को दौ प्रधानं ॥ किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी । हरो मान तू दैत्य का हो अकामी ॥६॥ तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनुं । तुही दिव्य चिन्तामणी नाग एनं ॥ पशु नर्क के दुःख से तू छुड़ावे । महा स्वर्ग में मुक्ति में तू बसावे ॥७॥ करे लोह को हेम पाषाण नामी । रटे नाम से क्यों न हो मोक्षगामी ॥ करे सेव ताकी करे देव सेवा । सुने बैन सो ही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥ जपे जाप ताको नहीं पाप लागे । धरे ध्यान ताके सबै दोष भागे ॥ बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे । तुम्हारी कृपा तै सरैं काज मेरे ॥९॥ गणधर इन्द्र न कर सके, तुम विनती भगवान । 'द्यानत' प्रीति निहार के, कीजे आप समान ॥१०॥

वैराग्य भावना

दोहा

बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जगमाँहि ।
त्यों चक्री नृप सुख करै, धर्म विसारै नाहि ॥

नरेन्द्र छन्द ।

इहविध राज्य करै नरनायक, भोगै, पुण्य विशाली ।
सुख सागर में रमत निरंतर, जात न जान्यो काले ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दिवस शुभ कर्म संजोगे क्षेमंकर मुनि वन्दे ।
देख सिरीगुरु के पदपंकज लोचन अलि आनंदे ॥२॥
तीन प्रदक्षिणा दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी ।
साधु समीप विनय कर बैठ्यो चरनन में दिठि दीनी ॥
गुरु उपदेशो धर्मशिरोमणि सुन राजा वैरागे ।
राज रमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे ॥३॥
मुनि सूरज कथनी किरणावलि, लगत भरम बुधिभागी ।
भवतन भोगस्वरूप विचारयो, परम धरम अनुरागी ॥
इह संसार महावन भीतर भ्रमते छोर न आवै ।
जन्म मरण जरा यों दाहे जीव महादुख पावै ॥४॥
कबहुं जाय नरक थिति भुंजे छेदन भेदन भारी ।
कबहुं पशु पर्याजाय धरै तह बंध बधन भयकारी ॥
सुरगति में परसंपति देखे राग उदय दुख होई ।
मानुषयोनि अनेक विपतिमय, सर्व सुखी नहिं कोई ॥५॥
कोई इष्ट वियोगी बिलखै, कोई अनिष्ट संयोगी ।
कोई दीन दरिद्री दीखे, कोई तनके रोगी ॥
किसही घर कलिहारी नारी कै बैरी सम भाई ।
किसहीके दुख बाहर दीखे, किस ही उर दुचिताई ॥६॥
कोई पुत्र बिनानित झूरे, होई मरै तब रोवै ।
खोटी संततिसों दुख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै ॥
पुन्य उदय जिनके तिनके भी नाहिं सुख साता ।
यह जगवास यथारथ देखे, सब दीखे दुख दाता ॥७॥
जो संसार विषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागैं ।
काहे को शिवसाधन करते, संजमसों अनुरागैं ॥
देह अपावन अथिर घिनावन, यामें सार न कोई ।
सागर के जलसों शुचि कीजे, तो भी शुद्ध न होई ॥८॥
सात कुधातु भरी मलमूरत चाम लपेटी सो है ।
अन्तर देखते या सम जग में अवर अपावन को है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवमलद्वार स्रवै निशिवासर, नाम लिये घिन आवे।
व्याधि उपाधि अनेक जहाँ तहं, कौन सुधी सुख पावै ॥९॥
पोषत तो दुख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै।
दुर्जन देह स्वभाव बराबर, मूरत प्रीति बढ़ावै ॥
राचनजोग स्वरूप न याको विरचनजोग सही है।
यह तन पाय महातप कीजै यामें सार यही है ॥१०॥
भोग बुरे भवरोग बढ़ावे, बैरी हैं जग जीके।
बेरस होंय विपाक समय अति सेवत लागें नीके ॥
वज्र अग्नि विषसे विषधर से, ये अधिके दुखदाई।
धर्मरतनके चोर चपल अति, दुर्गतिपंथ सहाई ॥११॥
मोहउदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जानें।
ज्यों ज्यों भोग संजोग मनोहर, मनवांछित जन पावै।
तृष्णा नागिन त्यों त्यों डंकै, लहर जहर की आवै ॥१२॥
मैं चक्रीपद पाय निरंतर भोगे भोगे घनेरे।
तौ भी तनक भये नहिं पूरन, भोगे मनोरथ मेरे ॥
राजसमाज महा अघकारन वैर बढ़ावन हारा।
वेश्यासम लक्ष्मी अति चंचल, याका कौन पत्यारा ॥१३॥
मोह महारिपु बैर विचारयो जगजिय संकट डारे।
घर काराग्रह बनिता बेड़ी परिजन जन रखवारे ॥
सम्यकदर्शन ज्ञान चरन तप, ये जियके हितकारी।
येही सार असार और सब यह चक्री चितधारी ॥१४॥
छोड़े चौदह रत्न नवों निधि, अरु छोड़ संग साथीं।
कोडि अठारह घोड़े, छोड़े चौरासी लाख हाथी ॥
इत्यादिक संपत्ति बहुतेरी, जीरण तृणसम त्यागी।
नीति विचार नियोगी सुतकों, राज दियो बड़भागी ॥१५॥
होय निशल्य अनेक नृपति संग, भूषण बसन उतारे।
श्री गुरुचरनधरी जिनमुद्रा, पंच महाव्रत धारे ॥
धन्य यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम, धन्य यह धीरजधारी।
ऐसी संपति छोड़ बसे बन, तिन पद धोक हमारी ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

परिग्रहपोट उतार राज लीनो चारित्र पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निरग्रन्थ ।।

बारह भावना

दोहा

बन्दूं श्री अर्हंत पद, वीतराग विज्ञान ।।
वरणूं बारह भावना जग जीवन हित जान ।।१।।

विश्नुपद छन्द

कहां गये चक्री जिन जीता, भरतखण्ड सारा। कहाँ गये वह रामरु लछमन, जिन रावन मारा। कहां कृष्ण रूकमिनि सतभामा, अरु संपति सगरी। यहां गये वह रंगमहल अरु, सुवरन की नगरी ।।२।। नहीं रहे वह लोभी कौरव, जूझ मरे रनमें। गये राज तज पाँडव बनको, अग्नि लगी तन में। मोह नींद से उठरे चेतन, तुझे जगावन को। हो दयाल उपदेश करें गुरु, बारह भावन को ।।३।।

१ अथिर भावना

सूरजचांद छिपें निकले ऋतु, फिर-फिर कर आवै। प्यारी आयू ऐसी बीते, पता नहीं पावै ।। पर्वत पतित नदी सरिता जल, बह कर नहीं हटता। स्वांस चलत यों घटे काठ ज्यों, आरेसों कटता ।।४।। ओस बूंद ज्यों गले धूपमें, वा अंजुलिपानी। छिन छिन यौवन छीन होत है, क्या समझे प्रानी ।। इंद्रजाल आकाश नगर सम, जग सम्पति सारी। अथिर रूप संसार विचारो, सब नर अरु नारी ।।५।।

२ अशरण भावना

काल सिंह ने मृग चेतन को, घेरा भव बनमें। नहीं बचावन हारा कोई, यों समझो मनमे ।। मन्त्र यंत्र से ना धन सम्पति, राज पाट छूटे। वश नहीं चलता काल लुटेरा काय नगर लूटे ।।६।। चक्र रतन हलधर सा भाई, काम नहीं आया। एक तीर के लगत कृष्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की, विनश गई काया ॥ देव धर्म गुरु शरण जगत में, और नहीं कोई । भ्रम से फिरे भटकता चेतन, यूंही उमर खोई ॥७॥

३ संसार भावना ।

जन्म मरण अरु जरा रोगसे, सदा दुखी रहता । द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव भव, परिवर्तन सहता ॥ छेदन भेदन नरक पशू गति बध बंधन सहना । राग उदय से दुख सुरगति में, कहां सुखी रहना ॥८॥ भोग पुन्य फल हो इक इंद्री क्या इसमें लाली । कुतवाली दिन चार वही फिर, खुरपा करु जाली ॥ मानुष जन्म अनेक विपतिमय, कहीं न सुख देखा । पंचमगति सुख मिले शुभा-शुभ का मेटो लेखा ॥९॥

४ एकत्व भावना ।

जन्म मरे अकेला चेतन, सुख दुख का भोगी । और किसी का क्या इक दिन यह देह जुदी होगी ॥ कमला चलत न पैंड जाय मरघट तक परिवारा । अपने सुखको रोवे पिता पुत्र दारा ॥१०॥ ज्यों मेले में पन्थी जन मिलि, नेह फिरै धरते । ज्यों तरवर पै रैन बसेरा, पंछी आ करते ॥ कोस कोई दो कोस उड़ फिर थक थक हारे । जाय अकेला हस संग में, कोई न पर मारे ॥११॥

५ अन्यत्व भावना ।

मोह रूप मृगतृष्णा जग में, मिथ्या जल चमकै । मृग चेतन नित भ्रम में उठ उठ; दौड़े थक थक कैं ॥ जल नहिं पावै प्राण गमावै; भटक-भटक मरता । वस्तु पराई माने अपनी; भेद नहीं करता ॥१२॥ तू चेतन अरु देह अचेतन; यह जड तू ज्ञानी । मिले अनादि यतनतैं बिछुड़े; ज्यों पय अरु पानी ॥ रूप तुम्हारा सबसों न्यारा; भेद ज्ञान करना । जोलों पौरुष थकै न तौलों; उद्यम सो चरना ॥१३॥

६ अशुचि भावना ।

तू नित पोखे यह सूखे; ज्यों धोवै त्यों मैली । निश दिन करे उपाय देह का; रोग दशा फैली ॥ मात-पिता रज बीरज मिलकर; बनी देह तेरी । माँस हाड नश लहू राधकी; प्रगट व्याधि घेरी ॥१४॥ काना पौंढ़ा पडा हाथ यह; चूसे तौ रोवे । फल अनन्त जु धर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यानकी; भूमि विषें बोवे। केसर चन्दन पुष्प सुगन्धित, वस्तु देख सारी। देह सपरसत हुये अपावन, निशदिन मलजारी ॥१५॥

७ आस्रव भावना।

ज्यों सरजल आवन मोरी त्यों; आस्रव कर्मनको। दर्वित जीव प्रदेश गहै जब; पुदगलभरमनको॥ भावित आस्रव भाव शुभाशुभ निशदिन चेतन के। पाप पुण्य के दोनों करता; कारण बन्धन के ॥१६॥ पन मिथ्यात योग पन्द्रह; द्वादश अविरत जानो। पंचरु बीस कषाय मिले सब; सत्तावन मानो॥ मोह भावकी ममता टारै; पर परणित खोते। करै मोखका यतन निरास्रव; ज्ञानी जन होते ॥१७॥

८ संवर भावना।

ज्यों मोरीमें डाट लगावै; तब जल रुक जाता। त्यों आस्रव को रोके संवर; क्यों नहिं मन लाता॥ पंच महाव्रत समिति गुप्तिकर; बचत काय मनको। दशविध धर्म परिषह बाइस; बारह भावन को ॥१८॥ यह सब भाव सतावन मिलकर; आस्रवको खोते। सुपन दशासे जागो चेतन; कहां पड़े सोते॥ भाव शुभाशुभ रहित शुद्ध भावनसंवर पावे। डाट लगत यह नाव पड़ी मझधार पार जावै ॥१९॥

९ निर्जरा भावना।

ज्यों सरवर जल रुका सूखता; तपन पड़े भारी। संवर रोके कर्म निर्जरा है सोखन हारा॥ उदयभोग सविपाक समय पक जाय आम डाली। दूजी है अविपाक पकावै, पाल विषै माली ॥२०॥ पहली सबके होय नहीं कुछ; सर काम तेरा। दूजी करै जु उद्यम करके मिटै जगत फेरा॥ संवर सहित करो तप प्रानी; मिलै मुकति रानी। इस दुल्हन की यही सहेली; जानै सब ज्ञानी ॥२१॥

१० लोक भावना।

लोक अलोक अकाश मांहि थिर; निराधार जानो। पुरुष रूप कर कटी भय षट द्रव्यनसों मानों॥ इसका कोई न करता हरता; अमिट अनादि हं। जीवरु पुद्गल नाचे यामै; कर्म उपाधि है ।२२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप पुन्य सों जीव जगत में; नित सुख-दुख भरता। अपनी करनी आप भरे सिर; औरन के धरता॥ मोह कर्म को नाश मेट; सब जग की आसा। निज पदमें थिर होय लोकके; शीश करो बासा॥२३॥

११ बोधिदुर्लभ भावना।

दुर्लभ है निगोद से थावर; अरु त्रस गति पानी॥ नरकाया को सुरपति तरसै; सो दुर्लभ प्रानी॥ उत्तम देश सुसंगति दुर्लभ; श्रावक कुल पाना। दुर्लभ सम्यक दुर्लभ संयम, पंचम गुण ठाना।२४। दुर्लभ रत्नत्रय आराधन; दीक्षा का धरना। दुर्लभ मुनिवर को व्रत पालन; शुद्ध भाव करना॥ दुर्लभ से दुर्लभ है चेतन, बोध ज्ञान पावै। पाकर केवल ज्ञान नहीं फिर; इस भाव में आवे।२५।

१२ धर्म भावना।

षट दरशन अरु बौद्धरु नास्तिक; ने जग को लूटा। मूसा ईसा और मुहम्मद; का मजहब झूंठा॥ हो सुछंद सब पाप करैं सिर; करता लावें। कोई छिनक कोई करतासे; जग में भटकावें॥२६॥ वीत राग सर्वज्ञ दोष विन; श्रीजिन की वानी। सप्त तत्व का वर्णन जामें; सब को सुखदानी॥ इनका चिन्तवन बार बार करू; श्रद्धा उर धरना। 'मंगत' इसी यतन से इक दिन; भवसागर तरना॥२७॥

समाधिमरण

गौतम स्वामी बन्दों नामी मरण समाधि भला है।
मैं कब पाऊं निसदिन ध्याऊं गाऊं वचन कला है।
देव धरम गुरु प्रीति महादृढ़ सात व्यसन नहिं जाने।
त्यागि बाइस अभक्ष संयमी बाहर व्रत नित ठाने॥१॥
चक्की उखरी चूलि बुहारी पानी त्रस न विराधे।
बनिज करे पर द्रव्य हरे नहि छहो करम इमि साधै॥
पूजा शास्त्र गुरुनकी सेवा संयम तप चहुं दानी।
पर उपकारी अल्प अहारी सामायक विधि ज्ञानी॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाप जपे तिहूं योग धरे दृग तनकी ममता टारैं ।
अन्त समय वैराग्य सम्हारे ध्यान समाधि बिचारैं ।।
आग लगे अरु नाव डूबे जब धर्म विघन जब आवे ।
चार प्रकार अहार त्यागि के मन्त्र सुमनमें ध्यावे ।।३।।
रोग असाध्य जहांबहू देखे कारण और निहारे ।
बात बड़ी है जो बनि आवे भार भवन को डारे ।।
जो न बने तो घरमें रह करि सबसों होय निराला ।
मात पिता सुत त्रियको सौंपे निज परिग्रह इहि काला ।।४।।
केछ चैत्यालय कछु श्रावक जन कछु दुखिया धन देई ।
क्षमा क्षमा सब हीसों कहिके मनकी शल्य हरेई ।।
शत्रुन सों मिलि निज कर जोरे मैं बहु करी है बुराई ।
तुमसे प्रीतम को दुख दीने ते सब बकसो भाई ।।५।।
धन धरती जो मुखसो मांगे सो सब दे संतोष ।
छहों कायके प्राणी ऊपर करुणा भाव विशेष ।।
ऊंच नीच घर बैठ जगह इक कछु भोजन कछु पैले ।
दूधा धारी क्रम क्रम तजिके छाछ अहार पहेले ।।६।।
छाछ त्यागिके पानी राखे पानी तजि संथारा ।
भूमिमांहि फिर आसन माड़े साधर्मी ढिग प्यारा ।।
जब तुम जानो यह न जपे है तब जिनवाणी पढ़िये ।
यों कहि मौन लियो संन्यासी पंच परमपद गहिये ।।७।।
चौ आराधन मनमें ध्यावे बारह भावन भावे ।
दशलक्षण मन धर्म विचारे रत्नत्रय मन लावे ।।
पैंतिस सोलह षट पन चौ दुई इक बरन विचारे ।
काया तेरी दुख की ढेरी ज्ञानमई तू सारे ।।८।।
अजर अमर निज गुण सो पूरे परमानंदसुभावैं ।
आनन्दकन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावैं ।।
क्षुधा तृषादिक होई परीषह सहै भाव सम राखैं ।
अतीचार पांचौ सब त्यागे ज्ञान सुधारस चाखैं ।।९।।
हाड मांस सब सूखि जाय जब धर्म लीन तन त्यागे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्भुत पुण्य उपाय सुरग में सेज उठे ज्यों जागे।
तहतैं आवै शिवपद पावे विलसे सुख अनन्तो।
'द्यानत' यह गति होय हमारी जैनधरम जयवन्तो ॥१०

पद-संग्रह

पद नं १

चाहे तारो या न तारो चरणों में आ पड़ा हूं ॥टेक॥
तेरे दरशको आया मनमें तुही समाया,
अति दीन हो खड़ा हूं ॥१॥
सब जगतमें फिरके आया, शरना कहीं न पाया,
तेरी शरन गिरा हूं ॥२॥
निज दास जान लीजे, शिवमग बताय दीजे
वन वन भटक फिरा हूं ॥३॥

❋ भजन ❋

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटोमेटो जी संकट हमारा ॥टेक॥
निश दिन तुझको जपूं, पर से नेहा तजूं।
जीवन सारा, तेरे चरणों में बीते हमारा ॥१॥
अश्वसेन के राजदुलारे, बीमादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा संयम धारा ॥२॥
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये
आशा पूरो सदा, दुख नहीं पावे-कदा सेवक थारा ॥३॥
जग के दुख की परवा नहीं है, स्वर्ग सुख को भी चाह नहीं है।
मेटो जामन-मरण होवे ऐसा यतन पारस प्यारा ॥४॥
लाखों बार मैं शीश नवाऊं, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊं।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शनबिनये जिया, लागे खारा ॥५॥

जिनवाणी स्तुति

अकेला ही हूं मैं, करम सब आये सिमटिकें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिया है मैं तेरा, शरण अब माता सटकिके ।।
भ्रमावत है मोकों, करम दुख देता जनम का।
करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ।।१।।
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूं जगतमें ।
सहा जाता नहीं. अकल घबरानी भ्रमन में ।।
करों क्या माँ मोरी; चलत वश नाहीं मिटनका ।
करों भक्ति तेरी; हरो दुख माता भ्रमन का ।।२।।
सुनो माता मोरी, अरज करताहूं दरदमें ।
दुखी जानों मोकों डरप कर आयो शरनमें ।।
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिट जावै मरनका ।
करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ।।३।।
पिलावै जो मोकों सुबुधिकर प्याला अमृतका ।
मिटावे जो मेरा, सरब दुख सारा फिरनका ।।
परों पावां तेरे हरो दुख सारा फिकरका ।
करों भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका ।।४।।

सवैया

मिथ्यातम नाशिवेको ज्ञानके प्रकाशवेको,
आपा-पर भासवेको भानुसी बखानी है ।
छहों द्रव्य जानवेको बंधविधि भानवे को ।
स्वपर पिछानवेको परम प्रमानी है ।।५।।
अनुभौ बतायवेको जीवके जतायवेको,
काहू न सतायवेको भव्य उर आनी है ।
जहां तहां तारवेको पारके उतारवेको,
सुख बिसतारवेको येही जिन-वानी है ।।६।।

दोहा

यह जिनवानीकी थुती, अल्पबुद्धि परमान ।
पन्नालाल विनती करें, देमाता मोहि ज्ञान ।।७।।
हे जिनवानी भारती, तोहि जपौं दिन रैन ।
जो तेरा शरना गहे, सो पवे सुख चैन ।।८।।
जा वानीके ज्ञानतें, सूझै लोकालोक ।
सो वानी मस्तक चढ़ो, सदादेत हों धोक ।।९।।

5206
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi